दैनिक
बढ़ता राजस्थान
संस्करण : जयपुर, टोंक, अलवर एवं कोटा
Since : 2004
कदम बढ़ाएं, सच के साथ
वर्ष : 15 | अंक : 47 | जयपुर | शुक्रवार, 20 दिसम्बर, 2024 | पौष, कृष्ण पक्ष पंचमी संवत्-2081 | भारत व राज्य सरकार से विज्ञापनों के लिए स्वीकृत | मूल्य : ₹2 | पृष्ठ : 12
www.badhatarajasthan.in badhatarajasthan@yahoo.com badhatarajasthan.dainik badtarajasthan

संसद-परिसर में धक्का-मुक्की, राहुल पर हत्या की कोशिश का केस

भाजपा सांसद सारंगी घायल हुए थे; राहुल ने कहा- भाजपा सांसदों ने मुझे धमकाया

बढ़ता राजस्थान

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद परिसर में गुरुवार सुबह धक्का-मुक्की के दौरान ओडिशा के बालासोर से सांसद प्रताप सारंगी चोटिल हो गए। सारंगी ने आरोप लगाया कि राहुल ने एक सांसद को धक्का दिया, जो उनके ऊपर गिरा।

सारंगी जब मीडिया के सामने आए, तब उनके सिर से खून निकल रहा था। सारंगी के अलावा फर्रुखाबाद से भाजपा सांसद मुकेश राजपूत को भी चोट आई है। दोनों को आरएमएल हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। हॉस्पिटल के मेडिकल सुपरिन्टेंडेंट ने बताया कि दोनों नेताओं के सिर में चोट लगी है। उन्हें आईसीयू में रखा गया है। प्रताप सारंगी को काफी ब्लीडिंग हो रही थी। उनका घाव भी गहरा था, इसलिए टांके लगाने पड़े। मुकेश राजपूत बेहोश हो गए थे। घटना के बाद भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर और बांसुरी स्वराज ने राहुल के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई है। दूसरी तरफ कांग्रेस सांसद दिग्विजय सिंह, राजीव शुक्ला और प्रमोद तिवारी ने मल्लिकार्जुन खड़गे से धक्का-मुक्की और खराब व्यवहार किए जाने की शिकायत दर्ज कराई है। वहीं, जब राहुल से जब धक्का-मुक्की पर सवाल हुआ तो उन्होंने कहा कि भाजपा सांसदों ने उन्हें धमकाया और धक्का-मुक्की की। संसद के मेन गेट मकर द्वार का घेराव करके उन्हें संसद में एंट्री करने से रोका गया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी कहा कि मेरे और प्रियंका के साथ धक्का-मुक्की की गई। खड़गे ने कहा- धक्का लगने से उनके घुटने में चोट आई है। पूरे घटनाक्रम की जानकारी पीएम नरेंद्र मोदी को दी गई, जिसके बाद उन्होंने दोनों सांसदों से फोन पर बात की और उनका हाल-चाल जाना। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा- राहुल नेता प्रतिपक्ष हैं, उन्हें पहलवानी दिखाने की क्या जरूरत है।

किरेन रिजिजू बोले- कराटे क्या दूसरों को मारने के लिए सीखा

किरेन रिजिजू बोले- राहुल गांधी ने भाजपा के दो सांसदों को जोर से धक्का दिया। उनके खून निकाल दिया। संसद शारीरिक प्रदर्शन की जगह नहीं है। संसद कोई कुश्ती का मंच नहीं है। अगर सब लोग मारपीट करने लग जाएं तो संसद कैसे चलेगा। वो तो नेता प्रतिपक्ष हैं, उन्हें पहलवानी दिखाने की क्या जरूरत है। आपने कराटे दूसरों को मारने के लिए सीखा है क्या। ये कोई राजा की पर्सनल प्रॉपरिटी नहीं है। अगर हमारे सांसद भी हाथ उठाते तो क्या हाल होता। हमारे दोनों सांसद गंभीर रूप से घायल हैं। बाद में देखेंगे कि क्या कार्रवाई करनी है।

भाजपा सांसद निशिकांत बोले- गुंडागर्दी करते हैं राहुल

सांसद निशिकांत बोले- आपको शर्म नहीं आती, गुंडागर्दी करते हो। बूढ़े को गिरा दिया। इस पर राहुल ने तुरंत ही आरोप लगाया कि सारंगी ने उन्हें धक्का दिया था। राहुल के इतना कहते ही वहां मौजूद बीजेपी सांसद जोर-जोर से चिल्लाने लगे कि सारंगी ने राहुल को धक्का नहीं दिया। इसके तुरंत बाद राहुल वहां से निकल गए।

राजनाथ बोले- लोकतंत्र में इस तरह की घटनाओं की जगह नहीं

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी दोनों घायल सांसदों से मिलने पहुंचे। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्वीटर पर लिखा- आज संसद में बहुत दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई। स्वस्थ लोकतंत्र में इस तरह की घटनाओं की कोई जगह नहीं है। इसकी जितनी भर्त्सना की जाये कम है। मैं ईश्वर से दोनों के स्वस्थ होने कामना करता हूं।

राहुल बोले- भाजपा सांसदों ने संसद में जाने से रोका

संसद में गुरुवार सुबह हुई धक्कामुक्की की घटना को लेकर कांग्रेस और भाजपा दोनों ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। कांग्रेस मुख्यालय में राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि हम शांति से प्रदर्शन करने आए थे, लेकिन भाजपा ने मसल पावर दिखाया। ये उनका जरूरी मुद्दों से ध्यान भटकाने का तरीका है।

वहीं, भाजपा मुख्यालय में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके कहा कि अगर खड़गे-राहुल को माफी नहीं मांगनी थी तो, प्रेस कॉन्फ्रेंस क्यों की। उनका अहंकार झलक रहा है। आज जो संसद में हुआ उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। कांग्रेस ने गुंडे-पहलवान संसद में भेजे हैं। दरअसल, भाजपा सांसद प्रताप सारंगी ने सुबह आरोप लगाया था कि राहुल ने उनके साथ धक्का-मुक्की की, जिससे उनके सिर में चोट आई। पार्टी के एक अन्य सांसद मुकेश राजपूत ने भी राहुल पर यही आरोप लगाए थे। हालांकि, राहुल ने इसे लेकर कहा कि भाजपा सांसदों ने उन्हें संसद में जाने से रोका, धमकाया और धक्का-मुक्की की। संसद में गुरुवार सुबह इंडिया ब्लॉक अंबेडकर पर दिए शाह के बयान के खिलाफ प्रदर्शन कर रहा था। इसी दौरान भाजपा और विपक्षी सांसद आमने-सामने आ गए। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस घटना के बाद ही धक्का-मुक्की शुरू हुई।

शिवराज बोले- कांग्रेस ने लोकतंत्र को कुचला

शिवराज सिंह ने कहा कि, संसद के बाहर जो हुआ वह अशालीन, अशोभनीय और गुंडागर्दी से भरा व्यवहार था, जिसकी सभ्य समाज कल्पना नहीं कर सकता। विरोध प्रकट करने का अधिकार है। कांग्रेस भी कई दिनों से ऐसा कर रही थी। मकरद्वार पर उनके मेंबर्स खड़े होते थे, हम दरवाजा बदल लेते थे या चुपचाप चले जाते थे। आज जब भाजपा मेंबर्स वहां विरोध कर रहे थे, तब राहुल आए। सुरक्षाकर्मियों ने कहा कि आप स्पेस का इस्तेमाल अंदर जाने के लिए करें। जानबूझकर, सोचसमझकर राहुल हमारे सांसदों के बीच पहुंच गए। उन्होंने ऐसा व्यवहार किया। कोई धक्का-मुक्की, गुंडागर्दी की कल्पना कर सकता है। हमारे बुजुर्ग-गरीब सांसद सारंगीजी गिर गए। इसके कारण उनके माथे पर गंभीर चोट लगी। राजपूत होश में नहीं थे। उनकी एमआरआई की जा रही थी। क्या देश में अब ऐसा ही होगा। शिवराज ने कहा कि हमारी आदिवासी सांसद कोन्याक ने जो कहा, उसे सुनकर दुख से मन भर जाता है। सभापति जी कह रहे कि सांसद उनके पास रोते हुए आए। क्या महिला आदीवासी सासंद के साथ ऐसा व्यवहार किया जाएगा। मां बहन और बेटी का सम्मान भारत की परंपरा रही है। मैं तो कार्यक्रमों में जाता हूं तो बेटियों के पैर धोता हूं। लेकिन जब हम लोकसभा में पहुंचे तो कांग्रेस के सांसदों के मर्यादाएं तोड़ दीं। अध्यक्ष की आसंदी के ऊपर चढ़ गए। आसंदी के मर्यादा को पैरों तले रौंदा गया।

जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में एनकाउंटर, 5 आतंकी ढेर

इनमें हिजबुल मुजाहिदीन का कमांडर भी; गोलीबारी में 2 जवान घायल

बढ़ता राजस्थान

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले के कद्देर इलाके में सेना और पुलिस ने जॉइंट ऑपरेशन में 5 आतंकियों को ढेर कर दिया। इनमें हिजबुल मुजाहिदीन का कमांडर फारूक अहमद भट्ट भी शामिल है। हालांकि, आतंकियों के शव मिलने बाकी हैं। मुठभेड़ में दो जवान भी घायल हुए हैं।

गुरुवार सुबह सेना और पुलिस को इलाके में आतंकियों के छिपे होने की जानकारी मिली थी। इसके बाद जॉइंट सर्च ऑपरेशन चलाया गया। तलाशी के दौरान आतंकियों ने गोलीबारी शुरू कर दी। सेना ने भी जवाबी कार्रवाई की।

उधर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह आज जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर दिल्ली में मीटिंग कर सकते हैं। सितंबर-अक्टूबर में हुए विधानसभा चुनावों के बाद यह पहली बैठक होगी। इसमें उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, सेना, अर्धसैनिक बलों, जम्मू-कश्मीर प्रशासन, खुफिया एजेंसियों और गृह मंत्रालय के सीनियर अफसर शामिल होंगे। इससे पहले 16 जून को भी शाह ने हाई लेवल मीटिंग की थी। इसमें उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया था कि आतंकवाद को कुचलें और आतंकियों की मदद करने वालों पर भी सख्ती बरतें।

भारत-पाकिस्तान की टीमें एक-दूसरे के देश में नहीं खेलेंगी

आईसीसी मीटिंग में फैसला; चैंपियंस ट्रॉफी में भारत के सभी मैच न्यूट्रल वेन्यू पर होंगे

बढ़ता राजस्थान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान की टीमें एक-दूसरे के देश में जाकर क्रिकेट नहीं खेलेंगी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारत के सभी मैच न्यूट्रल वेन्यू पर खेले जाएंगे। पाकिस्तानी टीम भी 2027 तक किसी भी टूर्नामेंट के लिए भारत नहीं आएगी। उसके मैच भी न्यूट्रल वेन्यू पर होंगे। आईसीसी की इस फैसले की जानकारी गुरुवार को सामने आई। मीटिंग में यह फैसला पहले ले लिया गया था। भारत में 2025 विमेंस वनडे वर्ल्ड कप, 2026 में टी-20 वर्ल्ड कप भारत और श्रीलंका में होना है। इससे पहले जब आईसीसी ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को हाइब्रिड मॉडल में कराने की बात पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को बताई थी, तब पीसीबी ने आईसीसी के सामने भारत में टीम न भेजने की मांग रखी थी, जिसे अब आईसीसी ने मान लिया है।

2028 विमेंस वर्ल्ड कप पाकिस्तान में आईसीसी बोर्ड ने कन्फर्म किया कि विमेंस वर्ल्ड कप 2028 पाकिस्तान में खेला जाएगा। इस टूर्नामेंट में भी भारतीय और पाकिस्तान की महिला टीम के मैच न्यूट्रल वेन्यू पर खेले जाएंगे। सभी 15 मेंबर्स हाइब्रिड मॉडल के लिए माने आईसीसी के नए चेयरमैन जय शाह की मौजूदगी में 5 दिसंबर को सभी बोर्ड मेंबर्स की मीटिंग हुई थी। शाह इसी महीने दुबई स्थित हेडक्वार्टर भी पहुंचे थे। मीटिंग में सभी 15 बोर्ड मेंबर्स हाइब्रिड मॉडल के लिए मान गए। पाकिस्तान ने भी मीटिंग में फैसले का विरोध नहीं किया।

मुंबई बोट हादसे में राजस्थान का कमांडो शहीद

भारत की सबसे खतरनाक यूनिट का हिस्सा थे; धोनी को दी थी गन चलाने की ट्रेनिंग

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। मुंबई (महाराष्ट्र) बोट हादसे में नेवी के 4 जवानों सहित 9 सिविलियंस की जान चली गई है। इसमें जयपुर (राजस्थान) ग्रामीण के रहने वाले मार्कोस कमांडो (नेवी) महेंद्र सिंह (34) भी शामिल हैं। शहीद कमांडो की पार्थिव देह देर रात तक पहुंचेगी। यहां से उनके पैतृक गांव रेनवाल के जूनसिया ले जाया जाएगा। उनका अंतिम संस्कार शुक्रवार को होगा। मार्कोस भारत के सबसे खतरनाक कमांडो माने जाते हैं। कल हुए हादसे में गई जान-रेनवाल (जयपुर) तहसीलदार कोमल यादव ने बताया- महेंद्र सिंह पुत्र विजय सिंह रेनवाल के जूनसिया गांव के रहने वाले थे। वह दो महीने बाद ही नेवी से रिटायर होने वाले थे। वह नेवी में मार्कोस पेटी ऑफिसर थे। मुंबई स्थित गेटवे ऑफ इंडिया से एलिफेंटा जाते समय 18 दिसंबर की दोपहर करीब 3:55 बजे नीलकमल बोट से नेवी का जहाज टकरा गया था।

डॉ. मनसुख मांडविया ने कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) की 195वीं बैठक की अध्यक्षता की

बढ़ता राजस्थान

नई दिल्ली। केंद्रीय श्रम एवं रोजगार तथा युवा मामले एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने गुरुवार को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में कर्मचारी राज्य बीमा निगम की 195वीं बैठक की अध्यक्षता की। इस अवसर पर केंद्रीय श्रम एवं रोजगार तथा सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्यम राज्य मंत्री सुशोभा करंदलाजे भी उपस्थित रहीं। वर्ष 2023-24 के लिए निगम के वार्षिक लेखों के साथ-साथ नियंत्रक महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट और वर्ष 2023-24 के लिए ईएसआई निगम की वार्षिक रिपोर्ट और इसके विश्लेषण को निगम द्वारा अनुमोदित किया गया।

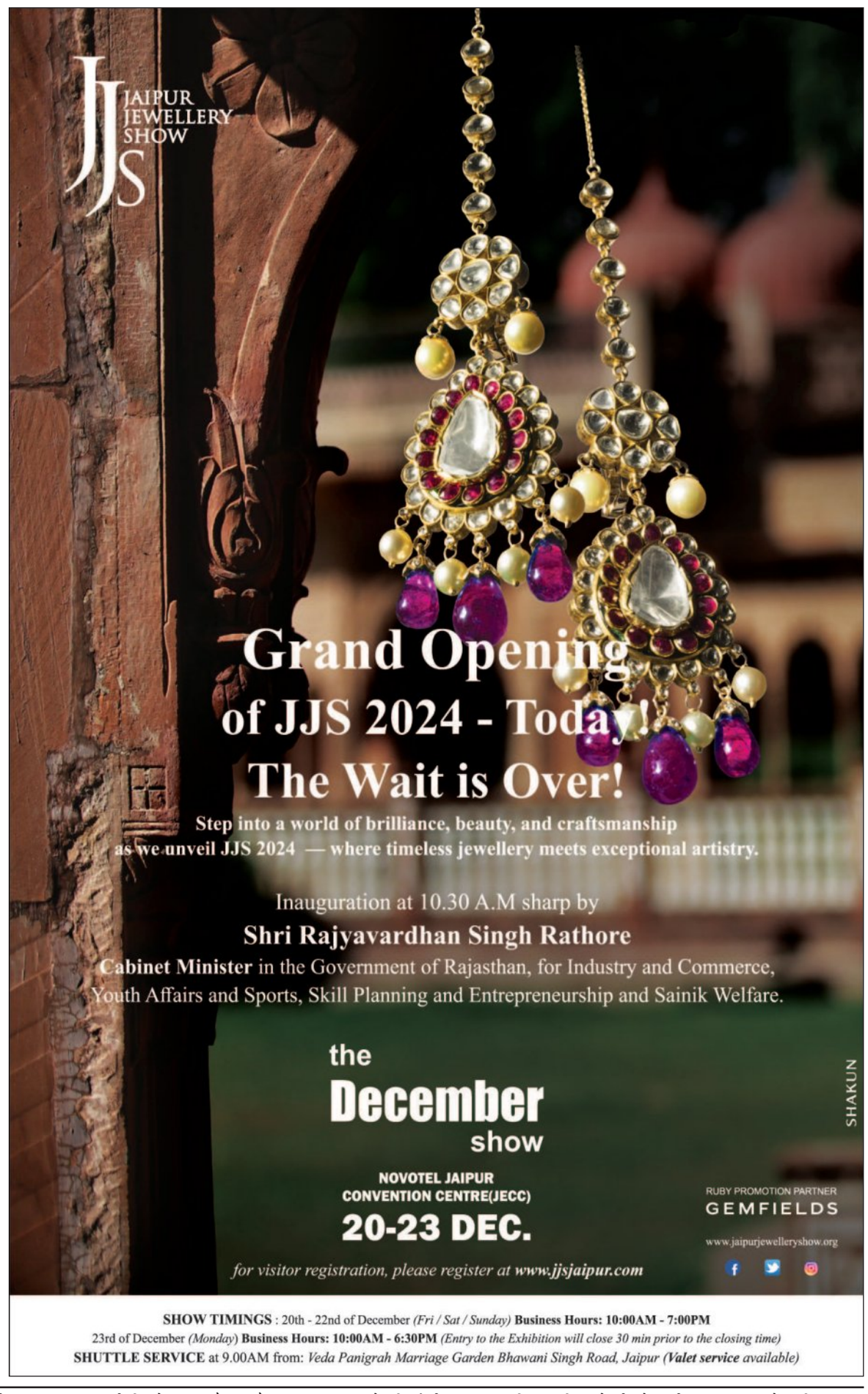

सम्पादकीय कार्यालय:-डी-38,चौमू हाउस,सी-स्कीम,जयपुर(राज.) 302001, बून्दी, झालावाड़, बांरा,बहरोड़,,सुजानगढ़, रावतभाटा,अजमेर, भीलवाड़ा, सवाईमाधोपुर, सीकर, झुन्झुनू,खाटूश्याम जी, निम्बाहेड़ा, चूरू, धौलपुर, जौधपुर, उदयपुर, चाकसू,टोंक निवाई, पीपलू, मालपुरा, उनियारा, अलिगढ़, देवली, कोटपुतली, शाहपुरा, भरतपुर में प्रसारित

प्लास्टिक, सिंथेटिक पदार्थ, लोहा या कांच पाउडर एवं विषैले पदार्थ से बने मांझे का निर्माण, विपणन एवं उपयोग पर रोक

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। जयपुर कमिश्नरेट क्षेत्र में होने वाली पतंगबाजी के दौरान शहर में चाइनीज मांझा, प्लास्टिक से बने पक्के धागे, सिंथेटिक पदार्थ, लोहा या कांच पाउडर एवं विषैले पदार्थ से बने मांझे का निर्माण, विपणन एवं उपयोग पर पूर्ण रूप से रोक रहेगी। अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर (कानून व्यवस्था) डॉ. रामेश्वर सिंह ने बताया कि चाईनीज या धातु मिश्रित मांझे के उपयोग से आमजन एवं पक्षियों को होने वाले नुकसान और उसके बिजली के तारों से छू जाने पर करंट आकर होने वाली जनहानि को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि आम नागरिकों एवं पशु पक्षियों के जानमाल की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए भारतीय नागरिक न्याय संहिता 2023 की धारा 163 के तहत पुलिस आयुक्तालय, जयपुर महानगर की सीमा में चाइनीज मांझा, प्लास्टिक, सिंथेटिक पदार्थ, लोहा या कांच पाउडर एवं विषैले पदार्थ से बने मांझे का निर्माण, विपणन एवं उपयोग पर रोक रहेगी एवं प्रात: 6 से 8 बजे तक एवं सायं 5 से 7 बजे तक की अवधि में पूर्ण रूप से सभी प्रकार की पतंगबाजी प्रतिबंधित रहेगी। इस आदेश का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति अथवा व्यक्तियों पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 के तहत अभियोग चलाया जायेगा। यह आदेश 18 फरवरी 2025 तक या उससे पूर्व निरस्त किये जाने पर उस दिनांक तक प्रभावशील रहेगा।

दशहरा मैदान में पेड़ से लटका मिला युवक का शव, जमीन पर लिखा यह मेरे पापों की सजा

मॉर्निंग वॉक पर आए लोगों ने देखा शव

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। आदर्श नगर थाना इलाके में दशहरा मैदान में गुरुवार सुबह एक युवक का शव पेड़ से लटका मिलने से सनसनी फैल गई। सूचना पर मौके पर पहुंच कर पुलिस ने शव को उतार अस्पताल में रखवाया। मरने से पहले युवक ने घटना स्थल पर ही जमीन पर लिखा कि यह सब मेरे पापों की सजा है। थानाधिकारी धर्म सिंह ने बताया कि दशहरा मैदान में सुबह करीब 8 बजे एक युवक पेड़ से फंदे पर लटका मिला। मॉर्निंग वॉक पर निकले लोगों ने पेड़ से लटकी लाश देखी। लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने एफएसएल टीम की मदद से सबूत जुटाए। अभी तक मृतक के बारे में यह नहीं पता चला है कि ये कौन है और कहां का रहने वाला है। शव से कुछ दूरी पर जमीन पर लिखा मिला- यह मेरे पापों का प्रतिफल है। एसएचओ ने बताया कि युवक ने ऐसा क्यों लिखा था और इसकी वजह क्या थी, इसके बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। फिलहाल पुलिस युवक के बारे में जानकारी जुटाने की कोशिश कर रही है। प्रारंभिक जानकारी में सामने आया है कि वह भरतपुर जिले का रहने वाला था। मृतक की उम्र करीब 30 साल थी। उसने शर्ट, पेंट और जैकेट पहन रखी थी। माना जा रहा है कि देर रात फंदा लगाकर उसने सुसाइड किया है। तलाशी के दौरान उसके पास से न तो कोई मोबाइल मिला और न डॉक्युमेंट मिला, जिससे उसकी पहचान हो सके।

निर्माणाधीन मकान की तीसरी मंजिल से गिरने से महिला की मौत

मकान मालिक और ठेकेदार के खिलाफ लापरवाही का मामला दर्ज

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र में निर्माणाधीन मकान की तीसरी मंजिल से गिरने से एक महिला की मौत हो गई। महिला की मौत के मामले में उसके बेटे ने ठेकेदार और मकान मालिक पर लापरवाही का मामला दर्ज करवाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार बुद्धसिंह पुरा निवासी दीपक महावर ने मामला दर्ज करवाया कि उसकी मां 44 वर्षीय मूलीदेवी सीतापुरा में एक ठेकेदार के मार्फत काम करने जाती थी। 17 दिसम्बर को एक निर्माणाधीन मकान की तीसरी मंजिल पर काम करने के दौरान संतुलन बिगड़ा और उसकी मां वहां से नीचे आ गिरी। इससे वह गंभीर रुप से घायल हो गई। घायल अवस्था में उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां पर उनकी उपचार के दौरान मौत हो गई। मामले की जांच एएसआई कल्याण प्रसाद कर रहे है।

जयपुर ज्वैलरी शो (जेजेएस) : रत्न एवं आभूषण के महाकुंभ का आज से होगा भव्य आगाज

कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ 20 दिसंबर को करेंगे जयपुर ज्वैलरी शो का उद्घाटन

1200 से ज्यादा बूथ्स, 1000 टॉप ज्वैलरी रिटेलर्स हो रहे शामिल

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। देश के नंबर वन बी2बी एवं बी2सी शो - रत्न एवं आभूषण के महाकुंभ 'जयपुर ज्वलैरी शो' (जेजेएस) का 20 दिसंबर, शुक्रवार को सुबह 11 बजे जयपुर के सीतापुरा स्थित जयपुर एग्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर (जेईसीसी) में भव्य आगाज होगा। शो का उद्घाटन उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री, कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ करेंगे। इस वर्ष जेजेएस की थीम 'रूबीज... रेयर, रॉयल और रेवर्ड' है। पिछले दो वर्षों में एमरल्ड पर फोकस करने के बाद, इस वर्ष शो में रूबी आभूषणों की विविधता, उनकी गुणवत्ता और डिज़ाइनों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इस विशेष रत्न को प्रमोट करने के लिए जेजेएस रूबी प्रमोशन ग्रुप भी बनाया गया है, जिसमें 15 सदस्य शामिल हैं और जेमफील्ड्स इसका प्राइन पार्टनर है। यह जानकारी जेजेएस चेयरमैन विमल चंद सुराणा ने दी। उन्होंने आगे बताया कि इस वर्ष शो में 1200 से अधिक बूथ्स होंगे। जो अब तक की सबसे बड़ी संख्या है और पिछले वर्ष की तुलना में 10त्न की वृद्धि दर्शाता है। इनमें से 329 बूथ्स जेमस्टोन्स की होंगी, 723 बूथ्स पर ज्वैलरी प्रदर्शित की जाएगी जबकि 13 पर कॉस्ट्यूम एवं सिल्वर आर्टिकल्स प्रदर्शित होंगे। इसके अतिरिक्त, 58 बूथ्स अलाईड मशीनरी के होंगे। वहीं ज्वैलरी सैक्शन में लगभग 66 प्रतिशत डिजाइनर बूथ्स हैं। शो में ज्वैलर्स और जेमस्टोन्स डीलरों, ज्वैलरी संस्थानों, प्रकाशनों को भी अवसर मिलेगा। ज्वैलरी और जेमस्टोन के लिए अलग-अलग सेक्शन होंगे। यह वर्गीकरण ग्राहकों के लिए उनकी पसंद का उत्पाद ढूंढने के लिए आसान बनाएगा। जेजेएस के मानद सचिव राजीव जैन ने बताया कि इस वर्ष देशभर के लगभग 1000 टॉप ज्वैलरी रिटेलर्स जेजेएस में शामिल हो रहे हैं। जेजेएस के निमंत्रण पर ये रिटेलर्स प्रत्येक वर्ष शो विजिट करते हैं और शो के दौरान बी2बी बायर्स के रूप में अपने प्रोडक्टस् की नियमित आपूर्ति के लिये सम्पर्क बनाते हैं। ताकि बायर्स का भी निरन्तर रूप से ज्वेलरी मैन्यूफैक्चरर्स से सम्पर्क हो सके। उन्होंने आगे बताया कि जेजेएस 2024 की एक और विशेषता नेटवर्किंग डिनर 21 दिसंबर को आयोजित किया जाएगा। यह शानदार नेटवर्किंग ईवनिंग एग्जीबिटर्स को शीर्ष रीटेलर्स और जेजेएस के खरीदारों के साथ डिनर और लाइव बैंड प्रस्तुति का आनंद लेते हुए बातचीत करने का अवसर और मंच प्रदान करती है। जैन के अनुसार इस बार 8,000 से अधिक ट्रेड विजिटर्स और लगभग 50,000 घरेलू व अंतर्राष्ट्रीय विजिटर्स जयपुर पहुंच चुके हैं, जो इस शो में भाग लेंगे। इसमें देश के विभिन्न शहरों जैसे मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, बैंगलोर, हैदराबाद और अहमदाबाद के अतिरिक्त जयपुर के एग्जीबिटर्स भी शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त, बैंकॉक और हांगकांग से भी अंतर्राष्ट्रीय एग्जीबिर्स इस आयोजन में भाग ले रहे हैं। शो के बिजनेस आवर्स के बारे में काला ने बताया कि विजिटर्स के लिए सुबह 10 बजे से शाम 7 बजे तक खुला रहेगा। आम विजिटर्स के लिए शो का समय दोपहर 1 बजे से शाम 7 बजे तक रहेगा। आखिरी दिन यानी सोमवार, 23 दिसंबर को शो का समय शाम 6.30 बजे तक रहेगा। उन्होंने आगे बताया कि शो में आने वाले विजिटर्स की सुविधाओं एवं सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा गया है। गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी विजिटर्स एवं एग्जीबिटर्स के शो में आवागमन के लिए निशुल्क शटल सुविधा की व्यवस्था की गई है। वहीं, शो के दौरान मेडिकल, एम्बुलेंस एवं दमकल के साथ सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये हैं। इसके अतिरिक्त, शो के दौरान डिजाइनरों को प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने के लिए, जयपुर ज्वैलरी शो इस वर्ष 7वीं बार जयपुर ज्वैलरी डिजाइन फेस्टिवल (जेजेडीएफ) की मेजबानी कर रहा है, जिसका थीम 'ट्रेडिशन मीट्स इनोवेशन..रूबी रिडिफाइंड' है।

सरकार नहीं बल्कि सर्कस चल रहा है : नेता प्रतिपक्ष

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। नेता प्रतिपक्ष राजस्थान विधानसभा टीकाराम जूली ने केंद्र और राज्य सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि 'कुर्सी है, तुम्हारा ये जनाजा तो नहीं है,कुछ कर नहीं सकते तो उतर क्यों नहीं जाते' जूली बुधवार को जयपुर मुख्यालय पर पत्रकारों को संबोधित कर रहे थे। प्रदेश की राजधानी जयपुर में लगातार दूसरे दिन जूली ने भजनलाल सरकार पर तीखा हमला किया। जूली बोले मजबूत विपक्ष के रूप में कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं की आवाज को दबाया नहीं जा सकता। जूली बोले कल हमने देश और प्रदेश में फैल रही अराजकता के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया लेकिन सरकारी लवाजमें का इस सरकार ने दुरुपयोग कर पानी की बौछारें इस सर्दी में हमारे ऊपर बरसाई। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी के प्रदर्शन की चर्चाएं प्रदेश की राजधानी नहीं बल्कि देश की राजधानी दिल्ली में भी गूंज रही है। जूली बोले पर्ची वाली सरकार के 1 साल का जश्न केवल और केवल आम जनता के पैसे की बर्बादी है। उन्होंने कहा कि 100 दिन की कार्य योजना और समीक्षा तथा गहलोत

सरकार की जनहित की योजनाओं को बंद करने में ही सरकार का एक साल निकल गया। उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से समितियां बनाई जा रही हैं लेकिन उनकी कोई रिपोर्ट आई है तो सार्वजनिक करें। उन्होंने कहा कि सरकार गर्मी में ही नहीं बल्कि सर्दी में भी पानी बिजली उपलब्ध नहीं करा पा रही हैए प्रदेश में हुई बरसात से बाढ़ जैसी परिस्थितिया उत्पन्न हो गई लेकिन आपदा राहत मंत्री तक अपने विभाग के साथ खड़े नहीं हुए और जब जनता को खाद्य सामान देने का वक्त आया तो कृषि मंत्री गायब हो गए और यह लोग प्रदेश के अन्नदाता किसान की बात कर रहे हैं। जूली ने कहा कि जरूरतमंद और गरीबों की तो मानो यह सरकार दुश्मन ही साबित हो गई।बुजुर्ग और विधवा को पेंशन नहीं मिल रही,विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए तरस रहे हैं, युवा बेरोजगारी का दंश झेल रहे हैं,बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता नहीं मिल रहा। जूली बोले भाजपा सरकार के 1 साल के कार्यकाल के बाद समाज का प्रत्येक वर्ग इस सरकार से परेशान है और कांग्रेस की उन योजनाओं को याद कर रहा है जिसकी वजह से गरीबों का घर का चूल्हा जल रहा था। जूली बोले प्रदेश में जंगल राज की परिस्थितियों पैदा हो गई है। प्रदेश के मुखिया और गृह राज्य मंत्री दोनों के गृह जिले में ही अपराध का आंकड़ा एक नंबर पर पहुंच गया है वही अनुसंधान दर कम होती जा रही है। जूली बोले सीएम के काफ्लि में चूक,उपराष्ट्रपति के काफ्लि में चूक,विधानसभा अध्यक्ष के काफ्लि में लोग रील बना रहे हैं। कैबिनेट मंत्री के पास अधिकारियों को आना चाहिए लेकिन मंत्री अधिकारियों के पास जा रहे हैं पूरी तरह से इस सरकार का सर्कस चल रहा है।

जयपुर बम-ब्लास्ट केस के आरोपी को शहर छोड़ने की अनुमति

सुप्रीम कोर्ट ने जमानत की शर्तों में किया बदलाव, एटीएस को देना होगा स्थायी पता-मोबाइल नंबर

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। गुलाबी नगर में बम ब्लास्ट के दौरान जिंदा बम मिलने के मामले में आरोपी मोहम्मद सरवर आजमी को सुप्रीम कोर्ट से जयपुर छोड़ने की अनुमति मिल गई है। गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस केवी विश्वनाथन की पीठ ने आरोपी के प्रार्थना पत्र पर सुनवाई कर जमानत शर्तों में बदलाव किया। पहले जमानत की शर्त में था कि आरोपी को रोजाना सुबह 10 बजे से 12 बजे तक एटीएस, जयपुर के ऑफिस में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी होगी। लेकिन अब आरोपी के प्रार्थना पर सुप्रीम कोर्ट ने इसे बदलते हुए छूट दे दी है। अब आरोपी को प्रत्येक सप्ताह आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में निकटतम पुलिस स्टेशन में उपस्थिति दर्ज करानी होगी। राज्य सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट में अतिरिक्त महाधिवक्ता शिव मंगल शर्मा ने आरोपी के आवेदन का विरोध किया। उन्होंने कहा कि आरोपी उत्तर प्रदेश में स्थानांतरित होने का इरादा रखता है। इससे वह राजस्थान के अधिकारियों की पहुंच से बाहर हो सकता है। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से आरोपी पर वैकल्पिक कड़ी शर्तें लगाने का अनुरोध किया, जिससे आरोपी पर निगरानी और नियमित संपर्क सुनिश्चित किया जा सके। सरकार के अनुरोध पर सुप्रीम कोर्ट ने आरोपी को निर्देश दिए कि उसे आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में अपने स्थायी पते का सटीक विवरण एंटी टेररिस्ट स्क्वॉड जयपुर को देना होगा। इसके साथ ही वह अपना मोबाइल नंबर भी देगा, जिसे वह बिना सूचना दिए नहीं बदल सकता है।

संमलैंगिक एवं ट्रांसजेण्डर समुदाय के अधिकारों को परिभाषित करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। समलैंगिक एवं ट्रांसजेण्डर समुदाय के अधिकारों को परिभाषित करने के संबधं में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर महानगर द्वितीय द्वारा ऑनलाईन एवं ऑफलाईन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

माननीय राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के तत्वावधान में श्री चन्द्रप्रकाश श्रीमाली, अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण(जिला एवं सेशन न्यायाधीश), जयपुर महानगर द्वितीय के निर्देशन में माननीय उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली के प्रकरण ''सुप्रिया चक्रवर्ती बनाम भारत संघ सिविल रिट पीटिशन 1011/2022'' के क्रम में प्रदत्त दिशा-निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर,

द्वितीय द्वारा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर महानगर प्रथम, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर जिला तथा नई भोर संस्था के समन्वय से समलैंगिक एवं ट्रांसजेण्डर समुदाय के अधिकारों को परिभाषित करने एवं उक्तांकित समुदाय के अधिकारों की सुरक्षा हेतु पैनल अधिवक्ता, लीगल एड डिफेंस कांउसिल, पैरा लीगल वॉलेन्टीयर्स आदि हेतु ऑनलाईन/ऑफलाईन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विधि विद्यार्थियों द्वारा माननीय उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली के प्रकरण ''सुप्रिया चक्रवर्ती बनाम भारत संघ सिविल रिट पीटिशन 1011/2022'' की विस्तृत जानकारी उपस्थित जन को प्रदान की। कार्यक्रम में विधिक सेवा प्राधिकरण के विभिन्न आयामों से भी राजेन्द्र बंशीवाल, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर प्रथम व पवन कुमार जीनवाल, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर जिला ने उपस्थित जन को अवगत करवाया। कार्यक्रम में प्रीति चौधरी, व्याख्याता, राजस्थान यूनिवर्सिटी ने भी इस विषय के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में बी.पी.चन्देल, संयुक्त सचिव, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, रतन सिंह, जिला समन्वयक, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, रामकिशन बिश्नोई, अति. पुलिस अधीक्षक, जयपुर ग्रामीण,आलोक सिंघल, अति. पुलिस उपायुक्त, पश्चिम, जयपुर, सुरेश कुमार महरानियां, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त, सिकाउ, उत्तर, जयपुर, बबीता राजावत, शिक्षा विभाग, आरिफ मंसूरी, विधि अधिकारी, नगर निगम ग्रेटर,लक्षित चौधरी, विधि अधिकारी, नगर निगम ग्रेटर, चीफ एलएडीसीएस, जयपुर महानगर प्रथम, द्वितीय व जिला, पैनल अधिवक्ता, पैरा लीगल वॉलेन्टीयर व संबंधित समुदाय से व्यक्ति उपस्थित रहे।

दुर्लभ रक्त विकार से पीड़ित चार वर्षीय बच्ची का सफल हैप्लॉइडेंटिकल बोन मेरो ट्रांसप्लांट

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। मणिपाल हॉस्पिटल जयपुर के डॉक्टरों ने चार वर्षीय डायमंड ब्लैकफन एनीमिया से झूझ रही बच्ची का सफलतापूर्वक बोन मैरो ट्रांसप्लांट किया। अजमेर निवासी बच्ची को एक माह की उम्र में ही गंभीर रूप से एनीमिया की होने पर एक दुर्लभ बोन मैरो फेलियर सिंड्रोम की बीमारी डायमंड ब्लैकफेन एनीमिया का निदान हुआ। उसके इलाज के लिए एलोजेनिक बोन मैरो ट्रांसप्लांट की आवश्यकता थी। इस बीमारी में बच्ची के शरीर में खून नहीं बनता है एवं बच्चे को जीवित रहने के लिए लगातार खून चढ़वाने की जरूरत होती है। एक पूर्ण 10/10 एचएलए मैच उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में मणिपाल हॉस्पिटल जयपुर के डॉ राहुल शर्मा,कंसलटेंट,पीडियाट्रिक हेमेटोलॉजिस्ट ऑन्कोलॉजिस्ट एवं बोन मैरो ट्रांसप्लांट फिजिशियन की सलाह पर बच्ची के परिवार ने 5/10 एचएलए मैच वाले युक्ति के पिता साभा सिंह से हैप्पी आईडेंटिकल बोन मैरो ट्रांसप्लांट कराने का निर्णय लिया। बच्ची का हैप्लो आइडेंटिकल बोन मैरो ट्रांसप्लांट टी-सेल डीपेलेक्शन तकनीक से डॉ राहुल शर्मा तथा उनकी चिकित्सा टीम द्वारा किया गया और संक्रमण और उपचार के साइड इफेक्ट जैसे चुनौतियों के बावजूद उसके शरीर ने धीरे धीरे उसके पिता से लिए गए नए स्टेम सेल को स्वीकार कर लिया। जिससे उसके रक्त की गिनती और ताकत में सुधार हुआ। एक काइमेरिज्म रिपोर्ट ने बच्ची के रक्त में 100 प्रतिशत डोनर डीएनए की पुष्टि की।

जो कि बोन मैरो ट्रांसप्लांट प्रक्रिया की सफलता को दर्शाता है। बच्ची की कहानी बोन मैरो ट्रांसप्लांट की महत्वपूर्णता को उजागर करती है और आशा और पुन: प्राप्ति की प्रेरणा देती है। जिन बीमारी में बोन मैरो ट्रांसप्लांट की जरूरत होती है तथा पूर्ण 10/10 एचएलए मैच डोनर उपलब्ध नहीं है। उस स्थिति में उन्नत तकनीक से किए गए 5/10 एचएलए बोन मैरो ट्रांसप्लांट से उपचार संभव है। जिसमें ग्राफ्ट बनाम होस्ट रोग नामक जटिलता की संभावना काफी कम हो जाती है तथा नतीजे काफ़ी अच्छे होते हैं।

राजस्थान कम्युनिटी पुलिसिंग व एससीआरबी की संयुक्त पहल

नये साल के पहले सप्ताह से राजकॉप सिटीजन एप व नीड हेल्प फीचर के ज़िलेवार डेमो की होगी शुरुआत

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। राजस्थान पुलिस की एससीआरबी विंग की ओर से महिला व बच्चियों की सुरक्षा के लिए संचालित की जा रही बहुउपयोगी एप राज कॉप सिटीजन ऐप के ज़िलेवार डेमो की शुरुआत अगले महीने के पहले सप्ताह से होगी। पुलिस मुख्यालय की कम्युनिटी पुलिसिंग विंग ने जिलों में डेमो देने की पहल की जा रही है। इस ऐप में वूमन सेफ्टी के तहत नीड हेल्प नाम का फ़ीचर जोड़ा गया है। इसके ज़रिए महिलाएं या बच्चे मुसीबत में होने पर पुलिस से मदद मांग सकते हैं। अभी हॉल ही में मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार भजन लाल शर्मा ने एप के मदद चाहिए (नीड हेल्प) फीचर का उद्घाटन किया गया। इस दौरान एससीआरबी विंग के आईजी शरत कविराज ने डेमो प्रस्तुत किया। महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा की इस विशेष कड़ी में कम्युनिटी पुलिसिंग शाखा के एडीजी बीएल मीना व नोडल अधिकारी पंकज चौधरी ने ज़िलेवार डेमो की पहल की है। जिसकी शुरुआत अगले महीने जयपुर पुलिस कमिश्नरेट से की जा रही है। नये साल के जनवरी महीने में पुलिस कमिश्नरेट के चारों ज़िलों के एक-एक चयनित थाने पर प्रति सप्ताह कम्युनिटी पुलिसिंग के सैकड़ों सदस्य थाना क्षेत्र की महिलाओं,बच्चियों तथा थाने के पुलिस स्टाफ की उपस्थिति में राज कॉप सिटीजन ऐप की खूबियों व नीड हेल्प का डेमो देंगे। मदद चाहिये (नीड हेल्प) का डेमों

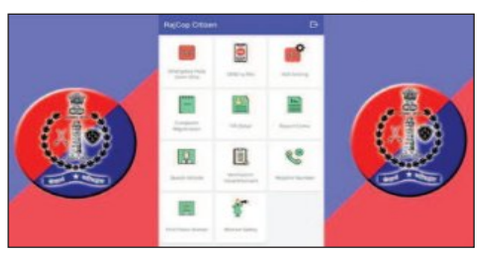

मीटिंग में उपस्थित किसी महिला या बच्ची की ओर से कराया जाएगा। जिससे इस सुविधा का लाभ सभी ज़रूरतमंद को मिल सके।

दिव्यांगना यादव को आईआईएस यूनिवर्सिटी की ओर से पीएचडी की उपाधि प्रदान

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। दिव्यांगना यादव को आईआईएस यूनिवर्सिटी की ओर से पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। उन्हें यह उपाधि इफ़ेक्टिवनेस ऑफ़ थर्ड वेव साइकोथेरपीज़ इन द ट्रीटमेंट ऑफ़ मिक्स्ड एंग्ज़ायटी एंड डिप्रेशन- रोल ऑफ़ सीबीटी, एमबीसीटी और एसीटी विषय पर शोध के लिए दी गई है। उन्होंने यह शोध कार्य डॉ. मोनिका शर्मा के निर्देशन में पूरा किया है।

जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने जिला स्तरीय जन सुनवाई में सुनीं आमजन की समस्याएं, अधिकारियों को दिए निर्देश

आमजन की समस्याओं का हो गुणवत्तापूर्ण निस्तारण : सुराणा

बढ़ता राजस्थान

चूरू (सुरेश लाटा)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने गुरुवार को डीओआईटी सभागार में आयोजित जिला स्तरीय जन सुनवाई में आमजन की समस्याएं सुनीं और उनके निराकरण के लिए मौके पर ही अधिकारियों को निर्देश प्रदान किए। इस दौरान आयोजित जिला जन अभाव अभियोग निराकरण एवं सतर्कता समिति की बैठक में विभिन्न प्रकरणों का निस्तारण किया गया।

इस दौरान जिला कलक्टर ने अधिकारियों से कहा कि वे जन सुनवाई सहित किसी भी माध्यम से प्राप्त होने वाली शिकायतों का त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करें। समस्याओं का एवरेज डिस्पोजल टाइम सुधारें और यह सुनिश्चित करें कि लोगों में समस्या समाधान के प्रति संतुष्टि का स्तर बेहतर हो।

जन सुनवाई के दौरान फैमिली पेंशन रुकने के प्रकरण में उन्होंने कोषाधिकारी प्रवीण कुमार से आवश्यक कार्यवाही कर पेंशन शुरू करवाने के निर्देश प्रदान किए। इसी प्रकार मोरथल में गोचर भूमि पर अतिक्रमण के प्रकरण में जिला कलक्टर के पूछने पर तारानगर एसडीएम ने बताया कि आगामी 22-23 दिसंबर को अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही प्रस्तावित है। इस पर जिला कलक्टर ने उन्हें प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश प्रदान किए। पट्टों संबंधी प्रकरणों पर उन्होंने चूरू कमिश्नर अभिलाषा सिंह सहित नगर निकाय अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही कर पट्टों संबंधी प्रकरणों के त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए। किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की पॉलिसी वितरण नहीं किए जाने की शिकायत पर जिला कलक्टर ने कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ जगदेव सिंह को समुचित ढंग से पॉलिसी वितरण कराने तथा पीएम फसल बीमा योजना के प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए। गुलेरिया गांव में पेयजल समस्या पर जिला कलक्टर ने पीएचईडी (प्रोजेक्ट) एसई को समस्या समाधान के लिए कहा।

इस दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर अर्पिता सोनी, सीईओ श्वेता कोचर, एसीईओ शुभम शर्मा, डीवाईएसपी सुनील झाझड़िया, डीएफओ भवानी सिंह, संयुक्त निदेशक (आईटी) नरेश टुहानिया, एडीपीआर कुमार अजय, कमिश्नर अभिलाषा सिंह, सहायक निदेशक (रोजगार) वर्षा जानू, राजीविका डीपीएम दुर्गा ढाका, डिस्कॉम एसई आरपी वर्मा, पीएचईडी प्रोजेक्ट एसई राममूर्ति, पीएचईडी एसई रमेश राठी, कॉपरेटिव एमडी मदनलाल, जिला खेल अधिकारी प्रकाश राम गोदारा, सीडीपीओ सीमा सोनगरा सहित अधिकारीगण मौजूद रहे।

जादूगर आंचल 23 को करेगी खतरनाक एवं रोमांचक एडवेंचर विद फायर का ग्राधी ग्राउण्ड में निःशुल्क प्रदर्शन

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (दिनेश गोठवाल)। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित, लिम्का बुक एवं द बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर जादूगर आंचल 23 दिसम्बर को गांधी ग्राउण्ड में शाम 5 बजे रोमाचं से भरपूर एवं खतरनाक एडवेंचर विद फायर कार्यक्रम का निःशुल्क प्रदर्शन करेगी। उपरोक्त सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी देते हुए जादूगर आंचल ने बताया कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों में एवं अभिभावकों में पढ़ाई को लेकर दिन-प्रतिदिन मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है। करियर को लेकर अतिमानसिक तनाव की वजह से कई बार विद्यार्थी अवसाद की स्थिति में चले जाते हैं और कई बार तो आत्महत्या जैसे घातक कदम भी उठा लेते हैं। इसी मुद्दे को लेकर जादूगर आंचल अपने ब्रेक दि डिप्रेशन अभियान के तहत इस खतरनाक और साहसिक कारनामें का प्रदर्शन करेगी। जादूगर आंचल ने बताया कि वे 80 किलो की 131 ताले लगी हुई 150 फीट लम्बी लोहे की जंजीर के साथ कार्यक्रम आयोजित करेगी। इसके लिये प्रशासन से इजाजत ले ली है।उनका यह तीसरा आयोजन है। इससे पहले वे महाराष्ट्र एवं उत्तराखंड में इस प्रकार का आयोजन कर चुकी है। वे विश्व की पहली महिला जादूगर है जो इस प्रकार का आयोजन कर रही है। वे अब तक 14500 शो कर चुकी है।

कार्यक्रम संयोजक एवं युवा समाज सेवी डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री ने कहा कि आत्महत्या जीवन का अंतिम अध्याय नहीं है, जबकि 84 लाख योनियों के बाद मनुष्य जन्म मिलता है।

यह आयोजन मेवाड़ की बेटी का मेवाड़ के लोगों के लिए, मेवाड़ के उत्साह, मनोरंजन एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए है।

'प्रशासन गाँव की ओर' थीम को लेकर सुशासन सप्ताह जिला स्तरीय जनसुनवाई के साथ हुआ प्रारंभ

सीपी ग्राम में दर्ज शिकायतों का शत प्रतिशत निराकरण सुनिश्चित करने के कलेक्टर ने दिए निर्देश

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली (बिल्लूराम सैनी)। प्रशासन गाँव की ओर थीम को लेकर सुशासन सप्ताह जिला स्तरीय जनसुनवाई के साथ हुआ प्रारंभ हुआ। जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने बताया कि सुशासन सप्ताह का प्रभावी और परिणाममूलक आयोजन किया जाए। उन्होंने कहा कि जन-सेवा ही सुशासन है। जन- शिकायतों की अधिकतम संख्या को निपटाने के लिए सरकार की पहल है। सुशासन सप्ताह के दौरान अधिक से अधिक संख्या में जन-शिकायतों एवं सेवा प्रदाय आवेदनों का निराकरण करने का प्रयास किया जाए। उन्होंने कहा कि जन-शिकायतों का निवारण करते हुए योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक हितग्राहियों को पहुँचाया जाए। सुशासन सप्ताह मनाने का उद्देश्य राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में जनता की प्रत्येक समस्या का समाधान किया जाना है। कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने कहा कि अभियान में सीपी ग्राम में दर्ज शिकायतों, सीएम हेल्पलाइन तथा जनसुनवाई के प्रकरणों के निराकरण, हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं का लाभ देने से संबंधित शिकायतों के निराकरण को शामिल किया गया है। साथ ही सुशासन से जुड़े लोक सेवा गारंटी अधिनियम के साथ अन्य ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने और निराकरण के प्रयासों को भी इसमें शामिल किया गया है। कलेक्टर ने अभियान के दौरान सीपी ग्राम की सभी शिकायतों का निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। इसी क्रम में सुशासन सप्ताह के अंतर्गत आज कोटपूतली पंचायत समिति के सभागार में जनसुनवाई का आयोजन हुआ जिसमें कुल 28 प्रकरण प्राप्त हुए इनमें रेवेन्यू डिपार्टमेंट के 14, पीडब्ल्यूडी के 4, डीएलबी के 7, डीएसओ तथा पुलिस के एक-एक प्रकरण प्राप्त हुए। जिनके समाधान के लिए जिला कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। इस दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओम प्रकाश सहारण, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी रामनिवास सहित जिला स्तरीय अधिकारी प्रत्यक्ष रूप से तथा सभी उपखंड अधिकारी वीसी के माध्यम से जुड़े।

इनरव्हील दीवास ने हस्त शिल्प कला को दिया प्रोत्साहन

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (दिनेश गोठवाल)। इनर व्हील क्लब ऑफ उदयपुर दीवास ने हस्तशिल्प कला को बढ़ावा देने के लिए एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। क्लब प्रेसिडेंट नयना जैन ने बताया कि कार्यक्रम में, सनशाइन एजुकेशनल सोसाइटी की संस्थापक उपासना दशोत्तर, हनु दशोत्तर, उनके सहयोगी सोमा लाल जी तथा टीम का शॉल उड़ाकर स्वागत किया गया। सनशाइन एजुकेशनल सोसाइटी आदिवासी ग्रामीण महिलाओं को उनकी हस्तशिल्प कला के आधार पर प्रशिक्षित करके रोजगार प्रदान करती है। इस सोसाइटी ने वर्षों में 854 कारीगरों का एक समृद्ध समुदाय बनाया है, जो स्थायी आजीविका को बढ़ावा देता है। फाउंडर रेखा भाणावत ने बताया के सदस्यों ने सनशाइन एजुकेशनल सोसाइटी के कार्यशाला पर कार्यों का अवलोकन किया, जिसमें क्रोशिया से बनाए बच्चो के कपड़े, जूते, लेडिज बैग, खिलौने आदि शामिल थे। इस कार्यक्रम ने हस्तशिल्प कला को बढ़ावा देने और आदिवासी ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम में आशा श्रीमाली, समीक्षा खण्डेलवाल, शशि मेहता, ललिता बापना, अनिता कोठारी, लीना डांगी, सुनीता बोकडिया, बेला व्यास, सरोज शर्मा आदि मौजूद थे।

नाकोड़ाजी के लिये 51 यात्रियों का दल पैदल रवाना

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (दिनेश गोठवाल)। श्री नाकोड़ा भैरव मित्र मण्डल के तत्वावधान में आज आयड़ स्थित जैन तीर्थ से 51 यात्रियों का एक दल नाकोड़ा जी के लिये पैदल रवाना हुआ। मण्डल के संस्थापक सुधीर दशोरिया द्वारा विभिन्न नाकोड़ा पार्श्व भैरव भक्तों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया। मण्डल के अध्यक्ष दिनेश धन्नावत ने बताया कि लगभग 13 दिन की पैदल यात्रा कर के श्ह दल 30 दिसम्बर को नाकोड़ा जी पंहुच जायेगा। सभी यात्री दादा के दरबार में नववर्ष मनायेंगे। रास्ते भर में विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा स्वागत सम्मान किया जायेगा। प्रतिदिन देश के ख्यातनाम कलाकारों द्वारा रात्रिकालीन भक्ति संध्या का आयोजन किया जायेगा। इस आयोजन को सफल बनाने में मुख्यलाभार्थी परिवार अनिता,अंकित,प्रियंका,देवांकित, लावण्या दरड़ा है।

पैदल यात्रा में विनोद परमार,श्रीपाल मुणेत, राजकुमार कदमालिया,चिराग जारोली का विशेष योगदान रहा।

राजकीय कन्या महाविद्यालय में किया श्रमदान

बढ़ता राजस्थान

सरदारशहर(सुरेश लाटा)। राजकीय कन्या महाविद्यालय सरदारशहर में एसबीडी राजकीय महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के स्वयंसेवकों द्वारा एकदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत श्रमदान किया गया। एक दिवसीय शिविर में महाविद्यालय के स्वयंसेवकों एवं स्टाफ सदस्यों के द्वारा महाविद्यालय परिसर की साफ सफाई की गई। इस अवसर पर एनएसएस के इकाई प्रभारी लालचंद मीणा एवं डॉक्टर सुमन के सानिध्य में स्वयंसेवकों ने साफ सफाई की एवं महाविद्यालय की छात्राओं एवं स्टाफ ने भी साफ सफाई में भाग लिया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉक्टर योगेश चाहर ने इस अवसर पर कार्य की सराहना करते हुए दोनों इकाइयों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

लक्ष्मी नगर मोड़ पर अण्डर पास बनवाने की मांग, जिला कलक्टर को सौंपा ज्ञापन

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली (बिल्लूराम सैनी)। स्थानीय पंचायत समिति सभागार में आयोजित जिला स्तरीय जनसुनवाई में गुरूवार को कस्बे के लक्ष्मी नगर मोड़ पर अण्डरपास बनवाने की मांग को लेकर स्थानीय निवासियों द्वारा जिला कलक्टर को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में बताया कि लक्ष्मीनगर मोड़ से अनेक कॉलोनियां व गांव लगते है एवं उक्त कट से कृष्णा टॉकिज रोड़ भी जुड़ता है। क्योंकि लक्ष्मी नगर रोड़ से ग्राम नौरंगपुरा, चानचकी, माधा की ढ़ाणी, उपली कोठी, अमरपुरा, नेता का बास आदि गांव व अनेक कॉलोनियां जुड़ती है। अगर लक्ष्मी नगर कट पर अण्डरपास बन जाये तो दोनों साईड के गांवों व कॉलोनियों को सुविधा होगी तथा व्यापार को देखते हुये सभी व्यावसायिक दुकानें, मॉल, बैंक, अस्पताल, पशु अस्पताल, राजकीय बालिका स्कूल, श्मशान भूमि आदि भी उक्त कट से जुड़ते है। यदि लक्ष्मी नगर कट पर अण्डरपास नहीं बनाया जाता है तो उक्त गांव व कॉलोनियों के वाशिंदों को करीब एक किलोमीटर का चक्कर काटकर आना जाना पड़ेगा। जिससे विधार्थियों, मरीजों व बुजुर्गो को भारी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। उक्त गांव व कॉलोनियों के वाशिंदो के द्वारा लगातार कई वर्षो से लक्ष्मीनगर कट पर अण्डरपास की मांग की जा रही है।

श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरव भक्ति संध्या 22 को

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (दिनेश गोठवाल)। श्री नाकोड़ा पूर्णिमा मण्डल की ओर से 22 दिसम्बर रविवार सांय साढ़े 6 बजे न्यू नवरत्न कॉम्पलेक्स स्थित जीरावाला पार्श्वनाथ मन्दिर प्रांगण में प्रन्यास प्रवर निरागरत्न विजय म.सा. एवं साध्वी कीर्ति रेखाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरव भक्ति संध्या आयोजित की जायेगी। मण्डल के सचिव नितिन नागौरी ने बताया कि श्री पार्श्वनाथ प्रभु के पौषदशमी अट्ठम तप तेला एवं श्री पार्श्व भैरव भक्ति स्वरूप इस आयोजन की श्रृखंला में सात दिवसीय भव्याति भव्य महोत्सव के आयोजन होंगे।

उन्होंने बताया कि सात दिवसीय महोत्सव का समापन 27 दिसम्बर को पारणा महोत्सव के साथ होगा। भक्ति संध्या में संगीतरत्न विपिन पोरवाल मधुर कंठ से नाकोड़ा भैरव के भजनों की प्रस्तुति देंगे।

पूर्व मुख्यमंत्री से मिला पीड़ित परिवार

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली (बिल्लूराम सैनी)। कोटपूतली जिले के प्रागपुरा थाना क्षेत्र में बड़नगर निवासी घासीलाल सैनी,बृजमोहन सैनी के खेत में रह रहे परिवार पर विगत 11 दिसंबर को स्थनीय विधायक कुलदीप धनकड़ के परिवार के लोगों ने बंदूक के नोक पर मारपीट कर महिलाओं का अपहरण किया था जिसमे आज तक भी 4 लोग अस्पताल में भर्ती हैं।उक्त प्रकरण को लेकर प्रागपुरा थाने में नाम दर्ज एफआईआर दर्ज करवाई गई थी उसे लेकर 12 दिसंबर को नामजद आरोपियों की गिरफ्तार करने, परिवार को सुरक्षा मुहैया करवाने को लेकर प्रागपुरा थाने पर राजस्थान प्रदेश माली सैनी महासभा के प्रदेश संगठन महामंत्री भवानी शंकर माली के नेतृत्व में सैंकड़ों लोगों ने धरना दिया था, डीवाईएसपी शिप्रा राजावत द्वारा आश्वासन मिलने पर धरना खत्म कर दिया गया था लेकिन 8 दिन बीत जाने के बाद भी नामजद आरोपियों को पुलिस ने स्थानीय विधायक के दबाव में गिरफ्तार नहीं किया।इस जानलेवा हमले की घटना को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से उनके निवास पर पीड़ित परिवार के लोग भवानी शंकर माली के साथ घायलों के साथ मिले तथा घटना की जानकारी दी। इस मौके पर पावटा,भांकरी सरपंच मेहर सिंह धनकड़, घासीलाल सैनी, बृजमोहन सैनी, मनीष सैनी, घायल रोहित सैनी, मोहित सैनी, घायल सीता देवी, गंगा देवी कन्हैया लाल सैनी ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मिलकर न्याय की गुहार लगाई।

OFFICE OF SUPERINTENDING ENGINEER WCDC ZILA PARIHAD TONK

No. :- 1641 Date :- 16/12/2024

NOTICE INVITING BID

NIB No. 03-04-05-06-07-08-09-10-11/2024-25

Bids for (09 Packages) Construction of various kachcha & Pakka works under MJSA 2.0 Phase I in Tonk District work [Name(s) of works(s) of Procurement] of estimated value INR 845.47 Lacs **(143.70+148.00+61.62+39.85+119.27+112.26+49.02+43.21+128.54)** are invited from interested bidders up to 26-12-2024, 06.00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in)** of the state. UBN is as follows

WSC2425WSOB00864, 865, 866, 868, 869, 870, 871, 871, 873

Raj.Samwad/C/24/9295 SE & PM, WCDC, ZP, TONK

सम्पादकीय

नेहरूवादी मानवतावाद और भारत का विकास

नेहरू के युग (1950-64) में लागू विकास नीति की आलोचना राजनीति में ही नहीं हुई है बल्कि कुछ अर्थशास्त्री भी देश के प्रदर्शन का आकलन करते समय उसकी आलोचना करते हैं। नेहरू के युग की 4 फीसदी वृद्धि दर और 1980 के बाद की 6 फीसदी वृद्धि दर के बीच का बड़ा अंतर अक्सर याद दिलाया जाता है। मगर ध्यान रखें कि नेहरू के दौर में 4 फीसदी वृद्धि दर उस अर्थव्यवस्था के लिए बड़ा ढांचागत बदलाव थी, जो उससे पहले के 100 साल में 1 फीसदी से भी कम रफ्तार से बढ़ी थी। विश्व बैंक के पास नेहरू के अंतिम सालों (1961-64) के तुलना करने लायक आंकड़े मौजूद हैं, जिनके मुताबिक उन सालों में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर 5 फीसदी थी। उस दौरान निम्न और मध्यम आय वाले देशों की औसत वृद्धि दर 4.3 फीसदी और दुनिया भर की औसत वृद्धि दर 5.2 फीसदी थी। वृद्धि में असली गिरावट नेहरू युग के बाद आई जब 1965-66 के भीषण खाद्य संकट ने विकास में रुकावट डाली। उसके बाद कांग्रेस में विभाजन, आपातकाल थोपे जाने के राजनीतिक असर और जनता पार्टी की विजय तथा पतन के कारण आई राजनीतिक अस्थिरता ने विकास के प्रयासों को और भी बेअसर किया। यहां ध्यान रहे कि 1962 में चीन के साथ युद्ध और 1965 तथा 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्धों ने भी विकास को पटरी से उतारे रखा। मगर 1980-81 के बाद औसत वृद्धि दर 6 फीसदी पर बनी रही।

नेहरू के जमाने की वृद्धि दर और 1980-81 से छह फीसदी की औसत वृद्धि दर के बीच अंतर की वजह अक्सर नेहरू के दौर की एक खास नीति को बताया जाता है। कहते हैं कि नेहरू ने उन उद्योगों पर जोर दिया, जो आयात होने वाले माल को देश में ही बनाते। इस वजह से श्रम के अधिक इस्तेमाल से बनने वाले माल के निर्यात के मौकों का फायदा नहीं उठाया जा सका, जबकि उससे विनिर्माण में रोजगार तेजी से बढ़ता। 1951 में मिल में बने कपड़े के निर्यात की सबसे अधिक संभावना थी और हथकरघा बुनकरों को संरक्षण देने का राजनीतिक आंदोलन उसकी राह में बाधा बन गया। ध्यान रहे कि आजादी के पहले के कॉरपोरेट औद्योगिक विकास की दिशा काफी हद तक आयात हो रहे माल का उत्पादन करने की ओर थी और उससे व्यापार संरक्षण की मांग उठी। यह प्रवृत्ति विकास पर हमारे कंपनी जगत के नजरिये से कभी खत्म नहीं हुई है। 1950 में निर्यात पर निराशा का भाव इसलिए था क्योंकि उससे पिछले सालों में दुनिया भर में वस्तुओं का व्यापार ठहरा हुआ था। 1948 में 58.5 अरब डॉलर का वैश्विक वस्तु व्यापार हुआ था, जो 1949 में 58.6 अरब डॉलर और 1950 में 61.5 अरब डॉलर तक ही पहुंच पाया। विश्व व्यापार में जिस वृद्धि ने खास तौर पर पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के निर्यात को रफ्तार दी, वह 1960 के बाद ही दिखी थी। विकसित दुनिया ने भी 1950 में विकासशील देशों की संभावनाओं में बहुत कम दिलचस्पी दिखाई। 1950 के दशक की शुरुआत में यूरोप के देश और रूस दूसरे विश्व युद्ध की विभीषिका से उबर ही रहे थे। अमेरिका भी मार्शल प्लान के साथ यूरोप को पटरी पर लौटाने में जुटा था।

निस्तेज विपक्ष देश को कब तक अंधेरों में धकेलेगा?

बाबा साहेब आंबेडकर पर घडियाली आंसू बहाने वाला विपक्ष एवं विशेषतः कांग्रेस यह भूल रही है कि आंबेडकर का सर्वाधिक अपमान एवं उपेक्षा इन्हीं दलों ने की है। पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू आंबेडकर को पसन्द नहीं करते थे। क्योंकि आंबेडकर मुस्लिम तुष्टिकरण की कांग्रेस नीति से नाखुश थे। उनका मत था कि धर्म के आधार पर देश का विभाजन हुआ है, अतः सभी मुस्लिम को भारत छोड़ देना चाहिए? गांधी और नेहरू ने इस विचारधारा का विरोध किया? गांधी तो विरोध में भूख हड़ताल पर बैठ गए? बाबा साहेब ने गांधी से समझौता कर संविधान को मुस्लिम के अनुसार ड्राफ्ट कर दिया? फिर भी नेहरू बाबा साहेब के विरुद्ध लगातार लगे रहे।

ललित गर्ग

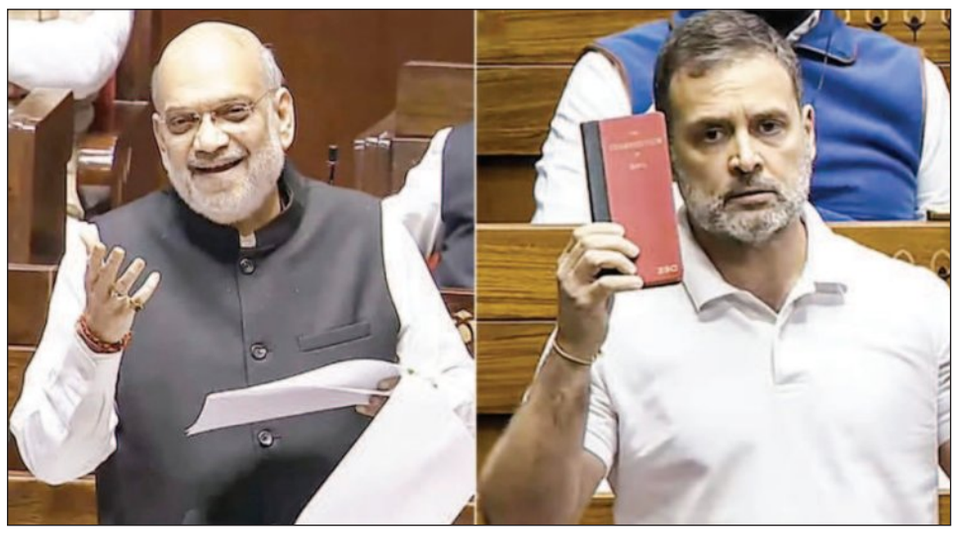

विपक्ष बात-बात पर तू-तू, मैं-मैं करते हुए बात का बतंगड़ बनाकर देश का भारी नुकसान कर रहा है। संसद को चलने नहीं दे रहा है, आधे-अधूरे बयान के हिस्से को प्रचारित कर घटिया एवं सस्ती राजनीति करते हुए देश को गुमराह कर रही है। बेबुनियाद एवं भ्रामक मुद्दों को उछाल कैसे गुल खिलाये, कैसे देश को अंधेरों में धकेला जाये, इसी फिराक में कांग्रेस एवं समूचा विपक्ष दिनरात लगा है, इसका प्रमाण है गत दिवस संसद में गृह मंत्री अमित शाह के डा. आंबेडकर को लेकर दिए गए बयान पर विपक्ष का हंगामा, तीखी नोकझोंक एवं होहल्ला। इस हंगामे का आधार यह है कि गृह मंत्री ने यह कह कर आंबेडकरजी का अपमान कर दिया कि यदि आंबेडकर, आंबेडकर करने वाले इतना नाम भगवान का लेते तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता। मुश्किल यह है कि हंगामा करने वाले यह स्पष्ट नहीं कर पा रहे हैं कि आखिर ऐसा कहने से आंबेडकरजी का अपमान कैसे हो गया? विडम्बना देखिये कि आजादी के बाद से अब तक आंबेडकर का अपमान करने, तिरस्कार करने एवं उनकी उपेक्षा करने वाला दल एकाएक उनका इतना हिमायती कैसे हो गया? यह सारा हंगामा विपक्ष इसलिये कर रहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं भारतीय जनता पार्टी ने आंबेकडर को शीर्ष राष्ट्रनायकों में शुमार कर किया है और उनकी नीतियों, सिद्धान्तों एवं मूल्यों को राजनीति का अहम हिस्सा बनाया है। विपक्ष डरा हुआ है कि भाजपा आंबेडकर को आजादी के बाद प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के बाद उचित स्थान देकर दलित समुदाय के हितों की वास्तविक चिन्ता की है, जिससे दलित वोट भाजपा के पक्ष में जाता हुआ दिख रहा है। इसलिये शाह के बयान को तोड़-मरोड एवं आधा-अधूरा प्रस्तुत कर बेवजह का हंगामा करने पर तुले विपक्ष एवं उनके नेताओं ने जो एवं जैसे तर्क दिए हैं, वे विचित्र ही नहीं, हास्यास्पद भी हैं।

आंबेडकर के चुनाव लड़ने पर नेहरू ने उनके खिलाफ कांग्रेस प्रत्याशी खड़ा कर उन्हें हरवा दिया? विडम्बना देखिये कि आंबेडकर के सचिव नारायण सदोबा काजरोलकर को उनके खिलाफ खड़ा कर दिया। कांग्रेस ने न केवल दो बार उन्हें चुनाव में हराया बल्कि केन्द्र सरकार में उनकी घोर उपेक्षा लगातार जारी रखी। इसी से नाराज होकर आंबेडकर ने मंत्री पद से इस्तिफा देते हुए नेहरू पर गंभीर आरोप लगाये। इतना ही नहीं आंबेडकर ने स्वयं के बनाये संविधान को जला देने की बात भी इसलिये कही थी कि संविधान का संचालन गलत हाथों में है। इतिहास की इन त्रासद एवं विसंगतिपूर्ण स्थितियों के बावजूद आखिर कांग्रेस किस आधार पर आंबेडकर की तस्वीरें लेकर संसद परिसर में विरोध कर रही है। अपने आरोप को पुष्ट करने के लिए विपक्ष और विशेष रूप से कांग्रेस नेता गृह मंत्री के बयान के एक हिस्से को तो प्रचारित कर रहे हैं, लेकिन उसके शेष हिस्से को सुनने के लिए तैयार नहीं, जिसमें उन्होंने कहा था कि डा. आंबेडकर का नाम लेने वालों ने किस तरह उनके विचारों के खिलाफ काम किया और उन्हें अपमानित करने में भी संकोच नहीं किया। लगता है कांग्रेस को यही नागवार गुजरा और इसी कारण वह संसद के भीतर-बाहर इस मामले को तूल देने में जुट गई। इसे तूल देने के लिए उसके नेताओं की ओर से संसद के दोनों सदनों में आज भी हंगामा बरपाया कि दोनों दलों के सांसदों के बीच मकर द्वार पर धक्कामुक्की में भाजपा सांसद प्रताप सारंगी के सिर में चोट देखी गई। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायल सांसद ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी ने एक सांसद को धक्का दिया, जो मेरे ऊपर गिरे। आरोप पर जवाब देते हुए राहुल ने कहा कि हां! ऐसा हुआ। वे हमें प्रवेश द्वार पर रोकने की कोशिश रहे थे। ये तर्क एवं त्रासद स्थितियां संसदीय गरिमा को धुंधलाने वाली है। कांग्रेस के तर्कों का स्तर न केवल राजनीतिक विमर्श का गिराने वाला ही नहीं, बल्कि यह बताने वाले भी हैं कि नेतागण किस तरह तिल का ताड़ बनाने में माहिर हो गए हैं। कांग्रेस भाजपा के बारे में तथ्यहीन एवं भ्रामक अफवाहें फैला रही है। कांग्रेस नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक गरीब और बेरोजगारी का गीत गाते रहे हैं, लेकिन उनके शासनकाल में न तो गरीब खत्म हुए और न बेरोजगारी? नीयत में खोट और अनुभवहीनता का जब सत्ता प्राप्ति के संदर्भ में समन्वय हो जाता है, तो ऐसी हास्यास्पद स्थितियां निर्मित हो जाती हैं। भारत की राजनीति में इस समय यही स्थिति बन गई है।

राजनीतिक बहस का स्तर इतना छिछलादार, स्तरहीन एवं बेबुनियाद नहीं होना चाहिए। झूठ को जोर-जोर से चिल्लाकर कहने से वह सच नहीं हो जाता। यह अच्छा हुआ कि गृह मंत्री ने अपने बयान पर कोई सफाई देने के बजाय दो टूक यह कहना उचित समझा कि उनके पूरे वक्तव्य को सुना जाए। वैसे यह तय है कि विपक्षी नेता ऐसा नहीं करने वाले, क्योंकि उन्हें यही साबित करना है कि आंबेडकरजी का अपमान हो गया, संविधान खतरे में आ गया इसलिये गृहमंत्री को अपने पद से इस्तिफा दे देना चाहिए। आखिर इसे मूर्खतापूर्ण राजनीति न कहा जाए तो क्या कहा जाए? इस पर हैरानी नहीं कि राहुल गांधी को फिर से यह नजर आने लगा कि मोदी सरकार संविधान बदलने जा रही है। कांग्रेस नेता गृह मंत्री के बयान को लेकर आसमान सिर पर उठाने के लिए स्वतंत्र हैं, लेकिन वे इस सच को नहीं छिपा सकते कि उनके शासनकाल में डा. आंबेडकर की किस तरह उपेक्षा और अनदेखी की गई। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि जहां जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी को तो उनके जीवनकाल में ही भारत रत्न से सम्मानित कर दिया गया, लेकिन आंबेडकरजी को यह सम्मान दशकों बाद 1990 में मिल सका। यहां तक संसद के केन्द्रीय कक्ष में मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू एवं इन्दिरा गांधी की तस्वीरें तभी लग गयी लेकिन आंबेडकर की तस्वीर वी.पी. सिंह ने प्रधानमंत्री रहते लगायी गयी। क्या कांग्रेस बता सकेगी कि ऐसा क्यों हुआ? क्यों आंबेडकर की लगातार उपेक्षा होती रही?

डा. आंबेडकर ने 25 नवंबर, 1949 के अपने ऐतिहासिक भाषण में यह कहा था कि संविधान कितना अच्छा होगा, यह आगे चलकर उसे चलाने वालें सत्ता नेतृत्व की मानसिकता एवं नीयत पर निर्भर करेगा। 1975-77 में यह शब्दशः सत्य सिद्ध हुआ, जब पद पर बने रहने की लालसा ने संविधान के साथ अत्याचार करते हुए आपातकाल लागू किया गया, जिसे इतिहास भूलेगा नहीं। लेकिन आज जो संविधान बचाने का शोर सुनाई दे रहा है और जिसकी प्रति संसद से संभल तक लहराई जा रही है, वह देश का ध्यान भटकाने की कोशिश मात्र है, जनता को गुमराह करने की कुचेष्टा मात्र है। निश्चित ही यह दयनीय, विडम्बनापूर्ण एवं त्रासद है कि सत्ता पाने के लिए व्याकुल लोगों की व्यग्रता अब घातक उग्रता के रूप में प्रकट हो रही है।

संसद के कार्य संचालन में जैसे व्यवधान डाले जा रहे हैं, वे न तो भारत के संविधान के प्रति कोई आदरभाव प्रकट करते हैं, न ही आंबेडकर के प्रति कोई श्रद्धा प्रकट करते हैं। आज हमारे विपक्ष के पास एक भी ऐसा नेता नहीं है जो इस स्थिति से देश को बाहर निकाल सके, राष्ट्रीय चरित्र को जीवित रखने का भरोसा दिला सके। प्रश्न है कि निराश करने वाला विपक्ष देश को कब तक अंधेरों में धकेलता रहेगा?

शख्सियत

बढ़ता राजस्थान

डॉ.अमन दीप सिंह कपूर
(भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी)

नमस्कार साथियों हमारी आज के कॉलम के सुपर स्टार हैं भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी डॉ.अमनदीप सिंह कपूर। डॉक्टरी की हुई है वो भी सर्जरी और मेडिसन में तो जब अपराध रोकने का जिम्मा उठाया तो अपराधी को पहले दवाई देंगे और फिर भी दुरूस्त नहीं हुआ तो ऑपरेशन कर देंगे। भिवाडी में बढ़ते अपराध को रोकने के लिए जैसे ही सरकार ने डॉ.अमनदीप सिंह जी को लगाया आधे से अधिक छुटभैया अपराधी पतली गली से निकल लिए और नामचीन अपराधियों का क्या हर्ष हुआ ये सोशल मीडिया के माध्यम से जगजाहिर है। शानदार जाँबाज और दिलेर अधिकारी के रूप में डॉ.अमनदीप सिंह को जाना जाता है। 24 जनवरी सन 1977 को यमुना नगर में जन्में, अमनदीप जी बहुत ही सुलझे हुए इंसान हैं। एमबीबीएस (मेडिसिन एवं सर्जरी) के बाद पुलिस सेवा में आए और आज निदेशक है केन्द्रीय गुप्तचर प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय भारत सरकार। इससे पूर्व ये सहायक निदेशक, पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली रहे। उपमहानिरीक्षक पुलिस, एटीएस एण्ड एसओजी जयपुर। पुलिस अधीक्षक, भरतपुर। पुलिस अधीक्षक, भिवाडी अलवर। पुलिस उपायुक्त, क्राइम, आयुक्तालय जयपुर। पुलिस अधीक्षक, सीकर। पुलिस उपायुक्त पूर्व पुलिस आयुक्तालय, जोधपुर। पुलिस अधीक्षक, बीकानेर। पुलिस अधीक्षक, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो कोटा। कमाण्डेन्ट, सैकिंड़ बटालियन आरएसी कोटा। पुलिस अधीक्षक, कोटा शहर कोटा। पुलिस उपायुक्त, जयपुर शहर पूर्व पुलिस आयुक्तालय जयपुर। पुलिस अधीक्षक, करौली। पुलिस अधीक्षक, बांसवाड़ा। पुलिस उपायुक्त, अपराध जयपुर कार्यालय पुलिस आयुक्त, जयपुर। पुलिस अधीक्षक, गुप्तचर विभाग जयपुर। सहायक अधीक्षक पुलिस, वृत्त ब्यावर अजमेर। जिला प्रशिक्षण, अजमेर के अंतर्गत रहे। बेहद शानदार व्यक्तित्व के धनी हैं। पूरी फोंस में डॉ.अमनदीप सिंह के जाने(स्थानंतरण) के बाद उनकी सार्थक चर्चा इस बात का गवाह है कि पुलिसकर्मियों के प्रति कितने शानदार रहे हैं। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

रूपक शर्मा

विशेष आलेख

भारत में नवाचार और स्टार्टअप का उभरता युग अटल इनोवेशन मिशन

अवनीश कुमार गुप्ता

(एआईएम) भारत में नवाचार और उद्यमशीलता को प्रोत्साहन देने की एक महत्त्वपूर्ण पहल है, जो देश को तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाने की दिशा में अग्रसर है। 2016 में स्थापित इस मिशन का उद्देश्य न केवल भारत को स्टार्टअप संस्कृति में अग्रणी बनाना है, बल्कि युवाओं के भीतर रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमता का विकास करना भी है। हाल ही में एआईएम को 2028 तक विस्तारित करने की मंजूरी दी गई, जिससे इसके महत्व और प्रभाव को नई मान्यता मिली। लेकिन इस पहल की सफलता केवल इसकी योजनाओं पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उन चुनौतियों और समाधानों पर भी आधारित है, जिनका सामना यह मिशन कर रहा है। यदि हम भारत के नवाचार इतिहास को देखें, तो पाएंगे कि आर्यभट्ट, चरक और सुश्रुत जैसे विद्वानों ने विज्ञान, गणित और चिकित्सा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। लेकिन समय के साथ, विशेष रूप से औपनिवेशिक शासन के दौरान, यह नवाचार संस्कृति कमजोर पड़ गई। आज, एआईएम जैसे कार्यक्रम उसी सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस मिशन ने अटल टिंकरिंग लैब्स और अटल इनक्यूबेशन सेंटर जैसी पहलों के माध्यम से छात्रों और उद्यमियों को वैश्विक स्तर की तकनीकों से जोड़ने का कार्य किया है। अब तक देशभर में 10,000 से अधिक टिंकरिंग लैब्स स्थापित की गई हैं, जो छात्रों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स और 3डी प्रिंटिंग जैसी उन्नत तकनीकों से अवगत कराती हैं। लेकिन एआईएम की इस सफलता के बावजूद इसकी राह में कई चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी चुनौती ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों तक इसकी पहुँच सुनिश्चित करना है। नवाचार की जो सुविधाएँ शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध हैं, वे ग्रामीण बच्चों और युवाओं के लिए एक सपना भर हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में कई प्रतिभाशाली छात्र हैं, लेकिन संसाधनों और मार्गदर्शन के अभाव में उनकी क्षमता व्यर्थ हो जाती है। इसके अलावा, भारतीय शिक्षा प्रणाली का अभी भी अंकों और रटंत पर केंद्रित होना भी एक समस्या है। नवाचार और समस्या-समाधान कौशल को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यकता है। इसके साथ ही, वित्तीय संसाधनों की कमी भी एक बड़ी बाधा है। एआईएम के तहत कई स्टार्टअप्स को प्रारंभिक सहायता मिली है, लेकिन देशभर में हजारों ऐसे नवोन्मेषक हैं जिन्हें अपने विचारों को साकार करने के लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता है। इसके अलावा, महिलाओं और अल्पसंख्यकों की भागीदारी अभी भी अपेक्षाकृत कम है। जब तक इन समूहों को विशेष रूप से प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा, तब तक नवाचार का व्यापक और समावेशी विकास संभव नहीं है। इन समस्याओं के समाधान के लिए कई कदम उठाए जा सकते हैं। सबसे पहले, ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल टिंकरिंग लैब्स की स्थापना की जानी चाहिए। यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म हो सकता है, जहाँ छात्र इंटरनेट और तकनीकी उपकरणों के माध्यम से आधुनिक तकनीकों का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इसके साथ ही, शिक्षा नीति में डिजाइन थिंकिंग और प्रोजेक्ट-बेस्ड लर्निंग जैसी विधाओं को शामिल किया जाना चाहिए। यह छात्रों को रचनात्मक सोच और व्यावहारिक कौशल प्रदान करने में मदद करेगा। निजी क्षेत्र की भागीदारी भी इस मिशन की सफलता के लिए आवश्यक है। बड़ी कंपनियों और गैर-सरकारी संगठनों को इस पहल में शामिल किया जाना चाहिए। यह न केवल वित्तीय सहायता प्रदान करेगा, बल्कि तकनीकी संसाधनों को भी सुलभ बनाएगा। महिलाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण और प्रोत्साहन कार्यक्रम भी चलाने चाहिए, ताकि वे नवाचार और उद्यमशीलता में अपनी भागीदारी बढ़ा सकें। स्थानीय संदर्भ में देखें तो उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में, जहाँ बड़ी संख्या में युवा प्रतिभा उपलब्ध है, वहाँ अटल इनोवेशन मिशन को एक सशक्त मंच के रूप में उभरने की आवश्यकता है। लखनऊ, कानपुर, और वाराणसी जैसे शहरों में इनक्यूबेशन सेंटर और टिंकरिंग लैब्स को और अधिक विस्तार दिया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायतों और स्थानीय संगठनों की मदद से इन योजनाओं को क्रियान्वित किया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, भारत नवाचार सूचकांक में अभी 40वें स्थान पर है। यदि एआईएम जैसे मिशन को सही दिशा में आगे बढ़ाया जाए, तो भारत आने वाले वर्षों में शीर्ष 20 देशों में शामिल हो सकता है। इसके लिए मिशन को शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और कृषि जैसे क्षेत्रों में अधिक ध्यान देना होगा। विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सकता है। अटल इनोवेशन मिशन की मौजूदा उपलब्धियाँ यह साबित करती हैं कि भारत में नवाचार और उद्यमशीलता का भविष्य उवल है। लेकिन इसकी सफलता के लिए यह सुनिश्चित करना होगा कि यह पहल केवल योजनाओं तक सीमित न रहे, बल्कि इसे व्यावहारिक और समावेशी बनाया जाए। मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसे अभियानों के साथ तालमेल बनाकर एआईएम को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। नवाचार केवल तकनीकी विकास का माध्यम नहीं है, यह एक सांस्कृतिक परिवर्तन है। यह समाज को उस दिशा में ले जाता है, जहाँ समस्याओं का समाधान नए दृष्टिकोण और रचनात्मकता के माध्यम से किया जाता है। अटल इनोवेशन मिशन इस दिशा में एक सशक्त प्रयास है, लेकिन इसे पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए सरकार, उद्योग, शिक्षा जगत, और समाज सभी को अपने-अपने स्तर पर योगदान देना होगा।

आज का इतिहास

20 दिसंबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- लार्ड क्लाईव को 1757 में बंगाल का गवर्नर बनाया गया।
- ब्रिटेन ने 1780 में हालैंड के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।
- ब्रिटेन, फ्रांस, ऑस्ट्रिया और रूस ने 1830 में बेल्जियम को मान्यता प्रदान की।
- महान कवि बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 1876 में राष्ट्र गीत 'वंदे मातरम' की रचना की।
- अमेरिकी संसद की प्रतिनिधि सभा ने 1919 में आव्रजन पर रोक लगाई।
- बेगर फैटरनिटि (संयुक्त राज्य अमेरिका के जेसुइट कॉलेज में स्थापित पहली सामाजिक बिरादरी) की 1923 में 9 लोगों ने स्थापना की जो पोप से ऐसा करने की अनुमति हासिल कर चुके थे।
- जर्मनी में 1924 में एडोल्फ हिटलर की जेल से रिहाई।
- महात्मा गांधी 1946 में श्रीरामपुर में एक महीने तक रूके।
- ओमान और ब्रिटेन के बीच समझौते के बाद 1951 में ओमान स्वतंत्र हुआ।
- भारतीय गोल्फ संघ का 1955 में गठन।
- अमेरिका में 1956 में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि बसों में होने वाले रंगभेद पर रोक लगाई जानी चाहिए।
- गोरख प्रसाद ने 1957 में पदमुक्त होकर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा संयोजित 'हिंदी विश्वकोश' का संपादन भार ग्रहण किया।
- भारतीय गेंदबाज जासू पटेल ने 1959 में कानपुर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 69 रन देकर नौ विकेट लिए।
- जर्मनी में बर्लिन की दीवार को 1963 में पहली बार पश्चिमी बर्लिनवासियों के लिए खोला गया।
- जरनल याह्या खाँ द्वारा 1971 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति पद से त्यागपत्र, जुल्फिकार अली भुट्टो राष्ट्रपति बने।
- यूरोपीय देश स्पेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री एडमिरल लुईस करेरो ब्लांको की 1973 में मैड्रिड में एक कार बम हमले में मौत।
- इजरायल के तत्कालीन प्रधानमंत्री यित्जाक राबिन ने 1976 में अपने पद से इस्तीफा दिया।
- तिरूपति बालाजी मंदिर में 1985 में भगवान वैंकटेश्वर को 5.2 करोड रुपये की कीमत वाला हीरा जडित मुकुट चढाया गया।
- संसद ने 1988 में 62वें संविधान संशोधन के माध्यम से मतदान करने की आयु 21 से घटाकर 18 साल करने संबंधी विधेयक को मंजूरी दी।
- भारत और पाकिस्तान 1990 में एक दूसरे पर परमाणु हमले न करने पर सहमत हुए।
- पॉल कीटिंग 1991 में आस्ट्रेलिया के नये प्रधानमंत्री बने।
- भारत और यूरोपीय संघ के बीच 1993 में ब्रसेल्स में सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गये।
- सन 1998 में 13वें एशियाई खेलों का रंगारंग समापन, बिल क्लिंटन एवं कैनेथ स्टार को 'स्टार टाइम पत्रिका' ने 'मैन आफ़ दी इयर' घोषित किया, चीन द्वारा इरीडियम आधारित दो संचार उपग्रह छोड़े गये।
- अंतरिक्ष यान 'डिस्कवरी' 1999 में हबल टेलीस्कोप की मरम्मत हेतु रवाना।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारस्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें सताए और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष

किसी के साथ गलतफहमी होने के कारण मनमुटाव हो सकता है। पारिवारिक वातावरण खराब हो सकता है। अत्यधिक धन खर्च होगा। भरपूर आत्मविश्वास और दृढ़ निर्णय के कारण आज आप कोई भी काम त्वरित निर्णय लेकर पूरा करेंगे।

वृष

विरोधियों से विजय प्राप्त करेंगे। दिन के दौरान आकस्मिक घटनाओं में व्यस्त रहेंगे। परिणामस्वरूप मन में नकारात्मक विचार पैदा होंगे। नौकरी-धंधे में उच्च अधिकारी या भागीदार के क्रोध का शिकार बनना पड़ेगा।

मिथुन

शारीरिक अस्वस्थता के साथ-साथ मानसिक चिंता में वृद्धि होगी। पारिवारिक सदस्यों के साथ मनमुटाव होगा। उग्र वाणी और अहं के टकराव से किसी के साथ झगड़े या विवाद की स्थिति बन सकती है।

कर्क

पिता तथा अभिभावकों का सहयोग प्राप्त होगा। मन आनंदित रहेगा। फिर भी स्वभाव में उग्रता का असर आपकी वाणी पर न पड़े, इसका ध्यान रखें। वैवाहिक जीवन में प्रेम बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधी मामूली शिकायत रहेगी। भाग्य साथ न देता हुआ प्रतीत होगा।

सिंह

व्यवसाय करने वालों को सरकार की तरफ से लाभ मिलने और नौकरीपेशा को उच्च अधिकारियों की कृपादृष्टि मिलेगी। भाई-बंधुओं और पड़ोसियों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा।

कन्या

गृहस्थ जीवन में आनंद छाया रहेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नौकरी-व्यवसाय में प्रगति होगी। अधिकारी और घर में बड़ों से लाभ मिलेगा। धन लाभ होगा। व्यापारियों को उधार दिया पैसा मिलेगा। संतान की प्रगति से मन खुश रहेगा। लंबे प्रवास का आयोजन संभव होगा।

तुला

आप पूरे दिन शारीरिक और मानसिक थकान महसूस करेंगे। परिश्रम की अपेक्षा कम सफलता मिलने से निराशा रह सकती है। नौकरी और व्यापार के संबंध में थोड़ा चिंतित रहेंगे। काम की भागदौड़ में परिवार की तरफ ध्यान नहीं दे पाएंगे।

वृश्चिक

गृहस्थ जीवन में सुख-शांति का अनुभव होगा। मित्रों से मुलाकात होगी। आय में वृद्धि होगी। उत्तम वैवाहिक सुख की प्राप्ति होगी। अविवाहितों का रिश्ता पक्का होने की संभावना बनी रहेगी। आज आपके हरेक कार्य निर्विघ्न पूरे होंगे।

धनु

शारीरिक स्वास्थ्य बना रहेगा। मित्रों, स्नेहीजनों से लाभ होगा। शरीर में थकान और बेचैनी रहेगी। स्वास्थ्य नरम-गरम रहेगा। मन चिंता से व्याकुल रहेगा। आज यात्रा स्थगित रखने की सलाह दी जाती है। संतान के विषय में चिंता रहेगी।

मकर

आज यात्रा को टालना हित में होगा। पाचन तंत्र संबंधी कोई तकलीफ हो सकती है। आपके व्यवहार से किसी को हानि न पहुंचे, इसका ध्यान रखें। आज आप सभी काम दृढ़ आत्मविश्वास और मनोबल से पूरा करेंगे।

कुंभ

कोर्ट-कचहरी का कामों को आज टाल देना हितकर है। आज विविध क्षेत्र में लाभ मिलने से आप शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और प्रफुल्लित रहेंगे। मित्रों के साथ मुलाकात, रमणीय स्थानों पर प्रवास पर्यटन का आयोजन होगा।

मीन

विद्यार्थी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। संतान के अध्ययन या अन्य मामलों के पीछे धन खर्च या पूंजी निवेश होगी। कलाकारों तथा खिलाड़ियों को प्रतिभा दिखाने का उत्तम समय है। सरकार से लाभ होने की संभावना है। आंख संबंधी शिकायत पैदा होगी।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीदपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतीक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान*। प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

न्यायिक अधिकारियो की बैठक आयोजित

राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर दिए आवश्यक दिशा निर्देश

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (कृष्णचन्द्र विजय)। तालुका विधिक सेवा समिति के तत्वावधान में गुरूवार को समिति जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव दिनेश जलूथरिया की मौजुदगी व समिति अध्यक्ष कृष्ण मुरारी जिन्दल की अध्यक्षता में 22 दिसम्बर को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर आवश्यक बैठक आयोजित हुई। बैठक में वरिष्ठ न्यायिक मजिस्ट्रेट रेश्मा जानवानी, अतिरिक्त न्यायिक मजिस्ट्रेट धर्मेन्द शर्मा, अभिभाषक संघ अध्यक्ष राजेन्द्र राजपुरोहित, अधिवक्ता रविकुमार जैन, मुन्नालाल गुप्ता, मोहनलाल चौधरी, परशुराम चौधरी सहित अन्य कई अधिवक्ता मोजुद रहे। बैठक में मौजुद अधिवक्ताओं को निर्देश प्रदान करते हुए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव दिनेश जलूथरिया ने बताया कि 22 दिसम्बर को राष्ट्रीय व राज्य सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। इस लोक अदालत में राजीनामे व समझोते के आधार पर अधिक से अधिक मामलों का निस्तारण करवा कर पक्षकारो को राहत देने के साथ साथ अदालतो में वर्षो से लम्बित पड़े प्रकरणो का निस्तारण करवाऐं। साथ ही लोक अदालत को लेकर समय समय पर जारी गाइडलाइन व दिशा निर्देशो की पालना करने की सुनिश्चितता की जाए। उपकारागृह का किया औचक निरीक्षण किया :- जिला विधिक सेवा प्राणिकरण के सचिव दिनेश जलूथरिया ने अपने मालपुरा प्रवास के दौरान उपकारागृह मालपुरा का औचक निरीक्षण कर सम्पूर्ण व्यवस्थाओ का जायजा लिया। इस दौरान उपकारापाल महावीर मीणा ने कारागृह की सम्पूर्ण व्यवस्थाओ की जानकारी दी। जलूथरिया ने इस दौरान संधारित रजिस्टरो का अवलोकन करने के अलावा बंदियो को दी जाने वाली मूलभूत सुविधाओ व बंदियो से मुकदमो की स्थिति व अधिवक ताओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की। यह जानकारी तालुका विधिक सेवा समिति के सचिव रविकुमार जांगिड़ ने दी।

डीआरएम तिवारी ने किया गंगापुरसिटी रेलवे स्टेशन का निरीक्षण

12 मीटर चौड़े फुट ओवरब्रिज के निर्माण को लेकर कही बड़ी बात

बढ़ता राजस्थान

गंगापुरसिटी (अब्दुल माहिर)। मंडल रेल प्रबंधक कोटा (डीआरएम) मनीष तिवारी गुरुवार सुबह स्पेशल ट्रेन से गंगापुरसिटी रेलवे स्टेशन पहुंचे। जहां उन्होंने अमृत भारत योजन के तहत रेलवे स्टेशन के सुदृढिक़रण कार्य का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान तिवारी 12 मीटर चौड़ाई में बनने वाले फुट ओवर ब्रिज को लेकर गंभीर नजर आए। उन्होंने इसके निर्माण की गति धीमी होने पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व रेल मंत्री पीयूष गोयल की यह सोच है कि रेलवे स्टेशन आबादी को दो हिस्सों में बांटता है, लेकिन यह फुट ओवर ब्रिज आबादी को जोडऩे का काम करेंगे। यह भारतीय रेल में पहली बार प्रयोग किया जा रहा है। ज्यादातर स्टेशनों पर इसका निर्माण भी चल रहा है। इस ओवरब्रिज में क्या खास है? पूछने पर उन्होंने कहा कि यह 12

मीटर चौड़ा होगा। रेलवे स्टेशन के दोनो तरफ उतरेगा। पहली बात दोनो तरफ के लोग आसानी से इसे पार कर जा सकेंगे। इससे एक तो समय बचेगा। दूसरा दुर्घटना का अंदेशा नहीं रहेगा। अधिक चौड़ाई होने से इस फुट ओवरब्रिज पर स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के आयाम भी स्थापित किए जा सकते हैं। इस दौरान डीआरम में स्थानीय रेल अधिकारियों के साथ निर्माणाधीन परिसर का गहनता से निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने परिसर में ओपन बिजली तारों को अंडर ग्राउंड करवाने व रास्ते में जहां पेड़ हैं उन्हें नहीं काटने की सख्त हिदायत दी। उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि गंगापुरसिटी पुराना रेलवे स्टेशन है। इसे बहुत सी सौगात मिलने वाली है। राजस्थान हेरिटेज के लिए जाना जाता है। इस लिए हमने वर्तमान में चल रहे निर्माण कार्य में राजस्थन शिल्पकला को प्राथमिकता दी है। लोकल सामग्री का उपयोग कर रहे हैं। स्थानीय लोग इस कार्य में लगे हैं। जब स्टेशन का कार्य पूर्ण जाएगा तो यहां राजस्थान की स्थापत्य कला देखने को मिलेगी। उन्होंने कहा कि यह बहुत बड़ा काम है। समय लगता है। सिविल वर्क तेज रफ्तार से चल रहा है। अप्रैल 2026 तक निर्माण कार्य पूरा हो जाएगा। रेलवे लंबी प्लनिंग के साथ चल रहा है। आगामी सौ वर्षों तक भी निर्माण कार्य की चमक बरकरार रहेगी। महु कलां अंडरब्रिज को लेकर उन्होंने कहा कि का निर्माण कार्य अपरिहार्य कारणों से लंबे समय से रुका हुआ था। अब फिर कार्य शुरू कर दिया गया है। फरवरी तक इस का निर्माण कार्य पूरा कर दिया जाएग। इसके बाद लोगों को वाहनों को लाने ले जाने में सुविधा होगी। स्टेशन पर जल्द ही जंक्शन को बोर्ड लगाने के लिए भी कहा।

भारत पोर्टल के माध्यम से करना होगा आवेदन

बढ़ता राजस्थान

सवाई माधोपुर (नि.स.)। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा माय भारत इनिशिएटिव के अन्तर्गत देश के युवाओं को मेडिकल विभाग की गतिविधियों से रूबरू करवाने हेतु माय भारत पोर्टल पर एक्सपीरियंशियल लर्निंग प्रोग्राम हेतु आवेदन लिए जा रहे है। नेहरू युवा केंद्र के पूर्व राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक रजत भारद्वाज ने बताया की इच्छुक 15 से 29 वर्ष आयु के युवाओं को एक्सपेरेंशियल लर्निंग प्रोग्राम के तहत सामान्य चिकित्सालय सवाईमाधोपुर द्वारा 16 जनवरी, 2025 से लगभग एक वर्ष के समय में, युवा की समय सुविधानुसार 120 घंटे के एक्सपीरियंशियल लर्निंग प्रोग्राम के तहत विभागीय गतिविधियों से रूबरू कराया जाएगा! कार्यक्रम की अवधि 16 जनवरी 2025 से 15 जनवरी 2026 तक है। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं को माय भारत किट दी जाएगी एवं प्रशिक्षण उपरांत प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जावेगा। अधिक जानकारी के लिए युवा नेहरू युवा केंद्र सवाईमाधोपुर कार्यालय से संपर्क कर सकते है।

इन्टरशिप का हुआ समापन

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (कृष्णचन्द्र विजय)। केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में गुरूवार को एमजेएफ वेटेनरी कालेज चौमू 15 इन्टरशिप विद्यार्थियों की इन्टरशिप का समापन प्रोफेसर एवं ए के गहलोत पूर्व कुलपति राजूवास बीकानेर की अध्यक्षता में हुआ। इस दौरान संस्थान निदेशक डा. अरूण कुमार तोमर ने बताया कि संस्थान प्रदेश के विभिन्न वेटेनरी कालेज के पशु चिकित्सको को छोटे पशुओं पर इन्टरशिप कार्यक्रमो का आयोजन कर नए पशु चिकित्सको को नस्ल सुधार, पोषण स्वास्थ्य प्रजनन, चारा एवं प्रसार गतिविधियो की जानकारी देने के साथ साथ दैनिक क्रियाकलापो से अवगत कराता आ रहा है। इस माह की इन्टरशिप के समन्वयक डॉ. सुरेशचन्द शर्मा व डॉ. अरविन्द सोनी द्वारा किया गया। संस्थान के मीडिया प्रभारी डॉ. अमरसिंह मीणा ने बताया कि इस अवसर पर डॉ. रणधीर सिंह भट्ट, डॉ. एसएस मिश्रा, डॉ. जी गणेश सोनवाने, डॉ. अजय कुमार, डॉ. सत्यवीर सिंह एवं मुख्य वित्त अधिकारी राजकु मार मौजूद रहे।

पक्षी विला का लोकार्पण एवं भामाशाह सम्मान समारोह 24 को

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (नि.स.)। रोटरी क्लब मालपुरा ग्रीन की ओर से छतरेश्वर महादेव मन्दिर परिसर में नवनिर्मित पक्षी विला का लोकार्पण एवं भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन 24 दिसम्बर को दोपहर 2 बजे किया जाएगा। क्लब अध्यक्ष अमित विजय एवं सचिव नरेश काबरा ने बताया कि समारोह के दौरान क्लब की ओर से जन सहयोग से निर्मित 56 फुटे पक्षी विला का लोकार्पण करने के साथ साथ भामाशाहो का सम्मान भी किया जाएगा। क्लब के राकेश नेवटा ने बताया कि समारोह के दौरान क्षैत्र की दस राजकीय विद्यालयो व आंगनबाड़ी केन्द्रो के 205 जरूरतमंद बालको को ऊनी जर्सियो का वितरण भी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस समारोह के सम्मानीय अतिथि रोटरी इन्टरनेशनल के वर्ष 2024-25 के प्रान्तपाल राखी गुप्ता, वर्ष 2025-26 के जिला प्रान्तपाल प्रज्ञा मेहता, वर्ष 2025-26 के जिला प्रान्तपाल अरूण बगड़िया व रोश्री क्लब मालपुरा ग्रीन के वर्ष 2020-21 के अध्यक्ष सीताराम वैष्णव होगें।

मात्र एक उमीदवार ही रहा अनुपस्थित

रणथभौर: ईडीसी गाइड भर्ती का दूसरा चरण

बढ़ता राजस्थान

सवाईमाधोपुर (राकेश शर्मा)। रणथभौर बाघ परियोजना के लिए शीघ्र ही ईडीसी गाइड मिल सकेंगे। इसके लिए भर्ती का दूसरा चरण बुधवार से शुरू हो गया। उपवन संरक्षक (विस्थापन) रणबीरसिंह भण्डारी ने बताया कि ईडीसी श्रेणी के उमीदवारों को इंटरव्यू के लिए बुलाया गया है। इसी कड़ी में बुधवार ईडीसी श्रेणी के पुरुष उमीदवारों के क्रम संया 1 से 45 तक इंटरव्यू लिए गए। जिसमें एक उमीदवार अनुपस्थित रहा। अब गुरुवार को सभी 26 महिला उमीदवारों और दिव्यांग श्रेणी उमीदवारों के इंटरव्यू होगे।

106 पदों पर निकली थी भर्ती

हाल ही में रणथभौर बाघ परियोजना में 106 नेचर गाइडों की जगह निकाली गई थी। जिसमें 53 सीट रणथभौर से विस्थापित गांवों के ग्रामीणों के लिए, 31 सीट ईडीसी, 11 सीट वनकर्मियों के बेरोजगार आश्रितों के लिए, 11 सीट ईको सेसेटिव जोन श्रेणी के लिए आरक्षित है। वहीं वन्यजीवों के हमलों में मृतकों के आश्रितों के लिए अलग से सीटें निर्धारित की गई है। इसके लिए शैक्षणिक योग्यता 10वीं पास निर्धारित की गई थी। इसके लिए 100 रुपए फीस निर्धारित की गई थी। वन विभाग की ओर से पहले चरण में सभी उमीदवारों के दस्तावेज सत्यापन किया था। वन विभाग की ओर से ईडीसी श्रेणी में पुरुष वर्ग में 20 पदों के लिए 80 उमीदवारों को दस्तावेज सत्यापन के लिए बुलाया था।

मिड डे मील की कुकिंग कन्वर्जन राशि बढ़ाई, प्रति छात्र मिलेंगे 9.29 रूपए

बढ़ता राजस्थान

नटवाड़ा(नि.स.)। सरकारी विद्यालयो में कक्षा 1 से 8 तक के छात्र-छात्राओं को विद्यालय में दिए जाने वाले मिड-डे-मील की लागत में बढ़ोतरी की गई। महंगाई बढ़ने के साथ ही राजकीय स्कूलो में मिड-डे-मील बनाने की लागत में भी वृद्धि हुई थी। इस कारण विद्यालय प्रबंधन को मिड डे मील बनाने के लिए कच्चा सामान खरीदने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। कार्यालय आयुक्त मिड डे मील कार्यक्रम की ओर से आदेश जारी कर कुकिंग कन्वर्जन लागत मेँ वृद्धि की गई ।राजकीय विद्यालयों में मिड-डे-मील योजना के तहत कक्षा 1 से 8 तक के सभी विद्यार्थियों को प्रतिदिन मध्याह्न में भोजन दिया जाता है। इसको लेकर लंबे समय से कुकिंग कन्वर्जन राशि में बढ़ोतरी नहीं होने से बच्चों के खाने में उपयोग होने वाली सामग्री एवं फलों में कटौती की जा रही थी। आयुक्त मिड डे मील ने भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की ओर से पीएम पोषण योजना के 27 नवम्बर को जारी पत्र के हवाले से मिड-डे-मील की कुकिंग कन्वर्जन राशि में बढ़ोतरी का आदेश जारी किया है। इसमें बाल वाटिका और प्राथमिक विद्यालय में पुरानी दरें प्रति छात्र प्रतिदिन 5.45 रुपए थी जिसे बढ़ाकर 6.19 रुपए किया गया। इसी तरह उच्च प्राथमिक में प्रति छात्र 8.17 रुपए थी उसे बढ़ाकर 9.29 रूपए किया गया। मिड डे मील को खरीदने का कार्य संबंधित स्कूल का पोषाहार प्रभारी करता है। स्कूल की

एसडीएमसी की अनुशंसा के बाद सामान के बिल का भुगतान होता है। वहीं सरकार द्वारा कुक कम हेल्पर महिलाओं को निर्धारित प्रति कुक कम हेल्पर 2146 रूपए मानदेय मिलता है।

50 तक की संख्या पर एक कुक कम हेल्पर की नियुक्ति

सरकारी स्कूलों में 1 से 50 तक छात्र तक एक कुक कम हेल्पर होता है। वही 51 से 150 तक दो, 151 से 300 तक तीन, 301 से 500 तक 4 501 से 700 तक 5 और 1000 संख्या पर 6 को कुक कम हेल्पर लगाए जा सकते हैं। वही 1000 छात्रो से अधिक अधिकतम 7 हेल्पर लगा सकते हैं।

डॉ शिवानी हुई राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित

बढ़ता राजस्थान

सवाईमाधोपुर (राकेश शर्मा)। उदयपुर में भारतीय होम्योपैथी कॉलेज की तरफ से 15 दिसम्बर 24 रविवार को आयोजित राष्ट्रीय स्तर की कॉन्फ्रेंस में रणथंभौर रोड स्थित श्री साई फिजियोथेरेपी एंड होम्योपैथी क्लिनिक की वरिष्ठ होम्योपैथी चिकित्सक डॉ शिवानी शर्मा को महिला स्वास्थ्य में विशेष कार्य करने के साथ ही उन्हें ऐस. जी .एफ ब्यूटी प्रोडक्ट की (फाउंडर) महिला आंत्रप्रन्योर के रूप में उभरने पर विशेष प्रतिभा सम्मान अवार्ड से सम्मानित किया गया । मिली जानकारी के अनुसार यह सम्मान पाने वाली डॉ0 शिवानी सवाई माधोपुर से पहली महिला होम्योपैथी चिकित्सक हैं। सम्मान समारोह के मौके वरिष्ठतम चिकित्सक डॉ जितेंद्र चौधरी, डॉ यूऐस जुरैल, डॉ.रोहित भारतीय, डॉ. सुशील गोस्वामी आदि उपस्थित रहे। डॉक्टर शिवानी ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर की इस कॉन्फ्रेंस में, सवाई माधोपुर, जयपुर, जोधपुर , दिल्ली, भरतपुर, कोटा, अहमदाबाद, भोपाल, हैदराबाद आदि जगह से चिकित्सकों ने भाग लिया ।

25 छात्राओ को मिली साइकिले

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (नि.स.)। सदरपुरा रोड स्थित स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालय की 25 छात्राओं को साइकिले वितरित की गई। गुरूवार को प्राचार्य हंसराज जाट ने साइकिले वितरित की। वहीं वितरण प्रभारी संदीप इन्दोरिया ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा बालिकाओ के आसानी से विद्यालय आने जाने को लेकर साइकिले वितरित की जा रही है। प्राचार्य जाट ने साइकिल प्राप्त करने वाली छात्राओं से आव्हान करते हुए कहा कि साइकिलो का उपयोग विद्यालय में आने जाने में कर समय की बचत करे। साथ ही बचे समय का सदुपयोग अपने अध्ययन कार्य में कर अपना भविष्य उज्जवल बनाऐं। इस दौरान शिक्षक अरविन्द त्रिपाठी, विनीता चौधरी, अदिति गोयल, तजेश्वरी सरावता, श्रवणलाल सहित कई अभिभावक मौजुद रहे। वहीं साइकिले पाकर छात्राओं के चेहरे खिलखिला उठे।

दो दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ समापन

साइबर अपराधों की रोकथाम को लेकर पुलिस कार्मिकों को दिया प्रशिक्षण

बढ़ता राजस्थान

सवाईमाधोपुर (राकेश शर्मा)। जिले में साइबर अपराधों की बढ़ती घटनाओं को लेकर पुलिस प्रशासन की ओर से पुलिस सभागार में दो दिवसीय प्रशिक्षण का समापन हुआ। साइबर प्रहरी प्रशिक्षण अभियान के तहत थानों में साइबर एवं सोशल मीडिया से सबंधित कार्य करने वाले कार्मिकों एवं अनुसंधान अधिकारियों का प्रशिक्षण हुआ। इसमें सवाईमाधोपुर, करौली एवं गंगापुर सिटी के 50 पुलिस कार्मिकों को साईबर अपराधों की

पहचान, जांच एवं उनकी रोकथाम तथा अपराधियों को ट्रेस आउट करने समेत कई बिन्दुओं पर बारीकी से प्रशिक्षण दिया। इस दौरान सोशल मीडिया जैसे यू-ट्यूब, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम, वाट्सएप पर हो रहे अपराधों की पहचान, जांच और निवारण, मोबाइल फोरेंसिक, क्रिप्टोकरेंसी, ब्लेक चैन अपराधों की जांच, ई-मेल फ्रॉड के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर अकादमी के प्रशिक्षक रमेश शर्मा, साइबर एक्सपर्ट एवं पुलिस प्रशिक्षक अक्षय उपाध्याय व लक्ष्य शर्मा ने प्रशिक्षण दिया।

पिकअप का टायर फटने के दौरान हुआ था हादसा

पुलिस प्रशासन की समझाइश पर 18 घंटे बाद उठाया शव

बढ़ता राजस्थान

सवाईमाधोपुर (राकेश शर्मा)। खण्डार क्षेत्र में बालेर खण्डार मार्ग स्टेट हाइवे-123 पर मंगलवार शाम पिकअप का टायर फटने के दौरान बाइक पिकअप हादसे में मृतक हरिमोहन गुर्जर निवासी बिचपुरी गुजरान के परिजनों ने पुलिस प्रशासन की ओर से मांगें मानने पर 18 घंटे बाद गत दिवस दोपहर बाद सीएचसी से शव उठाया। इस पर पुलिस ने

पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिया। मृतक के परिजनों ने बताया कि परिवार में मृतक अकेला कमाने वाला था। ऐसे में मृतक आश्रितों से सड़क दुर्घटना बीमा योजना के तहत लाभ देने, मृतक की पत्नी को विधवा पेंशन योजना स्वीकृत कराने, 18 वर्ष की आयु से कम तीन बालकों को पालनहार योजना का लाभ दिलाने, विद्युत निगम की ओर से बकाया बिजली का बिल माफ कर उसका समाधान करने की मांग की। इस पर थानाधिकारी गिर्राज प्रसाद वर्मा ने उनसे मांगों के निराकरण कराने का आश्वासन दिया, लेकिन वे नहीं माने। परिजन मौके पर ही पूर्व प्रधान गिर्राज गुर्जर व एसडीएम को बुलाने की बात पर अड़ गए। सूचना पर मौके पर पहुंचे तहसीलदार पुष्कर सिंह व पूर्व प्रधान गुर्जर ने मृतक के परिजनों से समझाइश की। लेकिन वह नहीं माने। इस पर पूर्व प्रधान ने एसडीएम दामोदर सिंह को फोन कर वस्तुस्थिति के बारे में बताया। इस पर तहसीलदार की ओर से सरकारी स्तर पर उच्चाधिकारियों से वार्ता कर सभी मांगों का समाधान करने का आश्वासन दिया। इस पर दोपहर करीब एक बजे शव लेने को राजी हुए। इस दौरान देव सेना जिलाध्यक्ष दीपक सिंह गुर्जर, किसान संघ अध्यक्ष बद्रीलाल गुर्जर, , पूर्व सरपंच रामू गुर्जर आदि मौजूद थे।

कार्यवाहक सभापति ने संभाला पदभार

मेघा का लक्ष्य: शहर का सौन्दर्यकरण तथा विकास रहेगी पहली प्राथमिकता

बढ़ता राजस्थान

सवाईमाधोपुर (राकेश शर्मा)। दो माह के लिए नियुक्त कार्यवाहक नगर परिषद सभापति मेघा का लक्ष्य शहर का सौन्दर्यकरण तथा विकास पहली प्राथमिकता रहेगी । यह बात मेघा वर्मा (जिला मुख्यालय पर वार्ड नं. 23 की पार्षद) मेघा वर्मा ने गत दिवस कार्यवाहक सभापति का कार्यभार संभालने के दौरान कही। गत दिवस दोपहर को मेघा वर्मा ने

परिजनों और भाजपा कार्यकर्ताओं की मौजूदगी में पूजा-अर्चना कर पदभार ग्रहण किया। उन्होंने कहा कि शहर के सौन्दर्यरण, साफ-सफाई, विकास कार्र्यो की पहली प्राथमिकता रहेगी। नगर परिषद क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित करने की कोशिश रहेगी। वहीं पर्यटन की दृष्टि से भी नगर परिषद क्षेत्र को समृद्ध बनाने का भरसक प्रयास किए जाएंगे। इस मौके पर विभिन्न वार्ड पार्षदों और भाजपा के कार्यकर्ताओं ने उन्हें फूल माला पहनाकर अभिनंदन किया। सभापति कार्यालय में विधिवत रूप से आयुक्त पंकज मीणा ने कार्यभार ग्रहण करवाने की औपचारिकताओं को अंजाम दिया।

अतिक्रमणकारियों के विरोध में आए ग्रामीण

चरागाह भूमि पर अवैध रूप से किया जा रहा बजरी का भण्डारण

बढ़ता राजस्थान

सवाईमाधोपुर (राकेश शर्मा)। मलारना डूंगर क्षेत्र में बनास नदी में अवैध अतिक्रमण व अवैध खनन करने के बाद अब ग्राम पंचायत बिच्छीदौना में गोचर भूमि पर अतिक्रमण कर अवैध बजरी भंडारण करने का मामला सामने आया है। इसे लेकर ग्रामीणों ने अतिक्रमियों को नामजद करते हुए तहसीलदार को लिखित शिकायत दी है। शिकायत के बाद भी प्रशासन ने कोई कार्रवाई नहीं की। बिच्छीदौना निवासी बलराम मीना सहित अन्य ग्रामीणों ने बताया कि बिच्छीदौना पंचायत में राजस्व रिकार्ड में चरागाह भूमि है। गांव के कुछ लोगों ने मुख्य सड़क के पास इस भूमि पर अतिक्रमण कर रखा है। इसमें बजरी का अवैध भंडारण किया हुआ है। यह लोग इसमें जेसीबी मशीन लगाकर वाहनों में बजरी भरते हैं। ग्रामीण विरोध करते हैं तो यह लोग झगड़ा करने पर आमादा रहते हैं।

अतिक्रमियों में सरकारी कार्मिक भी शामिल होने की बात कही गई है। ग्रामीणों ने बताया कि इस संबंध में पूर्व में भी कई बार राजस्व अधिकारियों को लिखित में शिकायत दी गई, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई। इससे अतिक्रमियों के हौसले बुलंद हैं।

पंचायत भी है जिम्मेदार

चरागाह भूमि पर अतिक्रमण के लिए ग्राम पंचायत भी जिम्मेदार है। हमें एक दिन पहले ही शिकायत मिली है। पटवारी व गिरदावर से तथ्यात्मक रिपोर्ट मांगी है। नियमानुसार कार्रवाई करेंगे।

संतोष कुमार शर्मा, तहसीलदार, मलारना डूंगर

निशुल्क नेत्र जांच शिविर में 168 रोगियों ने उठाया लाभ

बढ़ता राजस्थान

भुसावर (यतेन्द्र पाण्डेय)। भारत विकास परिषद शाखा एवं जिला आध्यता निवारण समिति के सहयोग से शंकर आई हॉस्पिटल जयपुर के चिकित्सकों द्वारा स्थानीय राधा कृष्ण धर्मशाला में निशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन कर 168 रोगियों की नेत्र जांच किए गए। कस्बे के प्रकाश चन्द मित्तल की स्मृति में आयोजित होने वाले बारे में निशुल्क शिविर में मोतियाबिंद जांच एवं नेत्र लेंस प्रत्यारोपण सिविल का आयोजन शंकर आई हॉस्पिटल जयपुर की चिकित्सक डॉक्टर सीदा की टीम द्वारा 40 वर्ष या उससे अधिक उम्र के कुल 168 रोगियों की जांच कर 87 रोगियों का आपरेशन के लिए चयन किया गया। चयनित को आधुनिक तकनीक द्वारा शंकरा आई हॉस्पिटल जयपुर में नि:शुल्क मोतियाबिन्द आपरेशन किया जाएगा। शिविर प्रारंभ से पूर्वर डॉ.. सीदा एवं शाखा संरक्षक देवकीनंदन सोनी व चंद्रप्रकाश आर्य द्वारा भारत माता व स्वामी विवेकानंद की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।शिविर में शाखा के कार्यकर्ता राजेश गोयल, हेमन्त पाण्डेय, राहुल सिंघल, हुकमसिंह सैनी, ताराचंद गोयल, रोहित सिंघल, शेरसिंह सैनी, विजय अग्रवाल, बृजेश जिन्दल, निक्कू सोनी, रमेश गर्ग, आदि का विशेष सहयोग रहा।

बयाना में लूट ओर फायरिंग का आरोपी गिरफ्तार: गैस एजेंसी ड्राइवर से की थी मारपीट

बढ़ता राजस्थान

भरतपुर/बयाना (सत्यप्रकाश अग्रवाल)। पुलिस सर्किल के गढ़ी बाजना थाना इलाके में 5 महीने पहले गैस एजेंसी के पिकअप ड्राइवर और हेल्परों से मारपीट कर 58 हजार की नकदी लूटने और फायरिंग के मामले में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस अब आरोपी को कोर्ट में पेश करेगी। गिरफ्तार आरोपी दीपक पुत्र उदयभान गुर्जर गढ़ी बाजना थाना इलाके के गांव तरसूमा का रहने वाला है।

राजाराम गुर्जर ने बताया- गुरुवार को एक आरोपी दीपक (19) पुत्र उदयभान गुर्जर को गिरफ्तार किया गया है, जिसे अब कोर्ट में पेश किया जाएगा। गढ़ीबाजना थाना के एसआई राजाराम गुर्जर ने बताया कि 17 जुलाई 2024 को महमदपुरा स्थित गैस एजेंसी की पिकअप सिलेंडर सप्लाई कर बयाना- बसेड़ी स्टेट हाईवे से होकर वापस लौट रही थी। इसी दौरान दोपहर करीब 3.45 बजे नौधान की पुलिया के पास तरसूमा निवासी दीपक, विकास और चंद्रभान ने गैस सिलेंडर सप्लाई की पिकअप को बंदूक और कट्टे दिखाकर रोक दिया। आरोपियों ने बंदूक से फायर किया, जिसकी गोली पिकअप के टायर में लगी और टायर फट गया।

इसके बाद बदमाशों ने ड्राइवर शिवसिंह और हेल्पर मलखान व सचिन के साथ बंदूक की बटों से मारपीट कर सिलेंडर सप्लाई से मिले 58 हजार 220 रुपयों को छीनकर फरार हो गए। घटना को लेकर गैस एजेंसी संचालक मानसिंह एडवोकेट ने मामला दर्ज कराया था।

राजस्थान अरबन डवलपमेन्ट जेंडर एक्सपर्ट ने जयशंकर टाईगर क्लब के नेशनल खिलाड़ियों का किया उत्साहवर्धन

बढ़ता राजस्थान

भरतपुर (नि.स.)। किला स्थित टाउन हॉल का औचक निरीक्षण के दौरान राजस्थान अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट प्रोजेक्ट जेंडर एक्सपर्ट किरणजीत संधू जयपुर ने जयशंकर टाईगर जूडो कराटे क्लब के राष्ट्रीय स्तरीय खिलाड़ियों का हौसला अफजाई कर भरतपुर संभाग के सबसे कम उम्र के ताइक्वांडो ब्लैक बेल्ट प्राप्त खिलाड़ी ऐश्वर्य शर्मा, राम्या शर्मा एवं भरतपुर की पहली महिला कराते ब्लैक बेल्ट नेहा शर्मा का उत्साहवर्धन कर खिलाड़ियों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

जयशंकर टाईगर क्लब के सचिव पीयूष जयशंकर टाईगर ने बताया कि क्लब छोटे-छोटे छात्र-छात्राओं को गत 40 वर्षों से निशुल्क प्रशिक्षण देता आ रहा है एवं क्लब के खिलाड़ियों ने प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपने प्रदर्शन से राजस्थान एवं भरतपुर का नाम रोशन किया है।

जिला स्तरीय जनसुनवाई आयोजित, 170 व्यक्तियों ने दी परिवेदनाएं, आमजन की परिवेदनाओं का त्वरित निस्तारण करें - एडीएम प्रथम

बढ़ता राजस्थान

अलवर (का.स.)। त्रि-स्तरीय जनसुनवाई व्यवस्था के तहत अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रथम मुकेश कायथवाल की अध्यक्षता में गुरूवार को मिनी सचिवालय सभागार में जिला स्तरीय जनसुनवाई आयोजित हुई। अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रथम ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि प्रो-एक्टिव एवं संवेदनशील रहकर जनसुनवाई व सम्पर्क पोर्टल के माध्यम से आने वाली परिवेदनाओं का गुणवत्तापूर्ण त्वरित निराकरण करे। उन्होंने कहा कि परिवेदनाओं के निस्तारण में फरियादियों की संतुष्टि स्तर में इजाफा करे। उन्होंने कहा कि अपने कार्यालय में नियमित जनसुनवाई करें। जनसुनवाई के दौरान फरियादी को ससम्मान कुर्सी पर बैठाकर एडीएम प्रथम ने उनकी परिवेदनाओं को सुना। जनसुनवाई में सभी उपखण्ड स्तरीय

अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े। एडीएम प्रथम ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबंधित अधिकारियों को परिवेदनाओं के त्वरित निस्तारण के निर्देश दिये।

ये रही प्रमुख परिवेदनाएंः-

अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रथम के समक्ष जिलेभर से आए 170 फरियादियों ने अपनी परिवेदना प्रस्तुत की जिनमें मुख्य रूप से यूआईटी, नगर निगम, विद्युत, जलदाय, राजस्व, पुलिस, चिकित्सा, पंचायतीराज, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, श्रम विभाग, रसद विभाग आदि की परिवेदनाएं प्रस्तुत की गई जिनमें अलवर की गुप्ता कॉलोनी मूंगस्का में नाली जुडवाने, स्कीम नं. 8 के वार्ड 36 में साफ-सफाई के संबंध में परिवेदना प्राप्त होने पर उन्होंने नगर निगम आयुक्त को निर्देश दिये कि शहर की साफ-सफाई व्यवस्था की प्रभावी मॉनिटरिंग करे। खराब रोड लाइटों को तुरन्त दुरूस्त करावे एवं प्रशासनिक अधिकारियों व आमजन से प्राप्त फीडबैक के आधार पर तुरन्त साफ-सफाई की व्यवस्था कराई जावे।इसी प्रकार केशव नगर, अपना घर शालीमार, स्वर्ग रोड मामा ट्रांसपोर्ट कम्पनी के सामने से अतिक्रमण हटवाने, स्कीम नं. 8 गांधी नगर में भूखण्डों के विकास कार्य करवाने, ग्राम चांदोली में अवैध निर्माण रोकने, घोडाफेर चौराहे के पास भूमि का सीमांकन कराने, शिव कॉलोनी तिजारा फाटक, संजय नगर व मूंगस्का में कच्ची बस्ती के पट्टे के संबंध में परिवेदना प्राप्त होने पर उन्होंने यूआईटी सचिव को निर्देश दिये कि सभी परिवेदनाओं का गुणवत्ता के साथ समयबद्ध रूप में निस्तारण करावे। जलदाय विभाग से संबंधित परिवेदनाओं में इंदिरा कॉलोनी व ग्राम शाहपुरा में फरियादी द्वारा नल कनेक्शन कराने, स्कीम 8 में नई पाइप लाइन डलवाने, शिवाजी पार्क, मीणा धर्मशाला नयाबास, गणेश नगर व विकास कॉलोनी घोडाफेर में पेयजल समस्या का समाधान कराने, रामनगर कॉलोनी व नयाबास में पानी का अवैध कनेक्शन हटवाने, लखण्डा वाला कुआ में श्री फेस बोरिंग कराने, विश्वकर्मा कॉलोनी में अमृत जल योजना के तहत जलापूर्ति कराने की परिवेदनाएं प्रस्तुत होने पर एडीएम प्रथम ने जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियन्ता को निर्देश दिये कि जिले में पेयजल की सुचारू आपूर्ति सुनिश्चित करावे तथा आवश्यकतानुसार नई बोरिंगों के प्रस्ताव तैयार करें एवं स्वीकृत बोरिंगों के कार्य में गति लाकर उन्हें यथाशीघ्र पूर्ण करावे।

इस दौरान एडीएम शहर श्रीमती बीना महावर, एडीएम द्वितीय योगेश डागुर, यूआईटी की सचिव सुश्री धीगदे स्नेहल नाना, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण श्रीमती प्रियंका, जिला परिषद के सीईओ आर.एस. चौहान, नगर निगम आयुक्त जितेन्द्र सिंह नरूका, डीटीओ सुरेश यादव, एसडीएम अलवर जुईकर प्रतीक चन्द्रशेखर, विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियन्ता सुधीर पाण्डे, पीडब्ल्यूडी के अधीक्षण अभियन्ता भूरी सिंह सहित संबंधित अधिकारी एवं वीसी के माध्यम से सभी उपखण्ड अधिकारी एवं विकास अधिकारी जुडे।

रेलवे के डीआरएम ने अमृत योजना के तहत बयाना जंक्शन रेलवे स्टेशन के निर्माण कार्यों का निरीक्षण कर दिए आवश्यक निर्देश

बढ़ता राजस्थान

भरतपुर/बयाना (सत्यप्रकाश अग्रवाल)। कोटा रेल मंडल के डीआरएम मनीष तिवारी ने आज गुरुवार को बयाना जंक्शन रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत योजना के तहत चल रहे निर्माण व विकास कार्यों का निरीक्षण कर इन निर्माण कार्यों में गति लाने व गुणवत्ता का खास ध्यान रखने के विशेष निर्देश दिए।

रेलवे के डीआरएम विशेष सैलून ट्रेन से कोटा से बयाना पहुंचे थे। उनके साथ रेलवे के विभिन्न विभागों के अन्य उच्च अधिकारी भी आए थे।

आपको बता दें अमृत भारत योजना के तहत बयाना रेलवे स्टेशन पर कई करोड़ रुपए की लागत से विभिन्न निर्माण व विकास कार्यों एवं रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाएं बढ़ाने व रेलवे

स्टेशन का स्वरूप बदलने और सौंदर्य करण करने आदि के कार्य काफी समय से धीमी गति से चल रहे हैं। जिसके कारण रेलवे स्टेशन पर आने वाले यात्रियों व अन्य लोगों को भी काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। किंतु रेलवे के संबंधित विभागों के अधिकारियों का इस ओर कोई ध्यान नहीं है । उनसे जब नागरिकों की ओर से कई बार शिकायत की गई तो गैर जिम्मेदारी पूर्ण तरीके से अनसुना कर दिया गया। आज जब मीडिया कर्मियों ने इस बात को लेकर रेलवे के डीआरएम को अवगत कराते हुए सवाल उठाया तो उन्होंने बताया कि कार्य को गति देने और गुणवत्ता के अनुरूप कार्य करने के लिए संबंधित अधिकारियों व ठेकेदार को निर्देशित किया गया है। अब देखना यह है कि डीआरएम के निर्देशों का संबंधित अधिकारियों व ठेकेदार पर कितना असर होता है और कार्य कितनी गति पकड़ पाते हैं। या फिर यूं ही मनमानी और घालमेल का खेल चलता रहेगा। इसी तरह बयाना स्टेशन पर नई ट्रेन के स्टॉपेज के सवाल पर डीआरएम ने कहा कि अभी तक नई ट्रेन के स्टॉपेज को लेकर कोई डिमांड नहीं मिली है अगर डिमांड मिलती है तो उस पर विचार किया जाएगा। हालांकि यह अलग बात है कि करीब 7 दिन पहले बीजेपी की पूर्व सांसद रंजीता कोली ने दिल्ली में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात के दौरान बयाना स्टेशन पर कोटा दिल्ली सोगरिया एक्सप्रेस ट्रेन के ठहराव की मांग की थी डीआरएम के बयाना आगमन को लेकर आज बयाना रेलवे स्टेशन पर तमाम संबंधित अधिकारी व कर्मचारी विशेष चौकस और ड्रेस कोड में नजर आए। वहीं स्टेशन की भी काफी साफ सफाई व धुलाई कराई गई।

व्यापारी से लूट के 10 10 हजार के दो इनामी गिरफ्तार

व्यापारी के पैर में गोली मारकर लूटे थे 3.75 लाख

बढ़ता राजस्थान

भुसावर (यतेन्द्र पाण्डेय)। भुसावर पुलिस उपाधीक्षक अधीन वैर थाना पुलिस ने 10-10 हजार के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। उक्त दोनों आरोपियों ने 2 साल पूर्व व्यापारी से 375 लाख रुपए की लूट की थी व्यापारी द्वारा विरोध करने पर उसके पैर में गोली मारी थी। थाना अधिकारी वेयर जनक सिंह ने बतलाया कि 2 अप्रैल 2023 को बयाना निवासी विनोद कुमार ने प्राथमिक की दर्ज कराई थी कि विनोद का साबुन का व्यापार है एवं उसके दोस्त हरि ओम का घी का व्यापार है दोनों भुसावर के दुकानदारों से उगाई करके आ रहे थे मेगा हाईवे के जगजीतपुर गांव पहुंचने पर उनके पीछे से तीन बाइक सवार आए

बाइक सवार बदमाशों ने उनकी बाइक को लात मारी जिससे हरिओम और विनोद गिर गए दोनों व्यापारियों के पैसे एक बैग में विनोद के पास थे विनोद ने बाइक सवार बदमाशों का विरोध किया एक बदमाश ने विनोद के पैर में गोली मार दी हरिओम से मारपीट करते हुए विनोद से बैग छीन लिया घटना के बाद से आरोपी फरार चल रहे थे जिला पुलिस अधीक्षक द्वारा दोनों पर 10 -10 हजार का इनाम घोषित किया हुआ था।

अवैध खनन के खिलाफ ग्रामीणों का धरना

पूर्व विधायक पर चारागाह से खनन करने का आरोप

बढ़ता राजस्थान

भुसावर (यतेन्द्र पाण्डेय)। विधानसभा क्षेत्र वैर मुख्यालय के निकटवर्ती भौडा गाँव में पूर्व विधायक अतर सिंह भडाना खनन लीज के पास स्थित चारागाह की भूमि पर अवैध खनन किए जाने के विरोध में ग्रामीणों द्वारा धरना शुरू किया गया है। ग्रामीणों का आरोप है कि भडाना द्वारा चारागाह भूमि पर अवैध कब्जा कर खनन किया जा रहा है जिससे आसपास के क्षेत्र में समस्या उत्पन्न हो रही है गत दिन ग्रामीणों ने उपखंड अधिकारी सचिन यादव को ज्ञापन सौंपते हुए अवैध खनन और ब्लास्टिंग पर रोकथाम लगाने की मांग की थी। मांग पत्र में धरने की बात का भी खुलासा किया गया था ,गुरुवार से ग्रामीणों ने धरना शुरू कर दिया है।

बयाना से भरतपुर जाने वाली बसों के फेरे में कटौतीः प्राइवेट बसों में सफर करने को मजबूर हो रहे यात्री

बस स्टैंड प्रभारी बोले उच्च अधिकारियों को दे दी गई है जानकारी

बढ़ता राजस्थान

भरतपुर/बयाना (सत्यप्रकाश अग्रवाल)। रोडवेज प्रशासन की अनदेखी के कारण यात्रियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। रोडवेज की ओर से बसों के संचालन में कटौती की गई है, जिसके कारण बयाना से भरतपुर के लिए शाम 4 बजे के बाद रोडवेज बस सेवा उपलब्ध नहीं है। इससे 4 बजे के बाद जिला मुख्यालय जाने वाले यात्रियों को प्राइवेट और डग्गेमार वाहनों का सहारा लेना पड़ता है। सबसे अधिक परेशानी अप डाउन करने वाले डेली पैसेंजर्स को हो रही है।

जानकारी के अनुसार, हाल ही में रोडवेज प्रशासन ने बयाना से

भरतपुर के बीच चलने वाली बसों की संख्या में कटौती की है, जिसके कारण बयाना से भरतपुर जाने वाली आखिरी बस सेवा शाम 4 बजे उपलब्ध होती है। उसके बाद रोडवेज की कोई बस भरतपुर नहीं जाती। व्यापार महासंघ के अध्यक्ष विनोद सिंघल ने कहा- भरतपुर रोडवेज प्रशासन के अधिकारी बयाना के नागरिकों के साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार कर रहे हैं, जिसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने बयाना से भरतपुर के लिए रोडवेज बसों की संख्या बढ़ाने और आखिरी बस का समय शाम करीब 7 बजे तक बढ़ाने की मांग की। यात्रियों का कहना है कि पहले शाम 6 बजे भरतपुर के लिए आखिरी बस जाती थी, जिसे बंद कर दिया गया है। यात्रियों का यह भी कहना है कि बस स्टैंड का कार्यालय भी बेहाल है। कर्मचारियों की कमी के कारण एक ही व्यक्ति को टिकट काटने और पूछताछ केंद्र की जिम्मेदारी भी संभालनी पड़ती है, जबकि बयाना जिला का सबसे बड़ा उपखंड है। ऐसे में रोडवेज बस स्टैंड कार्यालय में कम से कम तीन कर्मचारियों की ड्यूटी होनी चाहिए। रोडवेज बस स्टैंड प्रभारी ईश्वर चंद्र शर्मा ने बताया कि बसों के फेरे बढ़ाने के संबंध में निर्णय लेने का अधिकार उच्च अधिकारियों के पास है। यात्रियों की मांग उच्च अधिकारियों तक पहुंचा दी जाएगी।

जिलेभर में हुआ सुशासन सप्ताह का शुभारंभ

बढ़ता राजस्थान

भरतपुर (नि.स.)। ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक शिकायतों के निवारण और सेवा वितरण को बेहतर बनाने के लिए जिलेभर में गुरूवार को सुशासन सप्ताह का शुभारंभ हुआ। जिला कलेक्टर डीग उत्सव कौशल ने वर्चुअल जुडकर सुशासन सप्ताह का शुभारंभ किया। जिलाधिकारी कौशल ने पंचायत समिति सभागार में आमजन की सुनवाई की। उन्होंने कहा कि संपर्क पोर्टल पर लंबित प्रकरणों का भी अधिकारी सप्ताह के दौरान ही निस्तारण किया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि समस्याओं के समाधान के लिए जिला एवं ब्लॉक स्तर के अधिकारी बेहतर समन्वय बनाएं, ताकि समस्याओं के समाधान में विलंब नहीं हो। अभियान जमीनी स्तर पर गवर्नेंस को मजबूत करने और ग्रामीण समुदायों तक विकास पहुंचाने में मददगार होगा।

नगर में लंबे समय से भटक रहे समुदाय को मिली पहचान की सौगात- कस्बा नगर, डीग में लगभग 25-30 वर्षों से निवासरत घुमन्तु, अर्द्धघुमन्तु एवं विमुक्त जातियों के परिवार अपनी पहचान के लिए भटक रहे थे, जिनके पास जाति प्रमाण पत्र, मूल निवास प्रमाण पत्र और राशन कार्ड जैसे आधारभूत दस्तावेज नहीं होने के कारण इनको सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा था और ना ही ये कोई पहचान संबंधी दस्तावेज पेश कर पाते थे। राज्य सरकार द्वारा इन समुदायों के लिए सहायता शिविर आयोजित किए गए थे, जिनमें इनसे प्रार्थना पत्र प्राप्त किए गए तथा सुशासन सप्ताह के प्रथम दिवस पर आयोजित प्रशासन गांव की ओर अभियान के अंतर्गत गाडिया लोहार जाति के 25 जाति एवं मूल निवास प्रमाण पत्र, 07 जन्म प्रमाण पत्र तथा 02 राशन कार्ड जारी किए गए। बावरिया जाति के 14 जाति एवं मूल निवास प्रमाण पत्र, 23 जन्म प्रमाण पत्र तथा 08 राशन कार्ड जारी किए गए तथा बावरी जाति के 06 जाति एवं मूल निवास प्रमाण पत्र, 13 जन्म प्रमाण पत्र तथा 05 नए राशन कार्ड जारी किए गए। इन समस्त घुमन्तु समुदाय के लोगों के द्वारा शिविर के अंतर्गत सरकार एवं प्रशासन के द्वारा 'अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति' को नई पहचान दिलाने पर प्रसन्नता जाहिर की गई ।

नैनोडीएपी का छिड़काव दाल वाली फसलों को लाभकारी

बढ़ता राजस्थान

भुसावर (यतेन्द्र पाण्डेय)। नैनोयूरिया जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में किसानों का मददगार आधुनिक उर्वरक है ,सटीक और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने वाला नैनोयूरिया पोषक तत्व प्रबंधन का बेहतर उपाय है नैनोयूरिया में नैनोस्केल नाइट्रोजन कणों का आकर अति छोटा अधिक पृष्ठ क्षेत्रफल और कणों की संख्या अधिक होती है यह कहना है कृषि महाविद्यालय के डीन डॉक्टर उदयभान सिंह का।डॉक्टर सिंह नैनोयूरिया के महत्व विषय प्रायोजित कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। डॉक्टर सिंह ने बताया कि नैनोयूरिया के कण आसानी से कोशिका भित्ति या पेट रंध्र चित्रों के माध्यम से प्रवेश कर सकते हैं इसलिए नैनोयूरिया तरल के पर्णीय उपयोग से अधिक कुशल नाइट्रोजन अवशोषण बेहतर वृद्धि तथा अनाज व फलों की गुणवत्ता बेहतर होती है अन्य वक्ताओं ने नैनोयूरिया पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गेहूं की फसल में कल्ला बनने की अवस्था में 4 मिलीलीटर पानी में नैनोयूरिया के पानीका छिडकाव लाभकारी है, नैनोडीएपी का छिड़काव दाल वाली फसलों के लिए विशेष लाभकारी है इस अवसर पर डॉ राहुल कुमार डॉ विनोद भटेश्वर सहित समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

मेडिकल कॉलेज में फैकल्टी एवं छात्र छात्राओं का किया प्रकृति परीक्षण

बढ़ता राजस्थान

भरतपुर (नि.स.)। आयुष मंत्रालय द्वारा आमजन की प्रकृति परीक्षण के लिए शुरू किए गये राष्ट्र व्यापी देश का प्रकृति परीक्षण अभियान के अंतर्गत श्री जगन्नाथ पहाड़िया राजकीय मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ तरुण लाल के निर्देशन में राजकीय आयुर्वेद एवं योग प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय की टीम द्वारा प्राचार्य एवं अधीक्षक डॉ रीना खंडेलवाल उपाधीक्षक डॉ चन्द्र प्रकाश दीक्षित की मौजूदगी में फैकल्टी एवं एम बी बी एस की पढ़ाई कर रहे छात्र छात्राओं का प्रकृति परीक्षण किया गया। डॉ चन्द्र प्रकाश दीक्षित ने बताया कि आयुष मंत्रालय के दिशानिर्देश में 26 नवंबर से 25 दिसंबर तक चलने वाले प्रकृति परीक्षण अभियान में अधिक से अधिक लोगों का प्रकृति परीक्षण किए जाने के लिए जिले में संचालित कालेज, मिनी सचिवालय, न्यायालय परिसर, विभिन्न

कार्यालयों में आयुर्वेद महाविद्यालय के शैक्षणिक अधिकारियों, मेडिकल आफिसर एवं बी ए एम एस में अध्ययनरत छात्र छात्राओं की टीमों द्वारा प्रकृति परीक्षण कर अच्छे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जा रहा है। साथ ही लोगों को प्रकृति परीक्षण के महत्व एवं उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी भी दी जा रही है। प्राचार्य एवं अधीक्षक डॉ रीना खंडेलवाल ने बताया कि प्रकृति परीक्षण से चिकित्सा में आसानी के बारे में जानकारी देते हुए आहार विहार जीवनशैली एवं मानसिक परेशानी से बचने के उपायों में बचाब के प्रयासों में लाभदायक होने की बात कही। डॉ मोहन स्वरूप शर्मा की टीम में शामिल संदीप धाकड़ पायल अग्रवाल मधु सैनी सुमालिया खान पायल यादव मुक्ति वोलिया आदि छात्र छात्राओं द्वारा एनाटॉमी विभागाध्यक्ष डॉ राम कुमार सिंघल डॉ बीरभान सिंह लेखाधिकारी प्रशांत कुमार अतिरिक्त लेखाधिकारी ओमवीर सिंह मोहित शर्मा राजीव सरीन के सहयोग द्वारा पांच सौ से अधिक अधिकारी कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं का प्रकृति परीक्षण किया गया।

जिला स्तरीय जनसुनवाई : लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने वीसी के माध्यम से सुनी आमजन की समस्याएं

बढ़ता राजस्थान

कोटा, (का.स.)। जिला स्तरीय जनसुनवाई में माननीय लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़कर जिलेभर से आए परिवादियों की समस्याएं सुनीं और उनके समाधान के लिए आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई का उद्देश्य केवल समस्याओं को सुनना नहीं, बल्कि उनका समयबद्ध और प्रभावी समाधान सुनिश्चित करना है। जनसुनवाई में लोकसभा अध्यक्ष ने परिवादियों से सीधा संवाद किया। भँवर बिशन सिंह द्वारा ग्राम खेड़ली तंवरान तहसील दीगोद के खाड़ी की पुलिया टूटी होने के कारण रास्ता बन्द होने की समस्या पर उन्होंने जिला मुख्य कार्यकारी अधिकारी, बीडीओ और पीडब्ल्यूडी अधिकारियों को स्थल निरीक्षण कर समाधान के लिए एस्टीमेट तैयार करने के निर्देश दिए। सतेंद्र मीना द्वारा तहसील स्तर और रहन मुक्त संबंधी तकनीकी समस्या के बारे में जानकारी देने पर उन्होंने यह समस्या शीघ्र सुलझाने के निर्देश दिए। दादाबाड़ी में पशु क्लीनिक से संबंधित समस्या पर लोकसभा अध्यक्ष ने नियमानुसार कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। लोकसभा अध्यक्ष ने इटावा एवं रामगंजमंडी के उपखंड अधिकारियों से संवाद करते हुए कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि परिवादियों को अनावश्यक रूप से जिला मुख्यालय पर न आना पड़े। इसके लिए ब्लॉक स्तर से लोगों को वीसी के माध्यम से जिला स्तर के अधिकारियों से जोड़ने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई का व्यापक प्रचार प्रसार किया जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग जनसुनवाई का लाभ लें सकें। जनसुनवाई में लगभग 160 से अधिक परिवाद दर्ज किए गए, जिनमें अतिक्रमण, स्वच्छता, सीमा विवाद, पेंशन आदि से संबंधित समस्याएं शामिल थीं।

परिवादों के वर्गीकरण एवं जनसुनवाई के प्रचार-प्रसार के लिए कलक्टर ने दिए आवश्यक निर्देश दिए : जनसुनवाई के उपरांत कलेक्टर द्वारा सभी जिला स्तरीय अधिकारियों एवं उपखंड अधिकारियों की बैठक लेकर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के निर्देशों की पालना के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए जिसमें जिला कलक्टर डॉ. गोस्वामी ने कहा कि सभी विभाग तीन श्रेणियों में परिवादों के वर्गीकरण करें। अर्जेंट मामलों का निस्तारण तुरंत किया जाए, इमीडिएट श्रेणी में रिपोर्ट और सर्वेक्षण के आधार पर समय सीमा में कार्रवाई हो, जबकि सामान्य श्रेणी के मामलों को 15 दिनों में निपटाया जाए।

जिला कलक्टर ने जनसुनवाई के प्रचार-प्रसार के लिए सभी विभागों एवं उपखंड अधिकारियों को प्रभावी मैकेनिज्म तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के प्रबुद्ध नागरिकों, ग्राम विकास अधिकारी, आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को व्हाट्सएप ग्रुप से जोड़कर जनसुनवाई का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए ताकि अधिक से अधिक लोग इस सुविधा का लाभ ले सकें। डिजिटल माध्यम और सोशल मीडिया का भरपूर उपयोग करते हुए लोगों को जागरूक किया जाए।

जनसुनवाई के दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रशासन मुकेश चौधरी, अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर अनिल सिंघल, केडीए सचिव कुशल कोठारी, नगर निगम आयुक्त उत्तर अशोक त्यागी, नगर निगम आयुक्त दक्षिण अनुराग भार्गव सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

होटल वेलकम मे दबिश देकर संदिग्ध गतिविधियो मे लिप्त 14 लोगो को किया गिरफ्तार

सदर थाना पुलिस की अनैनिक गतिविधीयो पर प्रभावी कार्यवाही

बढ़ता राजस्थान

बूंदी (अनन्त दाधीच)। सदर थाना पुलिस ने अनैतिक गतिविधीयो पर प्रभावी कार्यवाही करते हुये रामगंज बालाजी नेशनल हाईवे पर स्थित होटल वेलकम पर दबिश देते हुये 6 युवतियो व 14 युवक सदिग्ध अवस्था मे पकड़ा जिसके बाद युवतियो को सखी सेन्टर भेजा गया है। सदर थानाधिकारी रमेशचन्द आर्य ने बताया कि मुखबिर से जानकारी मिली थी की रामंगजबालाजी नेशनल हाईवे पर स्थित होटल वेलकम में करीब एक दर्जन से अधिक युवक व युवतिया रुके हुये है। जिनमे से कुछ नाबालिग भी है एंव सदिग्ध गतिविधियो मे लिप्त होने का अन्देशा है । उक्त होटल के सम्बन्ध मे पूर्व से ही काफी शिकायते प्राप्त हो रही थी जिस पर थाना सदर व महिला थाना बून्दी की सयुक्त टीम ने औचक दबीश दी तो होटल वेलकम 6 युवतिया व 14 युवक सदिग्ध अवस्था मे मिले। जिनसे पहचान पत्र इत्यादि मांगा तो कोई पहचान पत्र नही दिखाया उनसे नाम पता पूछा तो कोई संतोषप्रद जवाब नही दिया सभी महिला पुरुष आवेश में आते हुये एक राय होकर विरोध करने लगे। समझाईश की गई तो नही माने।

सदर थानाधिकारी ने बताया कि जिसके बाद पूछताछ हेतु डिटेन कर थाना लेकर आये तो युवको ने अपना नाम अरुण भाट निवासी इन्द्रा कोलोनी कोयला फैक्ट्री के पास मन्दसोर, दिनेश कुमार अहीरवाल, निवासी सिंगार उत्तर प्रदेश, मनीष धाकड निवासी होण्डा शोरुम के पास कोटा रोड बांरा, दिनेश माली निवासी तेल फैक्ट्री, थाना कोतवाली बांरा, कुंज बिहारी नागर निवासी वार्ड नं 1 मेल खेडी रोड थाना कोतवाली बांरा, नीरज गोस्वामी निवासी बम्बूलिया कलां, थाना अंता, बांरा, राकेश खतरी निवासी खटीको की गली कागजी देवरा थाना कोतवाली बूंदी, सुरेश माली निवासी मण्डोला थाना कोतवाली, बांरा, मुकुल गुरवानी जाति सिंधी निवासी एसके मार्ट के पीछे गोविन्दनगर देवपुरा थाना सदर बूंदी, चेतन धाकड निवासी खेरोली थाना सदर, बांरा , रवि नागर निवासी बिलासरा, थाना खानपुर, अजय मीणा निवासी छोटी जांवटी थाना सदर बूंदी, लोकेश मेघवाल निवासी भरता बावडी थाना तालेडा, कैलाश मीणा निवासी संडीला थाना नैनवां सहित 6 महिलाऐ संदिग्ध अवस्था मे मिली उक्त महिला पुरुषो को वास्ते पुछताछ हेतु थाने पर लेकर आये। उक्त 14 पुरुषो को शान्ति भंग मे गिरफ्तार किया गया तथा महिलाओ से पुछताछ कर सखी सेन्टर मे दाखिल करवाया गया।

सम्पूर्ण कार्यवाही मे ये रहे टीम में शामिल : इस दौरान पुलिस टीम मे सदर थानाधिकारी रमेश आर्य, सहायक उप निरीक्षक जयसिंह सोलंकी, सहायक उप निरीक्षक गीता जांगिड, हैड कान्सटेबल विरेन्द्र सिंह, उम्मेदकंवर, प्रमोद, भीमराज, नेतराम हनुमान सहित चालक आनन्द सिंह शामिल रहे।

दो माह बाद घटना स्थल पर पुलिस आरोपी प्रेमिका श्यामा को लेकर पहुंची

न्यायालय पॉक्सो कोर्ट संख्या दो द्वारा गुरुवार को अहम फैसला सुनाते हुए अभिषेक की प्रेमिका श्यामा को आजीवन कारावास की सजा सुनाते हुए 1 लाख 8 हजार के आर्थिक दंड से दंडित किया

बढ़ता राजस्थान

बूँदी (अनन्त दाधीच)। पुलिस में तैनात अभिषेक शर्मा नाम के जवान की उसी की प्रेमिका श्यामा ओर दूसरे प्रेमी नावेद ने सवाई माधोपुर के बोली गांव में बुलाकर ,पहले तो खंडहर में शराब पार्टी की ओर फिर प्रेमी अभिषेक की अपने ही दूसरे प्रेमी के साथ मिलकर उसकी हत्या कर जमीन में दफन कर दिया ।

परिवार जनों को पता नहीं लगे इसको लेकर अभिषेक शर्मा के मित्र से लगातार कांटेक्ट में रही अभिषेक की प्रेमिका श्यामा 3 दिन तक बात भी की , लेकिन जब अभिषेक का पता नहीं लगा तो इस पूरे मामले को लेकर बूंदी पुलिस ने गहनता से जांच की । तत्कालीन डीएसपी रहे मनोज शर्मा ने इस पूरे मामले से पर्दा उठाते हुए आरोपी प्रेमिका श्यामा और उसके प्रेमी से गहन पूछताछ की तब जाकर प्रेमिका सामान्य राज उगले और बताया कि मैं शराब पार्टी के दौरान अपने प्रेमी अभिषेक शर्मा को खूब शराब पिलाई और अपने दूसरे प्रेमी नावेद के साथ मिलकर उसकी निर्मम हत्या कर दी । खंडहर के नीचे स्थित जंगल में शव को दफना दिया ।

बूंदी और सवाई माधोपुर की पुलिस 2 दो माह बाद मौके पर घटना स्थल पर पुलिस आरोपी प्रेमिका श्यामा को लेकर पहुंची जब यह नाबालिक थी उसने एक के बाद एक राज उगले ।

गुरुवार को इस पूरे मामले में न्यायालय पॉक्सो कोर्ट संख्या दो द्वारा अहम फैसला सुनाते हुए अभिषेक की कही गई प्रेमिका श्यामा को आजीवन कारावास की सजा सुनाते हुए 108000 के आर्थिक दंड से दंडित किया है। मुख्य सह आरोपी नावेद का एडीजे 1 न्यायालय में ट्रायल जारी है । मामले की जानकारी निशांत सोनी विशिष्ट लोक अभियोजक पॉक्सो कोर्ट संख्या दो ने दी ।

डीआरएम ने कोटा-भरतपुर खण्ड के 6 स्टेशनों के पुनर्विकास कार्य की प्रगति का किया निरीक्षण

बढ़ता राजस्थान

कोटा, (का.स.)। मंडल में 17 प्रमुख स्टेशनों का अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत पुनर्विकास कार्य किया जा रहा है। पुनर्विकास कार्यो की प्रगति का नियमित निरीक्षण डीआरएम मनीष तिवारी द्वारा किया जा रहा है। जिससे कार्य गुणवत्तायुक्त तीव्र गति से पूर्ण किया जा सके। इसी क्रम में 19 दिसम्बर को डीआरएम ने कोटा-भरतपुर खण्ड का विन्डो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। इस निरीक्षण में डीआरएम ने मुख्य रूप से उक्त खण्ड पर संरक्षा पहलुओ एवं स्टेशनों पर चल रहे निर्माण कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया। डीआरएम के साथ निरीक्षण में संबंधित विभाग के शाखा अधिकारी तथा पर्यवेक्षक मौजूद रहे।

विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण के दौरान गाड़ी संचालन से जुड़े सभी संरक्षा मानकों, ट्रैक, ब्रिजों, ओएचई एवं समपार फाटको का अवलोकन किया। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत कोटा-भरतपुर खण्ड के सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, श्री महावीरजी, हिंडौन सिटी, बयाना एवं भरतपुर स्टेशनों पर चल रहे पुनर्विकास कार्यो की प्रगति का निरीक्षण कर जायजा लिया। जिसमें सवाई माधोपुर 43.2 करोड़, गंगापुर सिटी 24.50 करोड़, श्री महावीरजी 19.55 करोड़, हिंडौन सिटी 19.30 करोड़, बयाना 24.80 करोड़ एवं भरतपुर 31.14 करोड़ की लागत से उक्त स्टेशनों का कायाकल्प किया जा रहा है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को पुर्नविकास कार्यों में तीव्रता एवं गुणवत्ता के साथ पूर्ण करने के निर्देश दिए।

इस दौरान डीआरएम के साथ वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ जैन, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) संजय यादव एवं मंडल सुरक्षा आयुक्त सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

राजस्व विभाग ने अवैध खनन कर मिट्टी से भरी 3 ट्रेक्टर ट्रॉली की जप्त

बढ़ता राजस्थान

चौमहला (आबिद हुसैन)। झालावाड़ जिले के तहसील गंगधार क्षेत्र के ग्राम भड़का में चारागाह भूमि से हो रहे अवैध खनन के विरुद्ध राजस्व विभाग की टीम ने बड़ी कार्यवाही को अंजाम देते हुवे मिट्टी से भरी हुई 3 ट्रैक्टर ट्रॉली को जब्त किया गया।मौके से सूचना मिलने पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची। ट्रैक्टर ट्रॉली को पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया हे तथा खनन विभाग को आवश्यक कार्यवाही हेतु लिखा गया है।मौके पर तहसीलदार गंगधार, रीडर तहसील गंगधार, भू अभिलेख निरीक्षक कुंडला, भू अभिलेख निरीक्षक चौमहला, ऑफिस कानूनगो गंगधार, पटवारी कुंडला,बरडिया बीरजी, तलावली, भड़का, पड़ासलीं, आदि उपस्थित रहे।

विद्युत निगमो के निजीकरण के विरोध में कर्मचारी करेंगे जयपुर कुच

बढ़ता राजस्थान

चौमहला (नि.स.)। राजस्थान विद्युत सँयुक्त संघर्ष समिति की बैठक सहायक अभियंता कार्यालय चौमहला परिसर में आयोजित की गई।राजस्थान विद्युत सँयुक्त समिति के सदस्य रतन खण्डारे ने जानकारी देते हुवे बताया कि बैठक में सर्व सहमति से निर्णय लिया गया कि आगामी 20 /12/24 को सभी कर्मचारी सामूहिक अवकाश पर रहेंगे , और विद्युत निगमो के निजीकरण के विरोध में जयपुर जाकर विशाल धरना ,प्रदर्शन करेंगे , व मुख्य मंत्री , अतिरिक्त मुख्य सचिव ,अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जयपुर के नाम सभी विद्युत निगमो में विभिन्न नामो व मॉडलों पर किये जा रहे निजीकरण को रोकने हेतु ज्ञापन देगे , विद्युत कर्मचारियों ने अपनी मांगों ,विद्युत निगमो के निजी करन को रोकने ,सी पी एफ कटौती बंद कर ,जी पी एफ कटौती शुरू करना ,ओ पी एस लागू करना ,इंटर डिस्कॉम नीति लागू करना ,सहित अन्य मांगों को लेकर इससे पहले 25 /11/24 को उपखंड स्तर पर ,एवं 29 /11/24 को जिला मुख्यालय पर आंदोलन किया गया था ,बैठक में सहायक अभियंता ,कनिष्ठ अभियंता ,सहायक राजस्व अधिकारी ,सहित सभी कर्मचारी उपस्थित रहे।

हथकड़ शराब के सहित एक गिरफ्तार आबकारी विभाग की कार्यवाही

बढ़ता राजस्थान

निम्बाहेडा (नि.स.)। जिला आबकारी अधिकारी के निर्देश पर हथकड़ शराब व्यवसाय के विरुद्ध चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत आबकारी निरोधक दल निम्बाहेडा ने कार्यवाही करते हुए क्षेत्र के धीनवा , धीनवा बरसाती नाला , नारदिया में दबिश दे कर मटकों में भरा करीब 12 सौ लीटर हथकड़ शराब वाश को नष्ट कर तीन भट्टियाँ जब्त की। मौके से आबकारी दल ने राजू बंजारा को गिरफ्तार कर मुकदमा दर्ज किया। आबकारी निरीक्षक दल में थानाधिकारी हेमराज जाट , सुभाष कुमार , छैल सिंह , अजयपाल सहित हिम्मत सिंह शामिल थे।

दो दिवसीय मेगा कार्निवल का आयोजन बूंदी स्थित कुम्भा स्टेडियम में 21 व 22 को होगा आयोजित

कार्निवल के दौरान बच्चों की ड्राइंग प्रतियोगिता, मेहंदी डिजाइन, जादूगर की जादूगरी, के साथ लकी ड्रा होंगे मुख्य आकर्षण

बढ़ता राजस्थान

बूंदी (अनन्त दाधीच)। बूंदी में चौपहीयां वाहनों की लगातार बिक्री को देखते हुए मारुति ने बूंदी के कभ स्टेडियम में दिसंबर माह बचत के साथ आपको एक ही छत के नीचे फ्री सर्विस चेकअप कैंप जिसमें इंजन ऑयल टॉप अप, कूलेंट टॉप अप, बैटरी चेकअप ,जनरल चेक अप, ब्रेक ऑयल टॉप अप, इलेक्ट्रिकल एंड एसी चेक अप, ड्राइ वास की सुविधा रखी गई है। कंपनी के बूंदी तरूशैशव भटनागर ने बताया कि इस मेगा कार्निवल में मेगा वही इस मेगा कार्निवल में दिसंबर की महा बचत भी मिलेगी और कुछ गाड़ियों पर?108000 तक की बंपर छूट भी इस मेगा कार्निवल में मिलेगी उन्होंने आगे बताया कि इस तरह का मेगा कार्निवल अपनी हर वर्ष लगती रही है ! और इस वर्ष भी दिसंबर की महा बचत के साथ यह मेगा कार्निवल होगा इसमें पुरानी से पुरानी गाड़ी पर 25000 तक का स्क्रैप बोनस ,प्रत्येक बुकिंग पर आकर्षक उपहार, वह गाड़ी के मूल्यांकन पर विशेष उपहार रहेंगे और साथ ही लकी ड्रॉ और 50 ग्राम चांदी प्रत्येक एक्सचेंज पर दी जाएगी।

कार्निवल में मुख्य आकर्षण मनोरंजन ,खेलकूद बच्चों के लिए ,360 डिग्री सेल्फी, जादूगर, लकी ड्रॉ ,गिफ्ट ,अल्पाहार, मेहंदी डिजाइन, वह बच्चों की ड्राइंग प्रतियोगिता भी रहेगी ।

ट्वीशा फाउण्डेशन ने बच्चो को स्वेटर वितरित किए

बढ़ता राजस्थान

केशोरायपाटन (सुनील मेघवाल)। ट्वीशा फाउण्डेशन की तरफ से राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय (रा.उ.प्रा.वि.) छपावदा में 126 छात्र/छात्राओं को स्वेटर वितरण किए गए। इस नेक कार्य का उद्देश्य गरीब और जरूरतमंद छात्रों को ठंड से बचाने के लिए सहायता प्रदान करना था। स्वेटर प्राप्त करने के बाद छात्रों के चेहरों पर खुशी और संतोष की लहर थी। इस अवसर पर प्रमुख रूप से अनिता धाबाई, क्षमा गौतम, प्राची जैन और शिवानी मीणा ने इस कार्यक्रम में योगदान दिया और इसे सफल बनाने में मदद की।

कार्यक्रम में ट्वीशा फाउण्डेशन के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया गया। इस सामाजिक कार्य में फाउण्डेशन की संस्थापक अरुणा वैष्णव, बीना वैष्णव, और कुंदन वैष्णव भी उपस्थित थे, जिन्होंने इस आयोजन की सफलता में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका अर्पिता चौधरी और स्टाफ भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। उनका सहयोग विद्यार्थियों के लिए इस तरह के अच्छे कार्यों को संभव बनाने में अहम रहा। इस कार्यक्रम के दौरान छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारी और परोपकार के महत्व को भी समझाया गया।

यह आयोजन समाज में एकता और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करता है, जिससे भविष्य में और भी बेहतर और संवेदनशील समाज की स्थापना हो सके।

भारतीय जनता पार्टी संगठन पर्व के तहत चौमहला व उन्हेल मंडल अध्यक्ष पद को लेकर बेठक आयोजित

बढ़ता राजस्थान

चौमहला (आबिद हुसैन)। झालावाड़ जिले के चौमहला में भारतीय जनता पार्टी संगठन पर्व के तहत चौमहला व उन्हेल मंडल अध्यक्ष पद को लेकर गुरुवार को दोनों जगह-अलग अलग बैठकों का आयोजन किया गया जिसमे मंडल अध्यक्ष पद के लिए आवेदन प्राप्त किए गए। चौमहला भाजपा मंडल की बैठक अग्रवाल धर्मशाला में मंडल प्रभारी झालरापाटन नगर पालिका चेयरमेन वर्षा चंदवाड की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें अध्यक्ष पद के लिए आवेदन प्राप्त किए गए बैठक में 30 भाजपा कार्यकर्ताओं ने अध्यक्ष पद के लिए आवेदन दिए। वहीं उन्हेल मंडल की बैठक उन्हेल मंडल प्रभारी करण सिंह कोलवी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें 32 कार्यकर्ताओं ने मंडल अध्यक्ष के लिए आवेदन दिए। बैठक में चौमहला मंडल अध्यक्ष गौतम जैन, उन्हेंल मंडल अध्यक्ष सुल्तान सिंह, पूर्व प्रधान प्रतिनिधि डूंगर सिंह परमार, जगदीश भावसार, जिला परिषद सदस्य प्रतिनिधि अशोक गायरी, देवी सिंह, अरविन्द अग्रवाल आदित्य कटारिया ,वासुदेव विश्कर्मा भूपेंद्र सिंह ,कान्हा राठौर,दिलीप मोरी,राजेश जैन,भगवान सिंह सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

06 जनवरी से सोगरिया-दानापुर के लिए चलेगी स्पेशल ट्रेन

बढ़ता राजस्थान

कोटा, (का.स.)। यात्रियों की सुविधा हेतु अतिरिक्त यात्री भीड़ को क्लीयर करने के उद्देश्य से रेल प्रशासन द्वारा गाड़ी संख्या 09819/09820 सोगरिया-दानापुर-सोगरिया के मध्य स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। इस गाड़ी 15 थर्ड एसी कोच एवं 2 जनरेटर कार सहित कुल 17 कोच होंगें। गाड़ी संख्या 09819 सोगरिया-दानापुर स्पेशल दिनांक 06 जनवरी से प्रत्येक सोमवार दोपहर 12.45 बजे प्रस्थान कर अगले दिन सुबह 10.00 बजे दानापुर पहुँचेगी इसी प्रकार गाड़ी संख्या 09820 दानापुर-सोगरिया स्पेशल दिनांक 07 जनवरी से प्रत्येक मंगलवार दानापुर से दोपहर 12.45 बजे प्रस्थान कर अगले दिन सुबह 11.00 बजे सोगरिया पहुँचेगी।

नोट- यह स्पेशल ट्रेन सोगरिया से दिनांक 13, 27 जनवरी, 03, 10, एवं 24 फरवरी को और दानापुर से दिनांक 14, 28 जनवरी, 04, 11, एवं 25 फरवरी को दोनों दिशाओं में कोहरे तथा महाकुम्भ मेले के कारण 05-05 ट्रिप निरस्त रहेगी। उक्त तिथि को छोड़कर यह स्पेशल ट्रेन अगले आदेश तक संचालित होगी।

एक दिवसीय रोजगार शिविर आज होगा आयोजित

बढ़ता राजस्थान

धौलपुर (नि.स.)। राज्य सरकार की लोक कल्याणकारी नीति के तहत जिला प्रशासन एवं जिला रोजगार कार्यालय द्वारा एक दिवसीय कैम्पस रोजगार सहायता शिविर 20 दिसंबर शुक्रवार को राजकीय आईटीआई मचकुंड रोड धौलपुर में आयोजित किया जायेगा। शिविर के अंतर्गत बेरोजगार आशार्थियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन दिया जाएगा एवं यशस्वी ग्रुप जयपुर, जीफोरएस सॉल्यूशन नई दिल्ली, एमआरएफ कंपनी गाजियाबाद, श्रीराम पिस्टन गाजियाबाद, मिराकी वेंचर प्रा.लि. नोएडा, आमधन जयपुर, सुरेन्द्र एंटरप्राइजेज रेवाड़ी, पुखराज हेल्थ केयर जयपुर, एल एण्ड टी कम्पनी, एजी मैनपावर, सात्विक सोलर ग्रीन एनर्जी, रक्षा सिक्योरिटी नई दिल्ली, ओला कम्पनी जयपुर, मेगा मैटलस सहित अन्य स्थानीय कंपनियों द्वारा आषाथियों की भर्ती की जायेगी।

जिला रोजगार अधिकारी विकास कुमार ने बताया कि शिविर में राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी दी जायेगी तथा शिविर में जिला उद्योग केन्द्र व आरएसएलडीसी द्वारा योजनाओं की जानकारी प्रदान कर स्किल्ड प्रशिक्षण के आवेदन पत्र भरवाये जायेंगे। समस्त बेरोजगार आषार्थी अपनी योग्यता सबंधी दस्तावेज तथा पासपोर्ट साइज फोटो साथ लेकर राज्य सरकार द्वारा निर्धारित कोरोना गाइडलाइन की पालना करते हुए शुक्रवार को प्रात: 10 बजे राजकीय आईटीआई मचकुंड रोड धौलपुर में भाग ले सकते हैं।

राष्ट्रीय उपभोक्ता सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित किये जायेंगे विभिन्न कार्यक्रम

बढ़ता राजस्थान

धौलपुर (नि.स.)। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस का आयोजन जिला स्तर पर किया जायेगा। इस उपलक्ष्य में 24 दिसंबर तक उपभोक्ता सप्ताह का आयोजन की थीम पर किया जा रहा है। उपभोक्ता सप्ताह के अन्तर्गत 20 दिसंबर को रस्सा-खींच प्रतियोगिता, 21 दिसंबर को महाविद्यालय में जागरूकता संबंधी कार्यक्रम का आयोजन, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की जानकारी, राज्य उपभोक्ता हेल्पलाइन का प्रचार, 22 दिसंबर को उपभोक्ता जागरूकता रैली, 23 दिसंबर को थीम आधारित क्विज एवं 24 दिसंबर को उपभोक्ता दिवस का आयोजन किया जायेगा। त्वरित वैकल्पिक विवाद प्रतितोष व्यवस्था के अन्तर्गत राज्य सरकार द्वारा हेल्पलाइन टोल फ्री नं. 14435 एवं 18001806030 जारी किया गया है।

जिला स्तरीय कार्यक्रमों में स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठनों द्वारा भाग लिया जायेगा। जिला आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्यों सहित उपभोक्ता विषयक विभागों, जिला उपभोक्ता संरक्षण संरक्षण परिषद के सदस्यों, ऑयल कम्पनीज के अधिकारी व प्रतिनिधि, उपभोक्ता क्लब प्रभारी अधिवक्ता, शिक्षावित, समाजसेवी, पत्रकार, चिकित्सक, किसान, लेखक, कलाकार, स्वयंसेवी संस्था, महिला संगठन, व्यापारिक संगठनों एवं विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित की जायेगी।

एक ही परिवार के दो पक्षों के बीच हुई मारपीट:जमीनी विवाद को लेकर हुआ झगड़ा, पति-पत्नी सहित तीन लोग घायल

बढ़ता राजस्थान

धौलपुर (नि.स.)। धौलपुर के बसई नवाब कस्बे में जमीनी विवाद को लेकर एक ही परिवार के दो पक्षों के बीच झगड़ा हो गया। झगड़े के बाद एक पक्ष के लोगों ने दूसरे के घर में घुसकर मारपीट कर दी।

जिस मारपीट में एक पक्ष के पति-पत्नी सहित तीन लोग घायल हो गए। जिन्हें इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अस्पताल में भर्ती कराए गए घायल भोजा (40) पुत्र रोशन ने बताया कि उसका ताऊ नारायण उसके हिस्से की खेत की जमीन पर कब्जा करना चाहता है। जिसको लेकर बुधवार शाम को नारायण पक्ष के लोगों ने उससे झगड़ा शुरू कर दिया। झगड़े के बाद रात के वक्त नारायण पक्ष के आधा दर्जन से अधिक लोगों ने घर में घुसकर लाठी डंडों से हमला कर दिया। जिस हमले में घायल भोजा और उसकी पत्नी लोहरा (35) के साथ बेटे गौरव (15) को स्थानीय लोगों की मदद से इलाज के लिए जिला अस्पताल लाया गया। घायल ने बताया कि झगड़े के बाद आरोपी मौके से भाग निकले। जिसके बाद घायलों की चीख पुकार स्थानीय लोग उन्हें लेकर जिला अस्पताल पहुंचे। जहां डॉक्टरों की देखरेख में सभी घायलों का इलाज किया जा रहा है। घटना को लेकर पुलिस को सूचना दी गई है। जिस सूचना पर पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

बाड़ी सहित जिले में मंडी टेक्स की चोरी

अधिकारियो से मिलीभगत कर राजस्व को चूना

टेक्स वसूली के हिसाब से जिले में लोग नहीं खाते चीनी, सुगर फ्री है धौलपुर

कागजो में हेराफेरी का चल रहा खेल, न तो टेक्स की मंडी समिति को चिंता न प्रशासन को

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी (राजू शर्मा)। धौलपुर के बाड़ी, बसेड़ी उपखंड में सरसों की पैदावार की प्रति वर्ष तीन-साढ़े तीन लाख टन कुंतल के लगभग होती है जो की उपखंड में संचालित 35 तेल मिलो में करीब एक लाख कुंतल प्रति वर्ष खपत हो रही है।बकाया सरसों में से करीब 50000 कुंतल सरसों खुद किसान अपने प्रयोग में लेते हैं बाकी 50000 कुंटल किसान डायरेक्ट बिक्री हेतु उपखंड से बाहर बेचते है। इस हिसाब से 3 लाख कुंटल में से एक लाख कुंतल सरसों निजी प्रयोग एवं डायरेक्ट बाहर मण्डियों में बिक्री की जाती है। शेष बची दो,ढाई लाख सरसों लाख कुंतल सरसों तेल मिल या चलानी के रूप में आढ़तियों की मार्फत बिक्री होती है। जिस पर जीएसटी 5त्न एवं मंडी टैक्स 1.5त्न है। बाजार भाव कीमत सरसों 5500-6000 प्रति कुंतल का है। 2 लाख कुंतल सरसों की कीमत 120 करोड़ रुपए होती है जिस पर जीएसटी 5त्न 6 करोड़ एवं मंडी टैक्स 2 करोड़ रुपए के करीब बैठता है। यह तो केवल सरसों के आंकड़े हैं जो की सरकार द्वारा उत्पादन में बतायें एवं मौखिक रूप से बताये गये है। इसके अलावा बाजरा,गेहूं अन्य दलहन एवं घी,चीनी,मसाले अन्य उत्पादों पर भी मंडी टैक्स की गणना की जाए तो पिछले सालों से सरकार को करोड़ों रुपए के राजस्व की हानि मंडी अफसरो की मिलीभगत एवं भ्रष्टाचार के कारण हो रही है। चौकाने वाले तथ्य यह है की पूरे धौलपुर जिले में यह आंकड़ा 15-20 करोड़ सालाना के करीब होता है। जिस पर किसी का कोई ध्यान नहीं है।

चीनी से मंडी टेक्स समाप्त लेकिन किसान विकास शुल्क जारी, फिर भी खपत जीरो

चीनी पर से इस वर्ष मंडी टैक्स समाप्त कर दिया है केवल .5त्नकिसान विकास शुल्क लगाया है उसके बाद भी चीनी से मंडी टैक्स की वसूली नगण्य हो रही है। ऐसा महसूस होता है कि बाड़ी क्षेत्र के लोग मीठा,मिठाई,चाय,दूध का प्रयोग रोजाना में या शादी समारोह में चीनी का उपयोग नहीं करते हैं। आकड़ो के अनुसार चीनी की प्रति दिन की खपत 70 टन के करीब हैं। जब कि सालिग,गजक,मिठाई,टाफी आदि को मिलाकर 100 टन के आसपास होती है। जिसके अनुसार प्रतिदिन 20 हजार रुपए किसान शुल्क बैठता है जो सालाना 70 लाख रुपए हैं। जब कि मण्डी समिति को अब केवल 10-15 हजार रुपए तीन महीने में प्राप्त हुये है। ऐसे में सरकार के राजस्व का पैसा कहां जा रहा है यह सोचने का विषय है।

सभी आढ़तियों व परचून विक्रेताओं गल्ला व्यापारी जो बाहर गेहूं,बाजरा, सरसों भेज रहे हैं उनके बैंक खाते डिटेल्स पिछले 10 साल के निकाल लिये जाये तो अरबों की घोटाला उजागर होगा। सूत्रों से जानकारी मिली है की जिले के एक थोक व्यापारी ने मुरैना मध्य प्रदेश में फर्म रजिस्टर करा रखी है जिसमें 2017 से अब तक अरबों की चीनी उत्तर प्रदेश,महाराष्ट्र से मंगाई है जिसकी खरीद बिक्री सब मुरैना में दर्शायी गई

क्योंकि मध्य प्रदेश में मंडी टैक्स नहीं है और जीएसटी भी कम देनी पड़ती है जबकि हकीकत में सभी चीनी ट्रक धौलपुर जिले में बिक्री हुए है और हो रहे है। मेरठ मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश से चाकू के नाम से गुड आता है जो कि हमेशा बैंक पेमेंट के जरिए आता है। जिसकी 25 किलो की तक पैकिंग पर जीएसटी 5 प्रतिशत हैं। परन्तु व्यापारी पैकिंग 20च्द्द की खरीदते हैं बिल 26 च्द्द का बनाया जाता है। इससे पहले मंडी टैक्स 2त्न के करीब था। अब केवल.05प्रतिशत किसान शुल्क हैं।

एडीजे कोर्ट की फटकार के बाद नींद से जागा सार्वजनिक विभाग

कार्यालय के सामने बिना अनुमति हो रही टेलीकॉम कम्पनी की खुदाई को कराया बंद

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी(राजू शर्मा)। शहर में जलदाय विभाग द्वारा पुनर्गठित पेयजल पाइपबलाइन योजना और नगर पालिका की मॉनिटरिंग में सीवेज लाइन योजना का काम चल रहा है। उक्त कार्य में लापरवाही को लेकर शहर के दी युवाओं द्वारा जब कोर्ट में शिकायत की गई और एडीजे कोर्ट द्वारा जब सार्वजनिक निर्माण विभाग और जलदाय विभागके साथ नगर पालिका के अधिकारियों को कोर्ट में बुलाकर फटकार लगाई,साथ में 15 दिन में सभी कार्यों को पूरा करने और नियम अनुसार कार्य करने के निर्देश दिए तो आज पीडब्ल्यूडी के अधिकारी और कर्मचारी एक्शन में नजर आए। शहर के पीडब्ल्यूडी कार्यालय के ठीक सामने मुख्य सड़क पर टेलीकॉम कंपनी के कुछ लोग मशीन से गड्ढा खोद रहे थे हालांकि यह

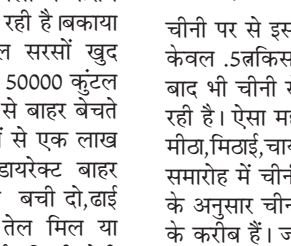

कार्य पिछले दो दिन से चल रहा था लेकिन उस वक्त पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों का इस पर कोई ध्यान नहीं था। अब एडीजे कोर्ट की फटकार और लोगो की शिकायत के बाद पीडब्ल्यूडी के कर्मचारी और अधिकारियों ने मौके पर पहुंच टेलीकॉम कंपनी के कर्मचारियों से रोड कटिंग की जानकारी ली। जब कार्मिकों पर रोड कटिंग नहीं मिली तो कार्य को बंद करा दिया गया है साथ में सामान को भी जप्त किया है। पीडब्ल्यूडी के वरिष्ठ कार्मिक राजवीर यादव ने बताया कि कुछ लोगों ने कार्यालय में आकर शिकायत की की कार्यालय के ठीक सामने सड़क पर मशीनों से गड्ढे खोदे जा रहे हैं। जो किसी टेलीकॉम कंपनी के हैं। इस पर उन्होंने एक्सईएन सौरभ शर्मा को मामले से अवगत कराया। जिन्होंने निर्देश दिए कि जाकर देखिए,अगर रोड कटिंग नहीं हो तो काम बंद कराया जाए,अगर कंपनी के लोग नहीं माने तो उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाए। इस पर उन्होंने मौके पर जाकर जब कार्य कर रहे लोगो से रोड कटिंग दिखाने को कहा तो वे सकपका गए। ऐसे में उन्हें चेतावनी देते हुए कार्य बंद करा दिया है। साथ में कुछ सामान भी कार्यालय में रखवा लिया है। उच्च अधिकारियों के फील्ड से आने पर मामले की और जांच की जाएगी। स्थानीय नागरिक हनीफ खान ने बताया कि यह काम कई दिनों से चल रहा था। जिस पर किसी का कोई ध्यान नहीं था लोगों ने शिकायत पर एक्शन हुआ है।

घर पर शराब पीने से मना करने पर हमला:युवक को लाठी-डंडों से पीट पीटकर किया घायल

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी(राजू शर्मा)। बाड़ी शहर के बसेड़ी रोड पर एक युवक पर हमले का मामला सामने आया है। घटना में घायल युवक को रास्ता गुजर रहे लोगों द्वारा बाड़ी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना को लेकर पुलिस में रिपोर्ट दी गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार बाड़ी शहर के संत्रास मोहल्ला निवासी समीर खान पुत्र मुन्ना खान पर चार लोगों द्वारा हमला किया गया है। घटना के पीछे घायल साबिर खान ने बताया कि उसके घर पर आकर कुछ लोग शराब पीते हैं, जो शराब पीने के दौरान गालियां भी देते हैं। इससे मोहल्ले के लोग परेशान हो गए हैं। ऐसे में उन लोगों से मना किया, लेकिन वे नहीं माने। बुधवार की शाम, मामले को लेकर वह उनके परिजनों से कहने बसेड़ी रोड स्थित उनके घर पर गया था। जहां आरोपी राजेश, राजू, मन्नू एवं एक अन्य ने उस पर हमला कर दिया। इसमें लाठी डंडों से हमला किया गया और उसे फुटपाथ पर पटक कर चले गए। बाद में रास्ता गुजर रहे लोगों ने जब उसे लहूलुहान अवस्था में देखा तो उसे बाड़ी अस्पताल में भर्ती कराया गया। घटना को लेकर पीड़ित समीर खान पुत्र मुन्ना खान ने कोतवाली थाने में रिपोर्ट दी है। जांच अधिकारी ओमप्रकाश मामले की जांच कर रहे हैं।

राजाखेड़ा में डिस्कॉम की कार्रवाई:बकायादारों के ट्रांसफार्मरों की सप्लाई बंद, बिजली चोरों की भरी वीसीआर

बढ़ता राजस्थान

धौलपुर (राजू शर्मा)। धौलपुर जिले के राजाखेड़ा में बिजली विभाग ने बकायादार उपभोक्ताओं के खिलाफ कार्रवाई की। विभाग ने उन उपभोक्ताओं के ट्रांसफार्मरों की विद्युत सप्लाई बंद कर दी, जिन्होंने वर्षों से निगम में अपने विद्युत बिल की राशि जमा नहीं की। इसके साथ ही, विभाग ने बिजली चोरों की वीसीआर भी भरी। अधीक्षण अभियंता जेवीवीएनएल राजेश वर्मा के निर्देशन में उपखंड राजाखेड़ा में

सहायक अभियंता आर.डी. मीना और कनिष्ठ अभियंता ग्रामीण राजाखेड़ा की टीम द्वारा कार्रवाई की गई। टीम ने गढ़ी जोनावाद फीडर से 3.8 लाख बकाया राशि पर एक सिंगल फेस ट्रांसफार्मर उतारकर भंडार शाखा में जमा कराया। साथ ही, अवैध केबिल और पैरेलल सर्विस लाइन को हटाया और घरेलू उपभोक्ताओं के मीटर खोलकर डीसी किए गए।

इस दौरान टीम ने लगभग 11.4 लाख रुपये की बकाया राशि पर 19 घरेलू कनेक्शनों समेत 6 ट्रांसफार्मर और 8.2 लाख रुपये के बकाए पर जंपर खोलकर सप्लाई बंद की गई। 4 उपभोक्ताओं की वीसीआर भी भरी गई। कनिष्ठ अभियंता शहर, प्रशांत यादव द्वारा डीसी और पीडीसी कनेक्शनों का चेक किया गया और 50 हजार की बकाया राशि पर 5 कनेक्शन डीसी किए गए। कनिष्ठ अभियंता मयंक मिश्रा और उनकी टीम ने 4 लाख बकाया राशि पर 5 ट्रांसफार्मरों की सप्लाई बंद की और 6 लाख बकाया राशि पर 14 कनेक्शन डीसी किए। इस दौरान टीम ने 1.3 लाख रुपये मौके पर जमा कराए। सहायक अभियंता आर.डी. मीना ने लोगों से अपील की कि वे अपने पीडीसी कनेक्शनों का बकाया बिल 22 दिसंबर को आयोजित लोक अदालत में आपसी समझौते से जमा कर सकते हैं।

परिवादों के गुणात्मक निस्तारण हेतु करें प्रयास:जिला कलक्टर

जिला स्तरीय जनसुनवाई में जिला कलक्टर ने अधिकारियों को परिवादों के गुणात्मक निस्तारण हेतु दिए निर्देश

बढ़ता राजस्थान

धौलपुर (नि.स.)। जिला स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में किया गया। उन्होंने कहा कि संपर्क पोर्टल पर लंबित परिवादों की नियमित मॉनिटरिंग की जाये। सभी परिवादों का निस्तारण हेतु फॉलोअप किया जाये। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई के दौरान लंबित चल रहे दर्ज प्रकरणों का प्राथमिकता से निस्तारण करते हुए समय पर रिपोर्ट भिजवाना सुनिश्चित करें जिससे परिवादी की समस्या का समाधान हो सके। उन्होंने समस्त जिला स्तरीय अधिकारी एवं उपखंड अधिकारियों को हिदायत दी कि वे आमजन से प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में अविलम्ब और प्राथमिकता के साथ कार्यवाही करें तथा उनके निस्तारण के संबंध में की गयी कार्यवाही की सूचना भी परिवादी को देना सुनिश्चित करें।

जिला कलेक्टर ने बताया कि जनसुनवाई के दौरान खातेदारी की जमाबंदी में नाम सही

करवाने, चारागाह भूमि पर अतिक्रमण हटवाने, सीवरेज लाईनों की सफाई, पुलिस, राजस्व, सहित अन्य प्रकरण प्राप्त हुए जिनका शीघ्र निस्तारण करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिये। इस दौरान सर्तकता समिति में दर्ज प्रकरणों की भी समीक्षा की गई एवं प्रकरणों का निस्तारण किया गया। परिवादी शकुंतला देवी ने अपनी खातेदारी की भूमि से लगते गैर मुमकिन रास्ते पर से अतिक्रमण हटवाने हेतु परिवाद प्रस्तुत किया जिस पर उन्होंने तहसीलदार बाड़ी को मौका देखकर त्वरित ढंग से अतिक्रमण हटवाये जाने हेतु निर्दशित किया। परिवादी प्रदीप कुशवाह निवासी मधुवन कॉलोनी बाड़ी रोड़ धौलपुर ने एनएचएआई द्वारा निर्मित नालों की सफाई करवाने हेतु परिवाद प्रस्तुत किया जिस पर जिला कलक्टर ने मामला एनएचएआई के भेजे जाने हेतु निर्देशित किया। परिवादी विनोद कुमार ने कृषि विद्युत कनेक्शन दिलवाये जाने से संबंधित परिवाद प्रस्तुत किया जिस पर जिला कलक्टर ने जेवीवीएनएल को आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देशित किया।

एक थैला एक थाली अभियान,हरित कुंभ 2025 के तहत धौलपुर से भी प्रयागराज जाएंगे थैले और थाली

बढ़ता राजस्थान

धौलपुर (नि.स.)। जनवरी 2025 में प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन होने जा रहा है। इस बार का यह कुंभ प्लास्टिक मुक्त कुंभ हो यह संकल्प संत समाज ने लिया है। इसी को लेकर सन्त समाज के आव्हान पर देश भर में एक थैला और एक थाली अभियान चलाया जा रहा है। धौलपुर के सामाजिक कार्यकर्ता भी शहर में इस कार्य हेतु लोगों से आर्थिक सहयोग करने की अपील कर रहे हैं।

सामाजिक कार्यकर्ता मुकेश सूतैल, अभिषेक त्यागी, कुशाल कुलश्रेष्ठ, राकेश त्यागी, दिनेश सिंघल, राजू अग्रवाल, दिनेश बघेल ने बताया कि धौलपुर से भी थैले और थाली प्रयागराज महाकुंभ में भेजे जाने का निर्णय लिया गया है, जिससे प्लास्टिक वाला कचरा कुंभ में कम या न के बराबर हो। उन्होंने बताया कि प्रयागराज कुंभ में सम्पूर्ण हिंदू समाज अपनी भागीदारी करने वाला है। संभावना है कि देश-विदेश से 40 करोड़ श्रद्धालु वहां पहुंचने वाले हैं। 45 दिन तक चलने वाले इस कुंभ में प्लास्टिक की वजह से करीब 40 हजार टन कचरा उत्सर्जित होने का अनुमान है। इससे पर्यावरण को नुकसान होगा जो चिंता का विषय है।

सरकारी डॉक्टर ने खुद पर डीजल डालकर लगाई आग: हॉस्पिटल क्वार्टर में लपटों से हड़कंप

बढ़ता राजस्थान

धौलपुर (राजू शर्मा)। धौलपुर में सरकारी डॉक्टर ने खुद को आग लगा ली। सुसाइड के प्रयास में डॉक्टर का आधा शरीर बुरी तरह झुलस गया है। मामला सैंपऊ हॉस्पिटल के सरकारी क्वार्टर का है। सूत्रों के अनुसार डॉक्टर दिनेश

नरूका ने गुरुवार सुबह करीब 5 बजे गृह क्लेश के कारण खुद पर डीजल डालकर आग लगा ली।

पत्नी और पड़ोसियों ने गेट तोड़ा: जानकारी के अनुसार डॉक्टर दिनेश नरूका ने जब खुद को आग लगाई तब उनकी पत्नी भी घर पर ही थी। नरूका ने खुद को बैडरूम में बंद कर लिया। उनके चिल्लाने की आवाज सुनकर पत्नी ने गेट खटखटाया, लेकिन नरूका ने गेट नहीं खोला। आग की लपटें दिखाई दी तो पत्नी ने पड़ोसियों को बुलाया। इसके बाद गेट तोड़कर आग बुझाई गई, लेकिन तब तक डॉक्टर बुरी तरह झुलस गए थे।

ग्वालियर ले गया परिवार: बुरी तरह से झुलसे डॉक्टर को पहले परिजन नजदीक के हॉस्पिटल लेकर पहुंचे।

शिक्षक भर्ती में पदों को लेकर राजस्थान उर्दू बेरोजगार संघ बाराँ ने जिला कलेक्टर को शिक्षा मंत्री के नाम ज्ञापन सोपा

बढ़ता राजस्थान

अंता/बारां (शफीक मंसूरी)। शिक्षक भर्ती में पदों को लेकर जिला अध्यक्ष रविकांत रेगर राजस्थान उर्दू बेरोजगार संघ बाराँ ने गुरुवार को जिला कलेक्टर को शिक्षा मंत्री के नाम ज्ञापन सोपा । जिला संयोजक मोहम्मद आबिद देशवाली ने बताया कि हाल ही में जारी हुई फर्स्ट ग्रेड सेकंड ग्रेड व रीट में उर्दू विषय के नाम मात्र पद होने के कारण बड़ी संख्या में तैयारी कर रहे छात्र-छात्राएं जिला कलेक्ट्रेट परिसर में एकत्रित हुए और सभी श्रेणियों में उर्दू के पद बढ़ाने को लेकर शिक्षा मंत्री के नाम ज्ञापन सोंपा। उपाध्यक्ष योगिता बेरवा और कोषाध्यक्ष शिरीन अंसारी का कहना है कि प्रदेश में स्कूल से लेकर कॉलेज तक उर्दू विषय के शिक्षक नहीं होने के कारण उर्दू के विद्यार्थियों को काफी समस्या का सामना करना पड़ता है। अनवर सिद्दीकी हाश्मी ने कहा बेरोजगार छात्र व छात्राओं का यह भी कहना है कि उर्दू विषय किसी खास समुदाय की भाषा नहीं है बल्कि इसे सभी जाति व समुदाय के लोग पढ़ते हैं और रोजगार की उम्मीद करते हैं लेकिन जब विज्ञप्ति में सबसे कम पद देखने को मिले तो उन्हें निराशा हुई । महासचिव अकीनो खान, पिंकी रेगर, उमेश मीणा, केशव मीणा व सिमरन ने बताया कि वर्तमान में उर्दू विषय को अल्पसंख्यक समुदाय के अतिरिक्त बहुसंख्यक समुदाय के विद्यार्थी भी बड़ी तादाद में पढ़ रहे हैं और अन्य भाषाओं की तरह उर्दू से प्रशिक्षित हजारों छात्र छात्राएं सरकार से रिक्त पदों पर भर्ती की आशा लगाए बैठे हैं लेकिन हाल ही मे वरिष्ठ अध्यापक भर्ती 2024 में उर्दू के नाम मात्र पद देखकर बेरोजगारों को झटका लगा और उर्दू बेरोजगार संघ ने पदों को बढ़ाने को लेकर ज्ञापन दिया साथ ही कहा कि सरकार पदों को नहीं बढ़ाती है तो संगठन बड़े स्तर पर धरना प्रदर्शन करेगा और इसकी समस्त जिम्मेदारी सरकार की होगी। ज्ञापन देने वालों में गायत्री बेरवा, गुलिस्ता बानो, दीपक वर्मा, जैनब बी, विनोद महावर, शबाना खान, दीपक खींची, ऋषिराज मीणा आदि उपस्थित रहे।

पंजाबी समाज ने 50 बच्चों को ऊनी स्वेटर और कॉपियां वितरित की

बढ़ता राजस्थान

रावतभाटा(नि.स.)। पंजाबी समाज ने सर्दी से बचाव के लिए 50 बच्चों को ऊनी स्वेटर और कॉपियां वितरित की। पंजाबी समाज अध्यक्ष बालकिशन गुलाटी ने बताया कि जावदा क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय दूधितलाई में 50 जरूरतमंद बच्चों को ऊनी जर्सी और 50 बच्चों को कॉपियां दी गईं। यह ऊनी स्वेटर लालजी परिवार की तरफ से भेंट की गई हैं। स्कूल स्टाफ ने पंजाबी समाज का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर पंजाबी समाज अध्यक्ष बालकिशन गुलाटी, अशोक छाबड़ा, सिद्धार्थ छाबड़ा, हर्ष छाबड़ा, धुन छाबड़ा, किशन ओड और स्कूल स्टाफ के प्रधानाचार्य अंजना जोगलेकर, अशोक मीणा, हेमराज मीणा, जनक सिंह, केसरीमल धाकड़, कविता मीणा, धर्मवीर सिंह, रामप्रसाद गुजर आदि उपस्थित थे।

रास्ता खोलो अभियान के तहत जिला कलेक्टर ने ली बैठक

रास्तों से संबंधित प्रकरणों का ज्यादा से ज्यादा निस्तारण कर अभियान को सफल बनाने के दिए निर्देश, रामखेड़ा धनार में ग्रामीणों की शिकायत पर बन्द रास्ते को प्रशासन ने खुलवाया

बढ़ता राजस्थान

ब्यावर (विष्णु दत्त धीमान)। जिला कलेक्टर ने कलेक्ट्रेट सभागार में नवाचार के तहत 'रास्ता खोलो अभियान' के संबंध में समस्त तहसीलदार व नायब तहसीलदार अधिकारियों की बैठक आयोजित कर उन्हें ज्यादा से ज्यादा बन्द पड़े रास्तों को खुलवाने व इससे संबंधित पड़े पुराने सभी प्रकरणों का निस्तारण कर आमजन को राहत पहुणचाने के निर्देश दिये हैं ताकि अभियान भी सफल हो सके। उन्होंने निर्देश दिए कि राजस्थान भू राजस्व अधिनियम, काश्तकार अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत आमजन की शिकायत पर त्वरित रूप से निस्तारण करें । बैठक में अतिरिक्त जिला कलेक्टर मोहनलाल खटनावलिया , उपखंड अधिकारी गौरव बुडानिया सहित समस्त तहसीलदार व नायब तहसीलदार गण मौजूद रहे ।

ग्राम रामखेड़ा धनार में ग्रामीणों की शिकायत पर बंद रास्ते को खुलवाकर करवाया अतिक्रमण मुक्त : ग्राम रामखेड़ा धनार में ग्राम वासियों द्वारा प्रशासन को जानकारी दी गई कि कुछ लोगों ने खेतों पर जाने वाले रास्ते पर कांटों की बाड़ लगाकर अतिक्रमण कर रास्ता बंद कर रखा है। इस पर जिला प्रशासन ने अपने अधिनस्थ अधिकारियों को दिशा निर्देश देकर रास्ता खोलो अभियान के तहत रास्ता खुलवाया गया। इस दौरान उपखंड अधिकारी ब्यावर व तहसीलदार ब्यावर द्वारा राजस्व कार्मिक पटवारी सुनील कुमार डेटानी व गिरदावर लोकेश मीणा आदि उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त राजस्व कार्मिकों द्वारा ग्रामवासियों से समझाइश कर खेतों में आने -जाने वाले वर्षों से बंद पड़े रास्ते को मौके पर खुलवाकर ग्रामवासियों के खेतों में आने जाने का रास्ता सुगम और सरल करवाया गया।

ठेका सफाई कर्मचारियों ने तीन माह से लंबित वेतन की मांग को लेकर प्रदर्शन किया

बढ़ता राजस्थान

केशोरायपाटन (सुनिल मेघवाल)। ठेका सफाई कर्मचारियों ने पाटन नगर पालिका में तीन माह से लंबित वेतन की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। उन्होंने पालिका अधिशासी अधिकारी और पालिका अध्यक्ष के नाम एक ज्ञापन सौंपा, जिसमें 74 ठेका सफाई कर्मचारियों को उनका बकाया वेतन शीघ्र जारी करने की मांग की गई। कर्मचारियों का कहना है कि वेतन का भुगतान ठेकेदार द्वारा नहीं किया गया है। इसके साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि यदि 21 तारीख तक वेतन नहीं मिला, तो वे सफाई कार्य बंद कर देंगे, और इसकी पूरी जिम्मेदारी नगर पालिका प्रशासन की होगी। प्रदर्शन में ठेका सफाई कर्मचारी बबलू, पिंकी, माया, रोशन, अर्जुन, सत्यनारायण समेत बड़ी संख्या में अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व राज्य मंत्री की पुण्यतिथि के एक दिवस पूर्व समाधि स्थल पर लगा नाम इंगित हुआ फ्लैक्स

इससे पूर्व कपासन के कांग्रेस नेता ने जनता में किरकिरी बढ़ने पर समाधि स्थल पर रंगरोगन किया था

बढ़ता राजस्थान

कपासन (नि.स.)। नगर पालिका क्षेत्र कपासन में एक बार फिर जनता जनार्दन एवं दैनिक बढ़ता राजस्थान की मुहिम रंग लाई है। इसके अंतर्गत स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व राज्य मंत्री स्व. भवानीशंकर नंदवाना के समाधि स्थल पर रंगरोगन कार्य के बाद अचानक नाम इंगित करने वाला एक फ्लैक्स लग गया।

यह कदम उस नेता की हड़बड़ी को दर्शाता है, जिन्होंने राजनीतिक गलियारों में लगातार गिरते स्तर को देखते हुए इस कार्य को किया। कांग्रेस समर्थित पार्षद एवं नेता प्रतिपक्ष कन्या देवी सोनी के निर्वाचित नगर पालिका कपासन के वार्ड नं. 6 में स्थित स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व राज्य मंत्री स्व. भवानीशंकर नंदवाना के समाधि स्थल पर स्वतंत्रता सेनानी स्व. नंदवाना की पुण्यतिथि से एक दिवस पूर्व अचानक इनके समाधि स्थल पर नाम इंगित हुआ एक फ्लेक्स लग गया।जिससे क्षेत्रीय जनता जनार्दन में उत्साहपूर्वक हर्ष व्याप्त रहा। गौरतलब है कि स्वतंत्रता सेनानी स्व. भवानीशंकर नंदवाना के

जनता जनार्दन एवं दैनिक बढ़ता राजस्थान की मुहिम पुन : रंग लाई

स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व राज्य मंत्री के समाधि स्थल पर कपासन के कांग्रेस नेता नाम इंगित करना भूले
क्या आगामी 19 दिसं. स्वतंत्रता सेनानी की पुण्यतिथि तक नाम इंगित होगा

समाधि स्थल पर अचानक नाम इंगित संबंधी फ्लेक्स लगने के उपरांत किसी भी स्तर एवं स्पष्ट रूप से उक्त फ्लेक्स किसके द्वारा लगा समाचार लिखे जाने तक इसकी पुष्टि नहीं हो सकी। इधर स्वतंत्रता सेनानी स्व. भवानीशंकर नंदवाना के समाधि स्थल पर बुधवार को अचानक नाम इंगित हुआ फ्लैक्स लगना एवं उक्त फ्लेक्स किसके द्वारा लगाया गया उक्त मुद्दा जनता जनार्दन एवं राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बना रहा। जिसमें संबंधित वार्ड से निर्वाचित जनप्रतिनिधि की स्वतंत्रता सेनानी के समाधि स्थल के विकास में उदासीनता एवं कुंभकर्णीय निंद्रा धारण करने को लेकर किरकिरी बनी रही।

ब्यावर की बन्द पड़ी वर्षों पुरानी महालक्ष्मी मिल्स बचाओ संघर्ष समिति करेगी आन्दोलन, एक को धरना

बढ़ता राजस्थान

ब्यावर (विष्णु दत्त धीमान)। ब्यावर की वर्षों से बन्द पड़ी महालक्ष्मी मिल्स बचाओ संघर्ष सेवा समिति ने इसे चालू करवाने के लिए फिर से आगामी एक जनवरी 2025 से संघर्ष करने की ठानी है। इस मामले को लेकर पदाधिकारियों की एक बैठक गड्डी थोरियान में मुकेश जोधावत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में आगामी एक जनवरी 2025 को स्वामी कुमारानन्द सर्कल चांगगेट पर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन हेतु विचार विमर्श किया गया। समिति के अध्यक्ष विनोद कुमार मिण्डल ने जानकारी देते हुए बताया कि महालक्ष्मी मिल्स के नवीनीकरण के वचे शेष चरणों को शुरु करवाने को लेकर व पुन: ब्यावर में महालक्ष्मी मिल्स को सुचारु रुप से शुरु करने की आवाज उठाई जायेगी।समिति के अध्यक्ष मण्डल ने बताया कि महालक्ष्मी मिल्स बचाओ संघर्ष समिति द्वारा लगातार संघर्ष किया जा रहा है।

पूर्व में चागगेट पर धरना दिया गया व केन्द्रीय कपड़ा मंत्री व एनटीसी के संयुक्त सचिव को पुन: चालू करने की मांग की गई जिस पर संयुक्त सचिव राजीव सक्सैना ने उचित कार्यवाही का आश्वासन दिया था, आज दिवस तक किसी भी प्रकार की उचित

कार्यवाही नहीं की गई इसी कारण पुन: महालक्ष्मी मिल्स बचाओं संघर्ष सेवा समिति ब्यावर द्वारा आगामी 01 जनवरी 2025 को ब्यावर में संघर्ष को आगे बढाते हुये 1 दिवसीय धरना दिया जायेगा। उक्त बैठक में समिति अध्यक्ष विनोद कुमार मिण्डल, उपाध्यक्ष नानकराम गहलोत, कोषाध्यक्ष एडवोकेट हेमन्त चन्देल, मुकेश जोधावत, कपिल बोयत, राजेन्द्र कुमावत, पवन पंवार, राजेन्द्र भट्ट आदि सदस्य उपस्थित हुये।

जिला कलेक्टर ने दिखाई संवेदनशीलता, कलेक्ट्रेट के चतुर्थ श्रेणी कार्मिक को सूदखोरो के चंगुल से करवाया मुक्त

बेहतर जीवन यापन की दी सलाह

बढ़ता राजस्थान

ब्यावर (विष्णु दत्त धीमान)। जिला कलेक्टर को कलेक्ट्रेट के चतुर्थ श्रेणी कार्मिक श्री चेतन के बारे में साथी सहयोगियों ने जानकारी देते हुए बताया कि शहर के लाला पहलवान सूदखोर द्वारा उक्त कार्मिक को नाजायज परेशान कर सूदखोरी के जाल में फंसा रखा है। चेतन ने स्वयं की प्रताड़ना के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि उसे 10 प्रतिशत से ज्यादा के ब्याज दर पर राशि वसूलने के साथी ही चेक, स्टांप , मोबाइल जब्त किया हुआ है। उसने बताया कि सूदखोरों द्वारा बुधवार को उसका अपहरण कर मारपीट की गई। जिला कलेक्टर ने इस मामले में संवेदनशीलता रखते हुए मामले को गंभीरता से लिया। उन्होंने पुलिस अधीक्षक व अन्य अधिकारियों को चेतन के बारे में जानकारी देकर सूदखोरों को पाबंद करने व उनके चंगुल से छुड़ाने के निर्देश दिए । जिला कलेक्टर के निर्देश पर पुलिस विभाग ने त्वरित रूप से कार्रवाई करते हुए सूदखोर को गिरफ्त में लेकर जानकारी ली एवं कानूनी नियमों के अनुसार समझौता कराते हुए मामले का तत्काल प्रभाव से निस्तारण किया एवं चेतन को समस्त दस्तावेज व मोबाइल वापस लौटाए गए। जिला कलेक्टर ने चेतन को बेहतर जीवन यापन की सलाह दी। चेतन व अन्य सहयोगी कार्मिको ने मामले का निस्तारण करवाने पर जिला कलेक्टर के प्रति आभार व्यक्त किया।

स्वतंत्रता सेनानी स्व.भवानीशंकर नंदवाना की पुण्यतिथि पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष एवं नगर अध्यक्ष की उपस्थिति में श्रद्धांजलि अर्पित की

पूर्व कपासन नगर कांग्रेस अध्यक्ष हिमांशु बारेगामा समन्वयक नियुक्त

बढ़ता राजस्थान

कपासन (नि.स.)। स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व राज्य मंत्री क्षेत्र के विकास पुरुष स्व. भवानीशंकर नंदवाना की पुण्यतिथि पर नगर पालिका कपासन के वार्ड नं. 6 स्थित इनके समाधि स्थल पर कांग्रेस पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा विचारगोष्ठी सहित पुष्प-माला अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गयी। नगर कांग्रेस कमेटी प्रवक्ता विजय बारेगामा ने बताया स्वतंत्रता सेनानी स्व. भवानीशंकर नंदवाना की पुण्यतिथि पर जिला चितौड़गढ़ कांग्रेस अध्यक्ष भैरूलाल चौधरी के मुख्य आतिथ्य एवं नगर कांग्रेस कमेटी कपासन अध्यक्ष शंकरलाल प्रजापत की अध्यक्षता में विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया।साथ ही कांग्रेस समर्थित पार्षद कन्या देवी सोनी के निर्वाचन क्षैत्र के वार्ड नं. 6 स्थित स्व. भवानीशंकर नंदवाना के समाधि स्थल पर कांग्रेस पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा स्वतंत्रता सेनानी स्व. के चित्र पर पुष्प-माला अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गयी। इस श्रद्धांजलि कार्यक्रम को संबोधित करते हुवे जिला कांग्रेस अध्यक्ष भैरूलाल चौधरी ने कहाकि स्वतंत्रता सेनानी एवं कपासन के विकास पुरुष स्व. भवानीशंकर नंदवाना के पदचिन्हो पर चल कपासन नगर में कांग्रेस संगठन को मजबूत करने सहित देश व समाज की सेवा करने हेतु प्रेरित किया गया।जिलाध्यक्ष चौधरी ने नगर क्षैत्र में कांग्रेस को एकजुट करने तथा आगामी नगर पालिका चुनाव में मेहनत करने वाले

कार्यकर्ताओं को अवसर मिले इस हेतु पूर्व नगर कांग्रेस अध्यक्ष हिमांशु बारेगामा को समन्वयक नियुक्त किया गया।जिनके द्वारा नगर कांग्रेस में होने वाली विभिन्न गतिविधियों से जिला कांग्रेस अध्यक्ष को अवगत कराया जायेगा।जिससे मौका परस्त एवं चापलूस नेता संगठन को दिग्भ्रमित न कर सके तथा युवा एवं मेहनत करने वाले कार्यकर्ता आगामी चुनाव में कांग्रेस का चेहरा बन सके। इस अवसर पर जिला कांग्रेस कोषाध्यक्ष सतीश नंदवाना,डॉ. लीलाशंकर मेघवाल, पूर्व वरिष्ठ नगर अध्यक्ष एवं पूर्व नपा पार्षद हाजी अब्दुल रहमान मंसूरी,पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि ललित टांक,नगर कांग्रेस उपाध्यक्ष सूर्यप्रकाश सिरोया,पूर्व पार्षद शिवशंकर उपाध्याय,यूथ कांग्रेस नेता मोहम्मद शेर अंसारी,यूथ कांग्रेस जिला महासचिव रोहित कोदली,पूर्व पार्षद राजकुमार खटीक,युवा नेता रवि सोनी, लक्ष्मीनारायण व्यास,नगर सचिव हरीश सोनी,नगर महामंत्री भावेश झंवर, सत्यनारायण चोटिया, सांस्कृतिक प्रकोष्ठ पूर्व जिलाध्यक्ष सत्यप्रकाश व्यास,भेरू बारेगामा, महामंत्री राजकुमार बारेगामा,देवेंद्र सेन,पूर्व ब्लॉक प्रवक्ता मधुसूदन कुमावत,पार्षद रोशन सोनी, उपाध्यक्ष हरलाल जटिया,सुनील प्रधान,दीनबंधु सोमानी,युवा नेता अमित मोदी, राजेंद्र आचार्य, अशोक लोहार, अशफाक खान, कोषाध्यक्ष ऋतिक व्यास,मजहर हुसैन, तेजप्रताप नंदवाना,किशन प्रजापत आदि कांग्रेस पदाधिकारी एवं कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

युकां कार्यकर्ताओं ने कपासन में मुख्यमंत्री निवास घेराव कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन किया

बढ़ता राजस्थान

कपासन (नि.स.)। प्रदेश युवक कांग्रेस द्वारा मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार निवास को घेरने संबंधित कार्यक्रम के पोस्टर का गुरुवार को विमोचन किया गया। युवक कांग्रेस जिला महासचिव रोहित कोदली ने बताया कि प्रदेश मुख्यालय जयपुर में 21 दिसम्बर प्रदेश युवक कांग्रेस द्वारा मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार निवास घेराव कार्यक्रम संबंधित पोस्टर का पूर्व कांग्रेस नगर अध्यक्ष हिमांशु बारेगामा की उपस्थिति में विमोचन किया गया। इस अवसर पर नगर कांग्रेस प्रवक्ता विजय बारेगामा,युवा नेता मोहम्मद शेर अंसारी सत्यनारायण चोटिया,अमित मोदी, लक्ष्मीनारायण भांड,सुनील प्रधान, अशोक लोहार,रजत जोशी, ऋतिक व्यास,दीपक मोची आदि युवा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सुशासन सप्ताह-प्रशासन गांव की ओर अभियान शुरू

लोक शिकायतों के निवारण और सेवा वितरण में सुधार के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान

बढ़ता राजस्थान

अंता बारां (नि.स.)। जिला कलक्टर रोहिताश्व सिंह तोमर के निर्देशानुसार सुशासन सप्ताह के तहत प्रशासन गांव की ओर, लोक शिकायतों के निवारण और सेवा वितरण में सुधार के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान 19 से 24 दिसंबर, 2024 तक जिले के सभी ग्राम पंचायतों को शामिल करते हुए ग्राम पंचायत क्लस्टर स्तर पर शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जिले में गुड गवर्नेंस के अंतर्गत गुरुवार को पंचायत समिति परिसर किशनगंज में जिला कलक्टर ने सुशासन सप्ताह-प्रशासन गांव की ओर शिविर में लोक शिकायतों के निवारण और सेवा वितरण में सुधार के लिए जनसुनवाई कर राहत प्रदान की। उन्होंने शिविरों में पेयजल, विद्युत, चिकित्सा, सार्वजनिक निर्माण विभाग, कृषि, खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, राजस्व, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, शिक्षा एवं अन्य विभागों से संबंधित परिवादों का प्राथमिकता के आधार पर यथासंभव मौके पर निस्तारण किया। अन्य प्राप्त परिवादों को निर्धारित समय सीमा में निस्तारित करने के निर्देश दिए। प्रशासन गांव की ओर शिविरों में जन शिकायतों के निस्तारण एवं विभिन्न विभागों द्वारा दी जा रही सेवाओं की तत्काल प्रदायगी सुनिश्चित की जा रही है। गुरूवार को सुशासन सप्ताह के तहत बारां में राजीव गांधी सेवा केन्द्र ग्राम पंचायत बामला, पंचायत समिति सभागार अटरू, पंचायत समिति छबड़ा, पंचायत समिति परिसर छीपाबड़ौद, मांगरोल के ग्राम पंचायत बमोरीकलां, अंता के ग्राम पंचायत बालाखेड़ा, पंचायत समिति परिसर किशनगंज एवं भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्र शाहाबाद में शिविर आयोजित किए गए।

20 दिसंबर यहां होंगे शिविर आयोजित : 20 दिसम्बर शुक्रवार को बारां में राजीव गांधी सेवा केन्द्र फतेहपुर, अटरू के ग्राम पंचायत कार्यालय कटावर, छबड़ा के पंचायत समिति बापचा, छीपाबड़ौद के राजीव गांधी सेवा केन्द्र अजनावर, मांगरोल के रायथल मेला मैदान, अंता के ग्राम पंचायत सौरसन, किशनगंज के ग्राम पंचायत रामगढ एवं शाहाबाद के राजीव गांधी सेवा केन्द्र देवरी में प्रशासन गांव की ओर शिविर आयोजित किए जाएंगे।

जिला स्तरीय जनसुनवाई में सुनी आमजन की समस्याएं, निस्तारण के दिए निर्देश : जिला कलक्टर रोहिताश्व सिंह तोमर की अध्यक्षता में गुरुवार को अटल सेवा शिविर के तहत कलेक्ट्रेट परिसर डीओआईटी कक्ष में जिला स्तरीय जनसुनवाई आयोजित की गई। जनसुनवाई में दो कृषि, पांच नगरपालिका, छ: राजस्व, दो समाज कल्याण, एक चिकित्सा, छ: पंचायती राज, दो कॉपरेटिव, दो पीडब्ल्यूडी, एक पुलिस, एक वन विभाग, दो कन्या महाविद्यालय, तीन नगरपालिका अतिक्रमण, तीन राजस्व अतिक्रमण, एक इन्तकाल एवं एक अन्य परिवाद को मिलाकर कुल 30 प्रकरण प्राप्त हुए। जिला कलक्टर ने आमजन की परिवेदनाओं का मौके पर ही निस्तारण

किया एवं लंबित प्रकरणों पर संबंधित अधिकारियों को समयबद्धता के साथ आवश्यक कार्यवाही के लिए दिशा निर्देश प्रदान किए। जिला मुख्यालय से एडीएम दिवांशु शर्मा, जिला परिषद सीईओ राजवीर चौधरी, एसडीएम अभिमन्यु कुन्तल, सीएमएचओ सम्पतराज नागर, एसई डीआर क्षेत्रीय, संयुक्त निदेशक अतीश कुमार शर्मा सहित अन्य मौजूद रहे। वहीं वर्चुअल माध्यम से ब्लॉक स्तर के अधिकारी उपस्थित रहे।

जिला कलक्टर ने जनसुनवाई में सुनीं आमजन की समस्याएं, त्वरित समाधान के दिए निर्देश

बढ़ता राजस्थान

सवाईमाधोपुर (राकेश शर्मा)। जिला कलक्टर शुभम चौधरी ने गुरुवार को कलेक्ट्रेट परिसर स्थित भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केंद्र में आयोजित जिला स्तरीय जनसुनवाई में आमजन की समस्याएं सुनीं। इस दौरान उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को सभी प्रकरणों पर गंभीरता से विचार कर त्वरित और प्रभावी कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में बड़ी संख्या में लोग अपनी समस्याओं को लेकर पहुंचे। जिला कलक्टर को पानी, बिजली, सड़क, राजस्व, पुलिस सहित अन्य विभागों से जुड़ी अनेक शिकायतें प्राप्त हुईं। उन्होंने प्रत्येक प्रकरण पर संवेदनशीलता से विचार करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि समस्याओं का निस्तारण स्थानीय स्तर पर सुनिश्चित किया जाए, ताकि आमजन को बार-बार चक्कर न लगाने पड़ें।

राजस्व प्रकरणों पर अधिक फोकस : जनसुनवाई में सबसे अधिक प्रकरण राजस्व विभाग से जुड़े हुए थे। इनमें अतिक्रमण, रास्ता खुलवाने, सीमा ज्ञान जैसे मुद्दे शामिल थे। कलक्टर ने इन प्रकरणों पर तुरंत कार्रवाई के लिए संबंधित तहसीलदारों और उपखंड अधिकारियों को निर्देशित किया। इसके अतिरिक्त पानी, बिजली और सड़क से संबंधित समस्याओं सहित किसान सम्मान निधि योजना का लाभ दिलवाने, व्यवसायिक निर्माण स्वीकृति जारी करवाने, सीसी सड़क का निर्माण करवाने, हैण्डपम्प से अतिक्रमण हटवाने, ट्रांसफार्मर लगवाने, अवैध बिजली कनेक्शन हटवाने, कोहली मोहल्ला आलनपुर में पेयजल समस्या का समाधान करवाने पर भी विस्तार से चर्चा की गई और समाधान हेतु अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए। संवेदनशीलता से करें समस्याओं का निस्तारण, लापरवाही बर्दाश्त नहीं कलक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे संवेदनशीलता के साथ समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि किसी भी समस्या का समाधान लंबित

रखने या टालने की कोशिश नहीं होनी चाहिए। अगर कोई परिवादी असंतुष्ट होकर पुन: शिकायत लेकर आता है, तो संबंधित अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि आमजन को राहत प्रदान करना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। साथ ही, सभी विभागीय अधिकारियों से जनसुनवाई में प्राप्त शिकायतों की स्थिति पर नियमित रिपोर्ट देने के लिए कहा। जनसुनवाई के दौरान जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता, उप वन संरक्षण श्रवण कुमार रेड्डी, सहायक कलक्टर रूबी अंसार, एसडीएम अनूप सिंह, सीएमएचओ डॉ. धर्मसिंह मीणा, महाप्रबंधक जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र सुग्रीव मीणा, कृषि उपज मण्डी सचिव दिलीप मीणा सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, दिल्ली द्वारा विशेष अभियान के तहत सब-जेल डीग का निरीक्षण

बढ़ता राजस्थान

भरतपुर (आशीष वर्मा)। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, दिल्ली द्वारा वृद्ध बंदीगण एवं गंभीर बीमारी से पीड़ित बंदीगण के संबंध में चलाये गये विशेष अभियान की अनुपालना में गुरुवार को सब जेल डीग का निरीक्षण किया गया। अभियान के तहत वहां पर 70 वर्ष से अधिक उम्र के बंदीगण तथा गंभीर बीमारी से पीडित बंदियों के संबंध में जानकारी ली गई। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के एक्शन प्लान की अनुपालना में सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, भरतपुर के द्वारा के.एल. जोशी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, डीग पर विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, भरतपुर अनुतोष गुप्ता द्वारा उपस्थित छात्र-छात्राओं को पोक्सो अधिनियम, बच्चों को मैत्रीपूर्ण विधिक सेवा योजना, 2024 योजनाओं, महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीडन अधिनियम, 2013 विधिक सहायता, नालसा थीम सॉन्ग, साइबर क्राइम, बाल श्रम, कन्या भ्रूण हत्या (पूर्व गर्भाधान और प्रसव पूर्व निदान तकनीक) अधिनियम 1994, गुड टच बैड टच, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, नि:शुल्क विधिक सहायता, कानूनी प्रक्रिया, महिला सशक्तिकरण, बिना लाइसेन्स वाहन न चलाना, ट्रैफिक नियम, राजस्थान पीड़ित प्रतिकर स्कीम, राष्ट्रीय लोक अदालत, बच्चों का हेल्पलाईन नं. 1098, नालसा के टोल-फ्री राष्ट्रीय विधिक सहायता हेल्पलाईन नं. 15100, राजस्थान पीड़त प्रतिकर स्कीम आदि के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। साथ ही छात्र-छात्राओं को उनके उज्जवल भविष्य के बारे में बताया एवं उनकी समस्याओं का निराकरण किया।

जिला स्तरीय जनसुनवाई में आमजन को मिली समस्याओं से राहत

आमजन की शिकायतों के प्रति संवेदनशील रहें अधिकारी : कलक्टर

बढ़ता राजस्थान

राजसमंद (सुरेश बागोरा)। गुरुवार को जिला कलक्टर बालमुकुंद असावा ने जिला स्तरीय जनसुनवाई में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए आमजन की समस्याएं सुनी और उनके समाधान हेतु अधिकारियों को निर्देश दिए। यह जनसुनवाई डीओआईटी में आयोजित की गई, जिसमें कुल 24 परिवादी समस्याएं लेकर पहुंचे। इसके साथ ही जिला सतर्कता समिति के 9 प्रकरणों पर भी चर्चा हुई। जनसुनवाई के दौरान नागरिकों ने भूमि विवाद, पेंशन, बिजली, पानी, सड़क, अतिक्रमण, रास्ता खुलवाने और अन्य सार्वजनिक सेवाओं से जुड़ी कई शिकायतें प्रस्तुत की। जिला कलक्टर ने प्रत्येक शिकायत को गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को त्वरित समाधान के निर्देश दिए। इस अवसर पर कलक्टर असावा ने कहा, जनसुनवाई का उद्देश्य आमजन की समस्याओं को प्राथमिकता के साथ हल करना है। प्रशासन हर संभव प्रयास कर रहा है कि लोगों को उनके अधिकार और सेवाएं समय पर उपलब्ध हों। जनसुनवाई में विभिन्न विभागों के अधिकारी भी उपस्थित रहे, जिन्होंने समस्याओं के समाधान के लिए मौके पर ही कार्रवाई शुरू की। कलक्टर ने संपर्क पोर्टल के लेवल वन, टू एवं थ्री पर दर्ज प्रकरणों की डिटेल में समीक्षा की। एक-एक प्रकरण को लेकर बारीकी से संबंधित विभाग के जिला स्तरीय प्रभारी अधिकारी से पूछा। कलक्टर ने इस दौरान दर्ज एवं निस्तारित शिकायतों का विवरण, संतुष्टि का प्रतिशत, निस्तारण में लगा समय सहित विभिन्न बिंदुओं पर जानकारी ली। कलक्टर ने निर्देश दिए कि संपर्क पर दर्ज शिकायतों का त्वरित समाधान किया जाए और शिकायतकर्ता को राहत दी जाए, जिला स्तरीय अधिकारी स्वयं इस बात का सत्यापन करें कि शिकायत का समाधान हुआ है या नहीं। कलक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे आमजन की समस्याओं के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाएं। उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रशासनिक व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य जनता की समस्याओं का त्वरित और प्रभावी समाधान करना है। अधिकारियों से अपेक्षा की गई है कि वे शिकायतों को गंभीरता से लें और समाधान की प्रक्रिया में देरी न करें। संवेदनशीलता के साथ कार्य करने से न केवल आमजन को त्वरित राहत मिलेगी, बल्कि प्रशासन और जनता के बीच विश्वास का माहौल भी मजबूत होगा। कलक्टर ने यह भी कहा कि प्रत्येक शिकायत की निगरानी की जाए और जरूरतमंदों को शीघ्र न्याय प्रदान किया जाए।

जिला स्तरीय बैकर्स सलाहकार एवं जिला समीक्षा समिति की बैठक आयोजित

सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं में पात्रजनों को समय पर ऋण मिले : जिला कलक्टर

बढ़ता राजस्थान

भरतपुर (आशीष वर्मा)। जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट डॉ. अमित यादव कि अध्यक्षता में कलेक्ट्रट सभागार में जिला स्तरीय बैंकर्स परामर्श समिति एवं जिला स्तरीय समीक्षा समिति की बैठक की गई। जिला कलक्टर ने बैंकवार समीक्षा करते हुए 60 प्रतिशत से कम सीडी रेशो वाले बैंको के जिला समन्वयकों अपने-अपने बैंकों का सी.डी. रेशो बढाते हुए टीम भावना से कार्य करने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी बैंकों, कृषि, डेयरी, पशुपालन विभाग के अधिकारियों को सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का प्रचार प्रसार कर अंतिम छोर तक पात्र जनों को लाभान्वित करने के निर्देश दिये। उन्होंने नाबार्ड द्वारा अनुदानित योजनाओं एवं कृषि विभाग की योजनाओं से अधिक से अधिक किसानों को लाभान्वित करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि सभी बैंक कृषि, रिटेल व सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम के क्षेत्र में अधिक से अधिक ऋण स्वीकृत एवं वितरण करना सुनिश्चित करें जिससे औद्योगिक विकास के साथ जिले का सी.डी. रेश्यो को राज्य के औसत सीडी रेश्यो के बराबर लाया जा सके। जिला कलक्टर ने केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित

योजनाओं के आवेदन सभी विभागों को बैकों में अधिक से अधिक भेजने एवं बैकर्स को समय पर स्वीकृत कर ऋण वितरित करने के निर्देश दिये।

उन्होंने पीएम विश्वकर्मा के प्राप्त आवेदनों की स्वीकृति मे राजस्थान मे भरतपुर जिले की 14 वी रेंक आने पर प्रंशासा करते हुए संबन्धित बैंक प्रबन्धकों की सराहना की। बैठक में राजीविका के कार्यों मे गति देने के लिए बैंक सखी के रूप में चयनित महिलाओं को पत्र प्रदान किये गये। उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक आरसेटी भरतपुर से प्रशिक्षिति सफल उधमियों को ऋण स्वीकृत पत्र प्रदान किये गये। जिला कलक्टर ने बड़े बकायेदारों से ऋण वसूली के लिए बैकर्स को हरसंभव प्रशासनिक सहयोग देने का भी आश्वासन दिया और निर्देश दिये कि वे जल्द-से-जल्द बड़े एन.पी.ए. बकायादारों की सूची जिला प्रशासन को उपलब्ध करायें ताकि उन पर उचित करवाई कि जा सके । आर.सेटी. के निदेशक उपेन्द्र श्रीवास्तव ने समिति के समक्ष आरसेटी की प्रगति रखकर प्रस्तावित प्रशिक्षण कार्यों की जानकारी दी। आरबीआई एलडीओं मनदीप सिंह वालिया ने सीडी रेशो बढाने एवं बैकर्स के दायित्वों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डीडीएम नाबार्ड राजेश मीणा ने जिले में प्राथमिक क्षेत्र के तहत कृषि क्षेत्र में अधिक से अधिक ऋण वितरण करने का निर्देश दिये।

दिल्ली के भामाशाह कमल अग्रवाल द्वारा स्वास्थ्य मंदिर पर बच्चों को कंबल प्रदान किए गए

बढ़ता राजस्थान

भरतपुर (आशीष वर्मा)। स्वास्थ्य मंदिर रणजीत नगर पर दिल्ली के भामाशाह कमल अग्रवाल की ओर से 50 गरीब जरूरतमंद खिलता बचपन सवरता जीवन प्रकल्प के बच्चो के परिवारों को कम्बल स्वास्थ्य मंदिर की संरक्षक उर्मिला देवी प्रकल्प प्रभारी गरिमा बंसल, ममता कुमारी, डॉ दिगंबर सिंह द्वारा प्रदान किए गए। कार्यक्रम संयोजक संदीप श्रीवास्तव ने बताया कि सर्दी आ चुकी है प्रतिवर्ष संस्था द्वारा गरीब व जरूरतमंद परिवारों को, सड़क के किनारे सो रहे परिवारों को, स्टेशन व बस स्टैंड इत्यादि सर्दी से सिकुड़ रहे लोगों को कंबल प्रदान किए जाते हैं। कोई भी जरूरतमंद परिवार स्वास्थ्य मंदिर रणजीत नगर आकर या स्वास्थ्य मंदिर आश्रम महाराजसर से प्राप्त कर सकता है।

पूर्व विधायक रैगर को लोग विकास पुरुष के नाम से जानते है : सीताराम वर्मा

पूर्व विधायक हीरालाल रैगर को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

बढ़ता राजस्थान

निवाई (का.स.)। स्थानीय डाक बंगले में गुरूवार को पूर्व विधायक स्व. हीरालाल रैगर की पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा में संबोधित करते हुए पूर्व विधायक के पुत्र सीताराम वर्मा ने कहा कि मैंने मेरे पिताजी स्व. हीरालाल रैगर को आदर्श माना है। मेरे पिताजी जनता के सुख दुख में हमेशा खड़े रहते थे। क्षेत्र की जनता ने अपना आशीर्वाद देकर पिताजी हीरालाल रैगर को दो बार विधायक बनाया व पार्टी में भी कई ऊंचे पदों पर आगे बढ़ाया। आज भी कार्यकर्ता पिताजी के आदर्श पर चलते हैं। क्षेत्र की जनता उन्हें विकास पुरुष

के नाम से जानती है। मै भी अपने पिताजी के अधूरे कार्यों को पूरा करने का प्रयास करूंगा। मेरा उद्देश्य पिताजी के आदर्शों पर चलकर ग्रामीण क्षेत्र के अंतिम लाइन में बैठे प्रत्येक व्यक्ति का विकास करना है। उन्होंने कहा कि उनके बताएं मार्ग पर चलना ही सच्ची श्रद्धांजलि है। भाजपा नेता रतनदीप गुर्जर ने कहा कि पूर्व विधायक स्वर्गीय हीरालाल रैगर हमेशा जनता के साथ खडे रहते थे। क्षेत्र के लोगों को अपना परिवार मान कर चलते थे। जनता के बीच में बिना भेदभाव किए हमेशा विकास के कार्य करते थे। इस दौरान महावीरप्रसाद पराणा, मक्खन परिडवाल, गणेशसिंह राजावत हनोतिया, रतनदीप गुर्जर, नरेन्द्रसिंह नाथावत, सत्यनारायण तिवाडी, शंकरलाल शर्मा, प्रेमचन्द शिवाड, छोटू महाराज झिलाय, रामबाबू सोनी, मदनलाल शर्मा, रामगोपाल सेवलिया, मदन मास्टर, केसरलाल वर्मा, रामकिशोर वर्मा, रामेश्वरप्रसाद जांगिड, सांवरियां सोनी, धीरज सोनी, मांगीलाल वर्मा, हनुमान रजवास, चिरंजीलाल झांपडी, भरतलाल जाट व चांदमल कंवरिया सहित कई जनप्रतिनिधि व कार्यकर्ताओं ने पूर्व विधायक रैगर के चित्र पर पुष्प अर्पित करके श्रद्धांजलि दी।

सुशासन सप्ताह के तहत जिला स्तर पर हुई जनसुनवाई

बढ़ता राजस्थान

गंगापुरसिटी (अब्दुल माहिर)। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस (25 दिसम्बर - सुशासन दिवस) के उपलक्ष्य में जिले में गुरुवार को डीओआईटी के वीसी कक्ष में सुशासन सप्ताह के तहत जिला स्तरीय अटल जनसेवा शिविर आयोजित कर जनसुनवाई की गई । जिला कलक्टर डॉ. गौरव सैनी ने बताया कि केन्द्र एवं राज्य सरकार के निर्देशानुसार जिले में 19 से 24 दिसम्बर तक सुशासन सप्ताह मनाया जायेगा।

सुशासन सप्ताह के तहत देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की मंशानुरूप जनभावना को ध्यान में रखते हुए पारदर्शी एवं संवेदनशील वातावरण में आमजन की परिवेदनाओं एवं समस्याओं की सुनवाई की गई। साथ ही जिला स्तरीय अटल जनसेवा शिविर एवं जनसुनवाई कार्यक्रम में जिले के सभी उपखण्ड अधिकारी सहित सभी ब्लॉक स्तरीय अधिकारी भी वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से हिस्सा बने।

सभी स्तरों पर जिले के सभी विभागों के अधिकारिओं ने जनसुनवाई में भाग लेकर आमजन की ज्यादा से ज्यादा समस्याओं का मौके पर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कराया। कलक्टर ने लम्बित प्रकरण में जल्द निस्तारण के निर्देश प्रदान किए। इस दौरान जिला कलक्टर ने सुशासन सप्ताह के महेनजर गुड गवर्नेंस से सम्बंधित बेस्ट प्रेक्टिसेज को प्रोत्साहन देने और अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने के निर्देश सभी विभागाध्यक्षों को दिए। जिला स्तरीय कार्यक्रम में कुल 37 परिवाद प्राप्त हुए।

जिनमें दूषित पेयजल आपूर्ति, सीवर चेम्बर ओवरफ्लो, हाई-टेंशन विद्युत् लाइन को ठीक करवाने, रास्ते पर अतिक्रमण, अन्तिम छोर पर पेयजल आपूर्ति, गैर न्यायिक स्टाम्प के लिए निर्धारित राशी से अधिक राशि वसूलने, पीएम आवास की द्वितीय किश्त भुगतान, योग प्रशिक्षक की नियुक्ति, ट्रांसफॉर्मर लगवाने एवं हटवाने, चारागाह भूमि से अतिक्रमण हटवाने, बच्चों के आधार नामांकन हेतु केन्द्र खुलवाने, पट्टा निरस्त करवाने सहित अन्य परिवाद शामिल हैं। इस दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर रामकिशोर मीणा, सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियन्ता जयलाल मीना, विद्युत् विभाग के अधीक्षण अभियन्ता बाबूलाल मीना सहित समस्त जिला स्तरीय अधिकारी, उपखण्ड अधिकारी बृजेन्द्र मीना, पुलिस उपाधीक्षक सन्तराम मीना वीसी कक्ष में वहीं समस्त उपखण्ड अधिकारी एवं अन्य ब्लॉक स्तरीय अधिकारी वीसी के माध्यम से उपस्थित रहे।

रुई और गद्दे की दो दुकानों में लगी भीषण आग,आग से लाखों के नुकसान की आशंका

स्थानीय लोगों ने अपने स्तर पर पाया आग पर काबू

बढ़ता राजस्थान

राजसमंद (सुरेश बागोरा)। राजसमंद मे चारभुजा कस्बे के ढोरडा, देसूरी मार्ग पर दो दुकानों में आग लगने से भगदड़ मच गई। दुकाने परमेश्वर लाल की थी। तथा सज्जाद रंगरेज निवासी रिछेड़ ने किराए पर ले रखी थी। बिस्तर भरनै का काम करता था। सज्जाद मशीन चला रहा था उस समय शॉर्ट सर्किट हो गया था। जिससे आग पकड़ ली। आग रूई ,मशीन, गदलें में लगती हुई भयंकर रूप ले लिया। आग पर काबू पाना मुश्किल हो गया। मौके पर ग्रामीण भी पहुंच गए। आग बुझाने का प्रयास किया गया मगर आग बुझाने में आग ने विकराल रूप ले लिया। राजसमंद से दमकल बुलाई गई। मौके पर पहुंची दमकल ने पानी का छिड़काव कर 1 घंटे के बाद आग पर काबू पाया। वही दुकानों में रखें बिस्तर के गद्दों को जेसीबी की सहायता से बाहर निकाला गया। सभी बिस्तर जल कर राख हो गए । सज्जाद ने बताया कि मशीन 2 लाख की थी, गद्दे व रूई सामग्री 2 लाख का माल भरा हुआ था। 4 लाख का नुकसान हो गया। दोनों दुकाने भी क्षतिग्रस्त हो गई। वहीं बिजली विभाग को सूचित कर विद्युत आपूर्ति बंद कराई गई। ग्रामीणो ने गरीब परिवार को मुआवजा दिलवाने की मांग की है।

रोडवेज बसों का निवाई शहर से संचालन नहीं होने से लोगों में आक्रोश

शहरवासियों ने टोंक प्रबंधक नंदकिशोर मीणा का बस स्टैंड पर किया घेराव

बढ़ता राजस्थान

निवाई (का.स.)। रोडवेज बसों का निवाई शहर से संचालन नहीं होने से आक्रोशित शहरवासियों ने गुरुवार को टोंक प्रबंधक नंदकिशोर मीणा का निवाई बस स्टैंड पहुंचने पर किया घेराव किया। इस दौरान नगर पालिका पार्षद शंकर घाटी, संजय पारीक, राजेंद्र जैन, श्याम, नंदन पारीक, रोशन चौधरी, चिरंजीलाल जायसवाल, रवि पारीक व दिनेश चंवरिया ने रोडवेज टोंक जिला प्रबंधक को बताया कि जयपुर सिंधी कैंप से राजस्थान रोडवेज के चालक व परिचालक मनमानी करते हैं और निवाई की सवारी को बस में नहीं बिठाते हैं। उन्होंने बताया कि झालावाड़, कोटा, बूंदी, बारां व झालावाड़ डिपो की बसें भी निवाई बाईपास से सीधी निकल जाती हैं। जिससे यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। प्रबंधक मीणा ने लोगों से कहा कि मेरा मोबाइल नंबर रखिए। अगर सिंधी कैंप या टोंक बस स्टैंड से कोई बस चालक व परिचालक आपको निवाई के लिए नहीं बिठाते है तो तुरंत गाड़ी नंबर व डिपो का नाम लिखकर मुझे व्हाट्सएप पर भेज दीजिए। तत्काल कार्यवाही की जाएगी। इस पर लोगों ने कहा कि प्रबंधक फोन ही रिसीव नहीं करते हैं तो व्हाट्सएप मैसेज क्या देखेंगे। उक्त समस्या को लेकर कई बार स्थानीय विधायक रामसहाय वर्मा

को भी आमजन ने अवगत करवाया। विधायक वर्मा द्वारा काफी प्रयास करने के बावजूद भी कोई हल नहीं निकला है। समस्या को लेकर उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा को भी अवगत कराया था। दिनेश चंवरिया ने बताया कि पीडब्ल्यूडी द्वारा चैनपुरा व झिलाय रोड पर पुलिया का काम चलने के कारण विभाग द्वारा निवाई शहर में प्रवेश करने के लिए कहीं पर भी रेडियम सांकेतिक बोर्ड नहीं लगाया गया है जिससे जयपुर से आने वाली कई सवारियों को पहाड़ी मोड पर या जयपुर रोड एनएच 52 महावीर ढाबे पर उतार दिया जाता है। जिससे साधन नहीं मिलने पर यात्रियों को करीब 3 किलोमीटर पैदल चलकर निवाई पहुंचना पड़ रहा है।

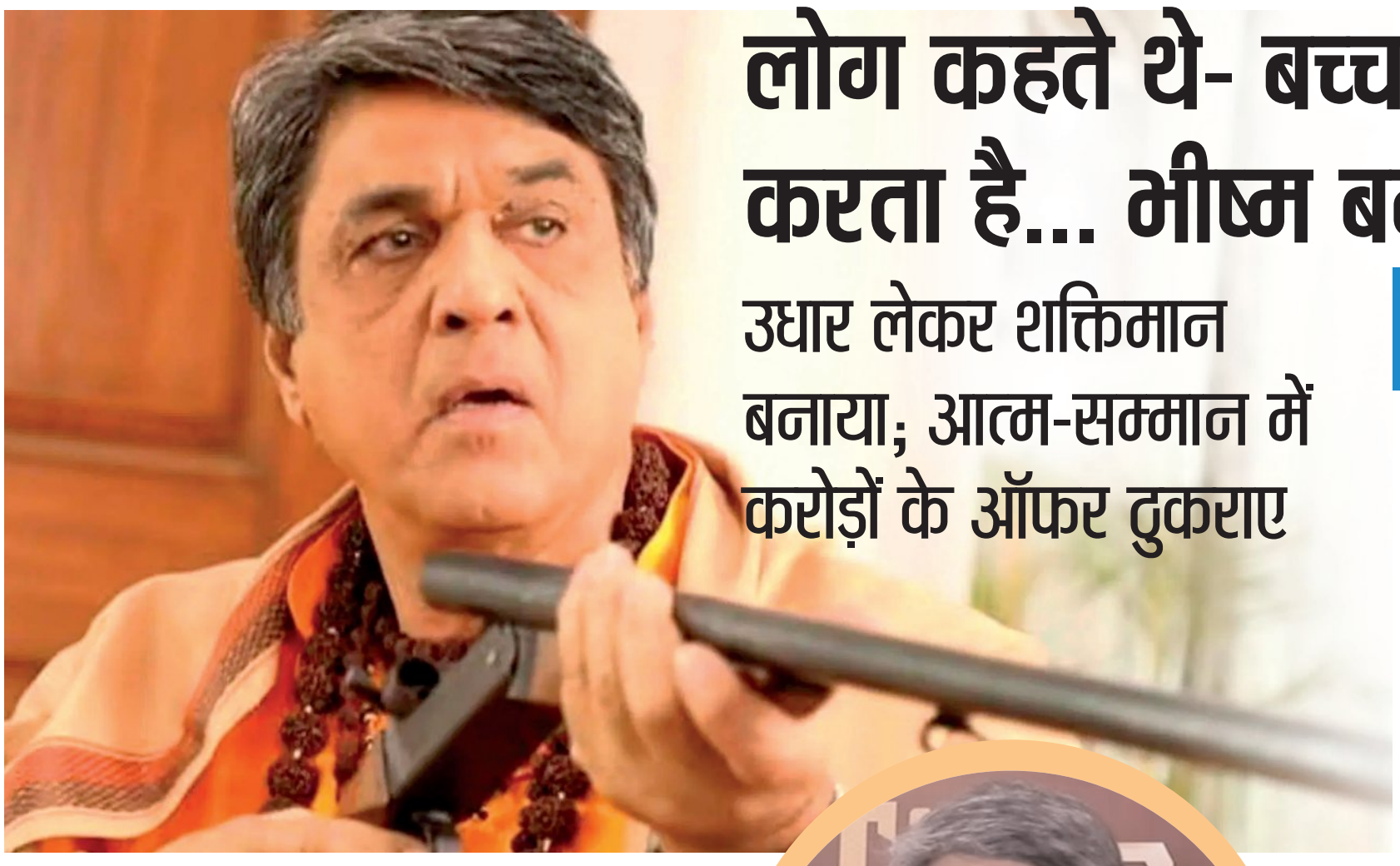

लोग कहते थे- बच्चन की नकल करता है... भीष्म बने तो इज्जत मिली

उधार लेकर शक्तिमान बनाया; आत्म-सम्मान में करोड़ों के ऑफर ठुकराए

यह बात दिग्गज एक्टर मुकेश खन्ना कहते हैं। तकरीबन 50 साल लंबे करियर में इन्होंने पैसों से ज्यादा आदर्शों और सिद्धांतों को तरजीह दी। करोड़ों रुपए के ऑफर ठुकरा दिए। काम मांगने के लिए किसी फिल्ममेकर के दरवाजे पर नहीं गए। साइड हीरो का रोल नहीं चाहते थे, इसलिए सालों तक बिना काम के घर बैठे।

फिर 1988 में बी.आर. चोपड़ा ने टीवी शो महाभारत बनाया। मुकेश खन्ना उस शो में भीष्म पितामह के रोल में दिखे। उस शो के बाद इंडस्ट्री को इनकी काबिलियत पता चली। 1997 में इन्होंने टेलीविजन पर शक्तिमान के जरिए दूसरी इनिंग शुरू की। इस शो ने उन्हें यंग जनरेशन, खास तौर पर बच्चों में काफी ज्यादा फेमस कर दिया।

प्लास्टिक इंजीनियर बनना चाहते थे, एक्टिंग का शौक नहीं था मुकेश खन्ना के पूर्वज मुल्तान (अब पाकिस्तान में) के रहने वाले थे। 1947 में बंटवारे के बाद उनका परिवार बॉम्बे (मुंबई) आ गया। 23 जून, 1958 को उनका जन्म हुआ। चार भाइयों में सबसे छोटे थे। मुंबई के मरीन ड्राइव पर घर था। जॉइंट फैमिली थी, सब साथ ही रहते थे।

मुकेश खन्ना को एक्टिंग का कोई शौक नहीं था। उन्हें प्लास्टिक इंजीनियरिंग करनी थी। मुंबई के सेंट जेवियर कॉलेज से उन्होंने क्लास किया। साथ में क्रिकेट भी खेला करते थे। बॉलिंग में इनस्विंग डालते थे। खुद की तुलना कपिल देव से करते थे।

बड़े भाई ने एक्टिंग फील्ड में उतरने की सलाह दी मुकेश खन्ना तो नहीं, लेकिन उनके बड़े भाई को एक्टिंग का शौक था। उनका नाम जग्गी खन्ना था। वे एक्टिंग करना चाहते थे, लेकिन घरवालों ने शादी करा दी। फिर उन्होंने भाई मुकेश को इस फील्ड में उतरने के लिए मोटिवेट किया।

खन्ना के एक और भाई ने उन्हें लॉ कॉलेज जॉइन करने की सलाह दी। वहां उन्होंने लॉ की पढ़ाई की। तीन साल के कोर्स के दौरान उन्होंने कॉलेज में प्ले और ड्रामा में भाग लिया। वहां मुकेश खन्ना को पहली बार लगा कि वे एक्टिंग कर सकते हैं। इसके बाद उन्होंने फिल्म इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे में दाखिल लिया।

अब मुकेश खन्ना की सफलता की कहानी उनकी जुबानी.. फिल्म इंस्टीट्यूट से पास होने के बाद मुझे 1978 में एक फिल्म 'खूनी' मिल गई, लेकिन यह कभी रिलीज नहीं हो पाई। हालांकि, इससे इंडस्ट्री के लोगों को पता चल गया कि एक लंबा-चौड़ा नया एक्टर मार्केट में आ गया है। फिर एक साथ कई फिल्में साइन कर लीं। बाद में 1981 में 'रूही' नाम की एक फिल्म से डेब्यू किया। दिलचस्प बात यह है कि रूही मेरी 15वीं साइन की हुई फिल्म थी, लेकिन सबसे पहले रिलीज हो गई।

लोगों ने कहा- अमिताभ बच्चन की नकल करता है अभी मैं इंडस्ट्री में आया ही था कि लोगों ने नकारात्मक तौर पर मेरी तुलना अमिताभ बच्चन से करनी शुरू कर दी। लोग कहने लगे कि मेरी आवाज और कदकाठी अमिताभ बच्चन की तरह है। मैं उनकी नकल करता हूं। उस वक्त उन्हें कौन समझाए कि मेरा अपना शरीर, अपनी आवाज और अपना टैलेंट है। मैं क्यों दूसरे व्यक्ति को कॉपी करूंगा।

करीबी कहते थे- बॉलीवुड पार्टीज में जाओ, वहां संपर्क बनाओ मैंने इंडस्ट्री जॉइन करते ही एक हफ्ते में 5 फिल्में साइन कर लीं। अधिकतर फिल्में फ्लॉप हो गईं। मुझे बॉलीवुड पार्टीज में जाने की नसीहत मिलने लगी।

मेरे करीबी कहते थे कि पार्टीज अटेंड करो, तभी लोगों से जान-पहचान होगी। फिर अच्छे प्रोजेक्ट्स मिलेंगे। मेरा हमेशा से यही मानना था कि काम के लिए किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना है। साइड हीरो के रोल तो मुझे आसानी से मिल जाते। हालांकि, करना नहीं था।

यश चोपड़ा की बात बुरी लग गई एक बार बड़े भाई जग्गी मेरी शो रील लेकर यश चोपड़ा को दिखाने गए थे। उस शो रील में मेरी एक्टिंग से जुड़ी क्लिप्स थीं। यश चोपड़ा को मेरा काम तो पसंद आया, लेकिन उन्होंने एक ऐसी बात कह दी, जो नहीं कहनी चाहिए थी। उन्होंने कहा कि जब हमें फॉरेन लिकर मिल रहा है, तो कंट्री लिकर क्यों लें। उनके कहने का मतलब यह था कि जब मेरे पास अमिताभ बच्चन और विनोद खन्ना जैसे स्टार हैं, तो मैं मुकेश खन्ना जैसे नए-नवेले एक्टर को अपनी फिल्म में क्यों लूं।

खैर, आज आप उसी मुकेश खन्ना का इंटरव्यू ले रहे हैं।

महाभारत मिलने से पहले 2 साल खाली बैठे थे 1978 में डेब्यू करने से लेकर 1985 तक मैंने दर्जनों फिल्मों में काम कर लिया। उसके बाद दो-तीन साल घर बैठा रहा। 1988 में मेरे पास टीवी सीरियल महाभारत का ऑफर आया। मुझे बस इस बात का दुख है कि मेरे भाई जग्गी महाभारत देख नहीं पाए। सीरियल आने से पहले ही वे दुनिया से चल बसे।

दुर्योधन का रोल मना किया, फिर भीष्म बने महाभारत के लिए मेरे पास गूफी पेंटल का बुलावा आया था। एक्टर होने के साथ-साथ वे कास्टिंग डायरेक्टर भी थे। गूफी पेंटल और शो के मेकर बी.आर. चोपड़ा चाहते थे कि मैं दुर्योधन का रोल करूं। मैंने निगेटिव किरदार करने से मना कर दिया। मैं अर्जुन या कर्ण का रोल चाहता था। हालांकि, ये दोनों रोल किसी और को दे दिए गए थे। फिर मुझे भीष्म पितामह का किरदार मिला। उसके बाद जो हुआ, इतिहास गवाह है।

स्क्रीन पर औरत बनना मंजूर नहीं

मुझे लगता है कि मैं अर्जुन का रोल और बेहतर तरीके से कर पाता, क्योंकि मैंने महाभारत पूरी पढ़ी है। मुझे हर किरदार का मर्म पता है। हालांकि, जो होता है, उसके पीछे कोई न कोई वजह होती है। अगर मैं अर्जुन का रोल करता तो एक सीक्वेंस में मुझे बृहन्नला बनना पड़ता। मुझे यह कतई मंजूर नहीं था कि मैं औरत की वेशभूषा में नजर आऊं। इसलिए जो हुआ ठीक हुआ।

मेरे पास शाहरुख-आमिर जितना पैसा नहीं, लेकिन गुडविल उनसे ज्यादा मैंने हमेशा पैसों से ज्यादा सिद्धांतों और आदर्शों को तरजीह दी है। शाहरुख खान, आमिर खान, अक्षय कुमार और अजय देवगन जैसे बड़े स्टार्स के पास करोड़ों-अरबों रुपए होंगे। शायद मेरे पास उतने पैसे नहीं होंगे, लेकिन मैंने अरबों रुपए की गुडविल कमाई है, जो उनके पास नहीं है। जब हम दुनिया छोड़ेंगे तो यही गुडविल हमारे साथ जाएगी।

काम पाने के लिए जी हुजूरी नहीं कर सकता मुझे लोग घमंडी समझते हैं। कहा जाता है कि मेरे अंदर बहुत अकड़ है। ऐसा कुछ नहीं है। मैं बस अपने आत्म-सम्मान को सर्वोपरि रखता हूं, इसलिए मेरी बातें थोड़ी बहुत खराब लग जाती हैं। मैं काम पाने के लिए किसी की जी हुजूरी नहीं कर सकता। लोग कहते हैं कि आप ऐसे सबके खिलाफ मत बोला करिए। इंडस्ट्री से बायकॉट कर दिए जाएंगे।

मैं उनसे कहता हूं कि बायकॉट उन्हें करेंगे, जिन्हें काम का लालच होगा। मुझे कोई काम दे या न दे, कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं आज भी खुद के दम पर फिल्में बनाने का माद्दा रखता हूं।

बाकी जिसका सम्मान करना है, मैं करता ही हूं। कोई कह दे कि मुकेश खन्ना ने कभी दिलीप कुमार के बारे में कुछ गलत बोला हो। मैंने उन्हें हमेशा सम्मान दिया है। वे भी मेरे काम को तवज्जो देते थे। महाभारत में मुझे भीष्म के रोल में देखकर वे काफी प्रभावित हुए थे। उन्होंने मेरी तारीफ भी की थी।

75 लाख उधार लेकर बनाया शक्तिमान, शो ने रिकॉर्ड तोड़े भीष्म पितामह के बाद मुकेश खन्ना के करियर की सबसे बड़ी हाईलाइट टीवी शो शक्तिमान रहा। शक्तिमान बनाने के पीछे भी एक दिलचस्प कहानी है।

मुकेश खन्ना ने कहा, 'मेरे पड़ोस का एक बच्चा दिन भर सुपरहीरो वाले छोटे-छोटे खिलौनों से खेलता रहता था। उन्हें नहलाता-धोता भी था। मैंने सोचा कि हमारे यहां कोई सुपरहीरो वाला कैरेक्टर क्यों नहीं है। फिर मेरे और मेरे एक दोस्त के दिमाग में शक्तिमान का कॉन्सेप्ट आया। हालांकि, इसे बनाने के लिए मेरे पास पैसे नहीं थे। सुपरहीरो वाले शो का बजट ज्यादा होता था।

फिर मुझे एक सज्जन मिले। मैंने उनसे 75 लाख उधार लिए। उन्होंने मुझसे कोई ब्याज नहीं लिया। एक-दो सालों के अंदर ही मैंने उनके पैसे चुका दिए।'

इस शो ने व्यूअरशिप के कई सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। खास तौर से बच्चों ने इसे काफी पसंद किया। इतना क्रेज हो गया था कि बच्चे शक्तिमान की तरह बनने की कोशिश करने लगे थे। इससे घटनाएं भी होने लगी थीं। बाद में मुकेश खन्ना को खुद सामने आकर समझाना पड़ा था। 1997 में हुआ टेलीकास्ट, 104 एपिसोड के बाद अचानक बंद हुआ शो शक्तिमान 27 साल पहले 1997 में टेलीकास्ट होना शुरू हुआ था। 2005 में अचानक इसे बंद कर दिया गया। शो बंद होने के पीछे मुकेश खन्ना और दूरदर्शन के बीच पैसों को लेकर उपजा विवाद था।

मुकेश खन्ना ने एक बार बताया था कि दूरदर्शन वालों ने उनसे काफी ज्यादा पैसे लेने शुरू कर दिए थे। इस वजह से उनका नुकसान होने लगा था। दरअसल, दूरदर्शन पर पहले सीरियल चलवाने के लिए प्रोड्यूसर्स को खुद पैसे देने होते थे।

दूरदर्शन तय करता था कि उसे कितने पैसे लेने हैं। 104 एपिसोड्स पूरे होने पर दूरदर्शन ने चार्जेज बढ़ाते हुए 10.8 लाख रुपए कर दिया। शुरुआत में ये अमाउंट 2.8 लाख था। खन्ना के लिए यह घाटे का सौदा साबित होने लगा, इसलिए उन्होंने शो को अचानक बंद करने का फैसला किया।

'सोचा नहीं था कमर्शियल सिनेमा का हिस्सा बनूंगा'

श्रेयस तलपडे बोले- इकबाल के बाद सुभाष घई ने कहा था, कब तक ऐसी फिल्में करते रहोगे

इंडियन सिनेमा के सबसे लोकप्रिय किरदार 'पुष्प राज' की आवाज बन चुके श्रेयस तलपदे की 'पुष्पा 2' के बाद दूसरी फिल्म 'मुफासा- द लॉयन किंग' रिलीज हो रही है। इस फिल्म में एक्टर ने टिमोन के किरदार की डबिंग की है। हाल ही में श्रेयस तलपडे ने इस फिल्म को लेकर दैनिक भास्कर से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने अपनी फिल्म 'इकबाल' को लेकर कुछ खास यादें शेयर करते हुए कहा कि इस फिल्म को करते समय कमर्शियल सिनेमा के बारे में नहीं सोचा था।

हम तो बहुत बड़े शाहरुख खान के फैन हैं

मुफासा- द लॉयन किंग' के हिंदी वर्जन में शाहरुख खान और उनके बेटों की आवाज सुनने को मिलेगी। शाहरुख खान ने इस फिल्म के मुख्य किरदार मुफासा, आर्यन खान ने सिंबा और अबराम ने छोटे मुफासा की डबिंग की है। एक तरह से देखा जाए तो यह शाहरुख खान की फैमिली फिल्म हो गई है। श्रेयस तलपडे ने इस फिल्म में टिमोन के किरदार की डबिंग की है। वह कहते हैं- हम तो बहुत बड़े शाहरुख खान के फैन हैं। इस फिल्म से जुड़कर बहुत खुशी हुई।

दूसरे किरदार की डबिंग करना आसान नहीं होता

साउथ सिनेमा के सुपरस्टार अल्लू अर्जुन की फिल्म 'पुष्पा' और मुफासा- द लॉयन किंग' की डबिंग श्रेयस तलपडे ने की है। वह कहते हैं- मैंने दो ही फिल्में डब की है, लेकिन इन दोनों फिल्मों में डबिंग का काफी अलग अनुभव रहा है। हम अपनी फिल्मों की डबिंग तो करते ही हैं। वह बहुत आसान होता है, लेकिन किसी और की डबिंग करना आसान नहीं होता है। पुष्पा की डबिंग के समय हमेशा यह ध्यान रखना पड़ता था कि शूटिंग के समय किरदार ने क्या सोचा होगा? बाकी स्क्रीन पर उनके हाव-भाव और इमोशन को समझकर डायलॉग बोलना पड़ता था।

एनिमेटेड करेक्टर की डबिंग बिल्कुल ही अलग होती है

श्रेयस तलपडे मानते है कि एनिमेटेड करेक्टर की डबिंग बिल्कुल ही अलग होती है। वह कहते हैं- ओरिजिनल करेक्टर के सुर को पकड़कर अपने अंदाज और अपनी भाषा में डबिंग करनी पड़ती है। सबको भाषा समझ में आए, इसका भी ध्यान देना पड़ता है। टिमोन को हिंदी में मयूर पुरी ने सहज भाषा में लिखा है, लेकिन उसमें अपनी तरफ से भी कुछ वाक्य ऐसे जोड़ने पड़े, जिसे हिंदी दर्शक आसानी से समझ सके। हमने ऐसी कोशिश की है कि डायलॉग असरदार तरीके से लोगों तक पहुंचे।

बेटर परफॉर्मेंस का प्रेशर हमेशा रहता है

श्रेयस तलपडे कहते हैं- 'द लॉयन किंग' में टिमोन के किरदार की डबिंग कर चुका था। किरदार के बारे में तो मुझे पता था। 2019 में यह बहुत बड़ी हिट हुई थी। ऐसे में दर्शकों की उम्मीदें थोड़ी बढ़ जाती है। हमारे सामने भी बेटर परफॉर्मेंस का प्रेशर हमेशा रहता है। इसलिए यह किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं होता है।

टिमोन की वजह से 'पुष्पा पार्ट वन' मिला था

'द लॉयन किंग' से श्रेयस तलपडे ने प्रोफेशनल तरीके से डबिंग की दुनिया में कदम रखा था। वह कहते हैं- डबिंग की दुनिया में एक कलाकार के तौर पर टिमोन की डबिंग मेरा पहला प्रयोग था। इस फिल्म के टिमोन किरदार की वजह से ही मुझे 'पुष्पा पार्ट वन' में डबिंग करने का मौका मिला था और फिर 'पुष्पा पार्ट टू' मिली थी।

डबिंग अब पैरेलल इंडस्ट्री बन गई है

क्षेत्रीय फिल्मों की वजह से अब डबिंग पैरेलल इंडस्ट्री बन गई है। श्रेयस तलपडे कहते हैं- बेसिकली डबिंग भी एक आर्ट है। इसको भी एक सम्मानित जगह मिलनी ही थी। आज क्षेत्रीय फिल्में पैन इंडिया स्तर पर रिलीज हो रही हैं। इसका फायदा डबिंग कलाकारों को मिल रहा है। डबिंग कलाकारों का सम्मान बढ़ा है और लोग उन्हें उनके नाम से जानने लगे हैं। अब यह इंडस्ट्री भी तेजी से बढ़ रही है।

इकबाल दिल के बहुत करीब है, मिस करता हूं

श्रेयस तलपडे ने लीड एक्टर के तौर पर अपने करियर की शुरुआत सुभाष घई की फिल्म 'इकबाल' से की थी। इस फिल्म को नेशनल अवॉर्ड मिला था। श्रेयस तलपडे कहते हैं- आज भी यह फिल्म मेरे दिल के बेहद करीब है। इस फिल्म को बहुत मिस करता हूं। आज भी लोग मिलते हैं और इस फिल्म के बारे में चर्चा करते हैं। जब कहते हैं कि उन्होंने यह फिल्म अपने बच्चों को दिखाई है, तो बहुत खुशी होती है।

सोचा नहीं था कमर्शियल फिल्म में मौका मिलेगा

फिल्म 'इकबाल' से जुड़ा एक किस्सा शेयर करते हुए श्रेयस ने कहा- गोवा फिल्म फेस्टिवल में 'इकबाल' दिखाई जा रही थी। तभी सुभाष घई जी का फोन आया कि संगीत सिवन एक फिल्म 'अपना सपना मनी मनी' बना रहे हैं, गोवा से आते ही उनसे मिल लेना।

सुभाष घई बोले- तो क्या उम्र भर इकबाल ही करता रहेगा

श्रेयस तलपडे को उम्मीद नहीं थी कि 'इकबाल' के तुरंत बात उन्हें कमर्शियल फिल्म में काम करने मौका मिलेगा। वह कहते हैं- 'अपना सपना मनी मनी' का नाम सुनते ही मैंने सोचा कि यह तो कमर्शियल फिल्म है। मन की बात जब सुभाष घई जी से शेयर की। वे बोले- तो क्या उम्र भर 'इकबाल' ही करता रहेगा, कमर्शियल फिल्म नहीं करेगा। मैंने कहा कि कभी सोचा नहीं था कि कमर्शियल फिल्म में काम करने का मौका मिलेगा।

'साथ निभाना साथिया' फेम देवोलीना भट्टाचार्जी बनीं मां... एक्ट्रेस ने बेबी बॉय को दिया जन्म, बोलीं- हमारा नन्हा फरिश्ता आ गया है

टीवी एक्ट्रेस देवोलीना भट्टाचार्जी मां बन गई हैं। उन्होंने 18 दिसंबर को बेबी बॉय का स्वागत किया है। इसकी जानकारी एक्ट्रेस ने खुद अपने सोशल मीडिया हैंडल के जरिए दी। इसके बाद से ही उनके दोस्त और फैंस कपल को बधाई दे रहे हैं। दरअसल, देवोलीना भट्टाचार्जी ने आज अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है। इसके कैप्शन में उन्होंने लिखा, हैलो वर्ल्ड! हमारा नन्हा फरिश्ता आ गया है।

देवोलीना के मां बनते ही सोशल मीडिया पर फैंस और स्टार्स उन्हें और उनके पति को बधाई दे रहे हैं। पारस छाबड़ा ने लिखा, 'बधाई हो।', दीपिका सिंह ने लिखा, 'बहुत-बहुत बधाई देवो।', इसके अलावा जय भानुशाली, आरती सिंह और कई अन्य स्टार्स ने भी उन्हें बधाई दी है।

साल 2022 में जिम ट्रेनर से रचाई थी शादी देवोलीना भट्टाचार्जी ने 2022 में अपने जिम ट्रेनर शहनवाज शेख से शादी की थी। उन्होंने पति शहनवाज के साथ फोटो शेयर करते हुए लिखा था,

हां अब मैं प्राउडली कह सकी हूं कि मेरी शादी हो गई है। अगर मैं चिराग लेकर भी ढूंडती तो तुझ जैसा नहीं मिलता। आप मेरे दुआओं का जवाब हैं। मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं। आप सभी को बहुत सारा प्यार। हमें अपनी दुआओं में याद रखिएगा।

मलाइका के रेस्टोरेंट में पहुंची खान फैमिली

सलीम खान स्टाफ का हाथ थामकर सीढ़ियां चढ़ते दिखे, फैंस बोले- आपको सैल्यूट है

मलाइका अरोड़ा ने हाल ही में अपने बेटे अरहान खान के साथ मिलकर एक नया रेस्टोरेंट खोला है। इस बीच उनके रेस्टोरेंट में पूरा खान परिवार पहुंचा, जिसमें एक्ट्रेस के एक्स हसबैंड अरबाज खान भी शामिल थे। लेकिन इस दौरान सबसे ज्यादा ध्यान सलीम खान और उनकी पत्नी सलमा खान पर गया, जिन्हें स्टाफ द्वारा सहारा देते हुए रेस्टोरेंट के अंदर ले जाया गया। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, और फैंस इस पर जमकर रिएक्ट कर रहे हैं।

दरअसल, वायरल वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि स्टाफ मेंबर्स सलीम खान का हाथ थामकर उन्हें लेकर जाते हुए नजर आ रहे हैं। इस दौरान उन्हें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और स्टाफ का सहारा लेकर अंदर दाखिल हुए। इस दौरान सलमा खान भी नजर आईं, जिन्हें सहारा देकर रेस्टोरेंट के अंदर ले जाया गया। वहीं, अरहान अपनी सौतेली दादी हेलेन का हाथ थामकर उन्हें रेस्टोरेंट के अंदर ले जाते हुए दिखे।

वहीं, इन वायरल वीडियोज पर फैंस भी जमकर कमेंट कर रहे हैं। एक ने लिखा, सलीम जी को सल्यूट है, जिनके लिए ये सीढ़ियां चढ़ना

कितना मुश्किल है, लेकिन फिर भी आपने हार नहीं मानी। दूसरे ने लिखा, कितनी अच्छी फैमिली है। इसके अलावा कुछ लोगों ने पूछा, परिवार की बहू कहां है?' 2017 में हुआ था मलाइका-अरबाज का तलाक मलाइका अरोड़ा ने 1998 में एक्टर अरबाज खान से शादी की थी, जिससे उन्हें एक बेटा अरहान है। शादी के 19 साल बाद कपल ने 2017 में तलाक लिया था। तलाक के बाद भी मलाइका और अरबाज अक्सर अपने बेटे के साथ स्पॉट किए जाते हैं।

दैनिक
बढ़ता राजस्थान
www.badhatarajasthan.in
RNI NO. RAJHIN/2010/35060

औकात से ज्यादा अगर बिना मेहनत के मिल जाए,
तो आँखे अंधी और आत्मा बहरी हो जाती है!
-हर्षित विजयवर्गीय, बढ़ता राजस्थान

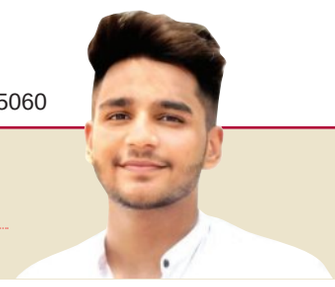

जूली बोले- पुलिस ने हम पर गंदा पानी डाला

नेता प्रतिपक्ष ने कहा- सीएम का गृह जिला क्राइम में नंबर 1; सरकार का इकबाल खत्म हुआ

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने बीजेपी सरकार के 1 साल के कामकाज पर सवाल उठाते हुए सरकार के इकबाल खत्म हो जाने की बात कही। इसके साथ ही बुधवार को कांग्रेस के प्रदर्शन के दौरान नेताओं पर वाटर कैनन से गंदा पानी डालने का आरोप भी लगाया। नेता प्रतिपक्ष ने कहा- बीजेपी ने कांग्रेस राज में कानून व्यवस्था पर नहीं सहेगा राजस्थान का नारा देकर पोस्टर लगाए थे। लेकिन, आज कानून व्यवस्था की हालत कैसी है मुख्यमंत्री के गृह जिले भरतपुर में देख लीजिए क्राइम के क्या हालात हैं। पूरे राजस्थान में मुख्यमंत्री और गृह राज्य मंत्री का जिला भरतपुर क्राइम में नंबर वन है। एससी एसटी और महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ़ गए हैं। नेता प्रतिपक्ष गुरुवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोल रहे थे।

हम पर डाला गंदा पानी-जूली ने प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा- कल कांग्रेस ने प्रदर्शन किया था। हम लोग पैदल चले ही नहीं थे उससे पहले गंदा पानी हम पर डाल दिया गया। जबकि हमने कहा था कि हम कानून का उल्लंघन नहीं करेंगे। पूरा 1 साल हो गया, सरकार ने धरना प्रदर्शन के लिए कोई स्थान तय नहीं किया। राजधानी में एनजीओ, व्यापारी सहित कई वर्ग के लोग प्रदर्शन कहां करें? प्रदर्शन के लिए लेकिन उन्होंने किसी भी जगह पर चिन्हित नहीं की।

बोले- सीएम-उपराष्ट्रपति की सुरक्षा में चूक हो रही

जूली ने कहा- मुख्यमंत्री और उपराष्ट्रपति की सुरक्षा में चूक हो रही है। खुद परिवहन मंत्री के काफिले के अंदर एक ओवरलोड ट्रक घुस आता है। मुख्यमंत्री के काफिले में वाहन घुस जाते हैं। विधानसभा अध्यक्ष के काफिले में रील बनाने वाले आ जाते हैं। सरकार का इकबाल खत्म हो गया। आप लोगों (भाजपा) ने तानाशाही की, इसलिए यह सब हो रहा है। आपका मंत्री अधिकारियों के चेंबर में जाकर बैठ जाता है। जहां अफसर को जाना चाहिए वहां मंत्री जा रहा है। आपके कैबिनेट मंत्री पर मुकदमे दर्ज हो रहे हैं। हम लोगों ने बिजली की मांग पर प्रदर्शन किया तो हम पर ही केस दर्ज कर लिया।

जयपुर में टेंट कारोबारियों-इवेंट कंपनी पर इनकम टैक्स की रेड

24 से ज्यादा ठिकानों पर छापेमारी, तीन साल का रिकॉर्ड खंगाल रही टीम

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। जयपुर शहर में गुरुवार सुबह टेंट कारोबारी और इवेंट कंपनी से जुड़े व्यापारियों के यहां इनकम टैक्स की टीमों ने छापेमारी की। टीम सुबह करीब 7:30 बजे 24 से ज्यादा ठिकानों पर एक साथ पहुंची थी। इनमें बनीपार्क, झोटवाड़ा, वीकेआई, विद्याधर नगर, मालवीय नगर, राजा पार्क, आदर्श नगर शामिल हैं। पिछले तीन साल का रिकॉर्ड आयकर अधिकारी खंगाल रहे हैं।अभी टीम व्यापारियों के घर, ऑफिसर और गोदाम में भी सर्च कर रही है। इनमें अधिकतर व्यापारी शादियों से जुड़े इवेंट करवाते हैं। छापेमारी वाली टीम में करीब 200 अधिकारी-कर्मचारी, 100 पुलिसकर्मी शामिल हैं। करीब 100 गाड़ियों से टीमें अलग-अलग ठिकानों पर पहुंची थीं।

शहर के तालुका टेंट, भावना चारण, प्रितेश शर्मा, आनंद खंडेलवाल, गुंजन सिंघल, जय ओबराय कैटर्स समेत अल्ट्रा वेडिंग इवेंट से जुड़े ठिकानों पर सर्च किया जा रहा है।

प्रारंभिक जानकारी में सामने आया कि इवेंट कंपनी और टेंट कारोबारी ग्राहकों से ऑफलाइन पैसा ले रहे थे। सर्च के दौरान कई जगह बिल बुक तक नहीं मिले हैं। कारोबारियों के ऑनलाइन रिकॉर्ड को भी खंगाला जाएगा। आयकर अधिकारियों से मिली जानकारी के अनुसार, जिन व्यापारियों के यहां रेड की गई है, वह वीवीआईपी शादी कराने और डेकोरेशन काम करने वाला ग्रुप है। यह ग्रुप कई बड़े होटलों से जुड़ा है। व्यापारियों के बारे में आयकर विभाग को तमाम अनियमितताओं की जानकारी मिली थी। तय सीमा से ज्यादा ऑफलाइन मोड में पेमेंट लेने का भी आरोप है। राजस्थान के बाहरी राज्यों और विदेश से आने वाले लोगों से संबंधित इवेंट यह ग्रुप कराता है।

8 आरपीएस बने आईपीएस, यूपीएससी की बोर्ड मीटिंग में लगी मुहर

24 सीनियर आरपीएस अधिकारियों को भेजे थे नाम; अगले सप्ताह जारी हो सकता है नोटिफिकेशन

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। राजस्थान पुलिस सेवा (आरपीएस) के 8 अधिकारियों का आईपीएस में प्रमोशन हो गया है। इन अधिकारियों के नामों पर यूपीएससी बोर्ड मीटिंग में मुहर लग गई है। संभावना है कि अगले सप्ताह तक सप्ताह केन्द्रीय गृह मंत्रालय से इसे लेकर नोटिफिकेशन भी जारी हो जाएगा। इससे पहले दिल्ली में सिलेक्शन कमेटी की मीटिंग हुई थी। इसमें केंद्रीय मंत्रालय के अधिकारियों के साथ सीएस सुधांश पंत, गृह विभाग के एसीएस आनंद कुमार और डीजीपी यूआर साहू शामिल हुए। 2023 में खाली हुए 8 पदों के लिए राज्य पुलिस सेवा से 24 सीनियर अधिकारियों के नाम भेजे गए थे। बोर्ड ने इनमें से 1997 बैच के अफसर केवलराम, लोकेश सोनवाल और गोर्धनलाल सौंकरिया, 1998 बैच के अफसर रतन सिंह, महावीर सिंह राणावत, प्यारेलाल शिवराण, सतवीर सिंह और सतनाम सिंह के नाम पर मुहर लगा दी है।

सोनवाल अंदर पीयूष दीक्षित बाहर-दरअसल, जिन 24 सीनियर आरपीएस अधिकारियों के नाम सरकार ने यूपीएससी को भेजे थे, उनमें आरपीएस पीयूष दीक्षित का नाम 8 वें नम्बर पर था। लेकिन संशोधित वरिष्ठता सूची में लोकेश सोनवाल का नाम जुड़ने से पीयूष दीक्षित 9वें नम्बर पर चले गए। इसके कारण 8 खाली पदों पर शीर्ष 8 अधिकारियों का प्रमोशन हो गया। वहीं पीयूष दीक्षित इस साल होने वाले प्रमोशन की दौड़ से बाहर हो गए।

अमित शाह के खिलाफ एनएसयूआई ने खोला मोर्चा

राजस्थान यूनिवर्सिटी में एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने किया प्रदर्शन, बोले- इस्तीफा दे गृहमंत्री

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। राजस्थान यूनिवर्सिटी में एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ गुरुवार को विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान बड़ी संख्या में पहुंचे एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने गृहमंत्री का पुतला फूंक केंद्र सरकार से उनके इस्तीफा की मांग की। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने राजस्थान यूनिवर्सिटी से बाहर निकल जवाहरलाल नेहरू मार्ग को जाम करने की कोशिश की। जिन्हें खदेड़ते हुए पुलिस ने हिरासत में ले लिया है।

राजस्थान एनएसयूआई के प्रदेश अध्यक्ष विनोद जाखड़ ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी लगातार संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का अपमान कर रही है। सदन में देश के गृहमंत्री बाबा साहब के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी करते हैं। जिससे उनकी और उनकी पार्टी की सोच का पता चलता है। ऐसे में हम मांग करते हैं कि गृहमंत्री से इस्तीफा लिया जाए इसके साथ ही वह बाबा साहब के खिलाफ की गई टिप्पणी पर सार्वजनिक माफी मांगे। अगर केंद्र सरकार द्वारा ऐसा नहीं किया गया। तो एनएसयूआई के कार्यकर्ता प्रदेशभर में गृहमंत्री अमित शाह और केंद्र सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करेंगे।

एनएसयूआई के प्रदेश प्रवक्ता अमरदीप सिंह परिहार ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा संविधान को खत्म करने के साथ ही संविधान निर्माता के खिलाफ अशोभनीय टिप्पणियां करवाई जा रही है। जिसे किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसके खिलाफ ही आज राजस्थान यूनिवर्सिटी में भी हम विरोध कर रहे थे। लेकिन एनएसयूआई कार्यकर्ताओं को बेवजह हिरासत में लिया है। हम डरने वाले नहीं है, हम अपनी आखिरी सांस तक केंद्र की तानाशाह सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करते रहेंगे। चाहे इसके लिए हमें अपनी जान ही क्यों ना देनी पड़े। बता दें कि गृहमंत्री अमित शाह संसद में अपने भाषण के दौरान डॉ बीआर अंबेडकर की विरासत पर बोल रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि आजकल आंबेडकर का नाम लेना एक फ़ैशन बन गया है। उन्होंने कहा कि आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकरज इतना नाम अगर भगवान का लेते। तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता।

मल्लिका और पूजा बनर्जी से ईडी ने पूछताछ की

मैजिक विन गैम्बलिंग एप का प्रमोशन किया था, इसका मालिक पाकिस्तानी

बढ़ता राजस्थान

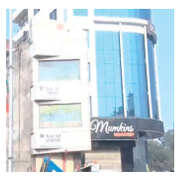

नई दिल्ली। मैजिक विन गैम्बलिंग एप से जुड़े मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने फिल्म एक्ट्रेस मल्लिका शेरावत और टीवी एक्ट्रेस पूजा बनर्जी से पूछताछ की है। पूछताछ कब हुई, इसका पता नहीं चला है, लेकिन गुरुवार को इसकी जानकारी सामने आई। दोनों एक्ट्रेस मैजिक विन गैम्बलिंग एप के प्रमोशन से जुड़ी थीं। जानकारी के मुताबिक जांच में दोनों एक्ट्रेसेस दोषी नहीं पाई गई हैं। यह भी जानकारी सामने आई है कि इस एप का मालिक पाकिस्तानी नागरिक है, जबकि दुबई से कुछ भारतीय नागरिक इसका ऑपरेशन कर रहे थे। ईडी की जांच में सामने आया है कि मैजिक विन एप ने गैरकानूनी तरीके से मेंस टी20 वर्ल्ड कप का ब्रॉडकास्ट किया गया था। साथ ही ऑनलाइन बेटिंग लगाई गई थी।

जानकारी के मुताबिक मल्लिका शेरावत ने ईमेल के जरिए ईडी को अपना जवाब भेजा था, जबकि पूजा बनर्जी ईडी के अहमदाबाद कार्यालय में पूछताछ के लिए पहुंची थीं। सूत्रों के अनुसार, ईडी ने दो बड़े सेलिब्रिटीज को भी समन भेजे हैं। इसके अलावा, अगले हफ्ते 7 बड़े सेलिब्रिटी, टीवी कलाकार और कॉमेडियन को भी समन भेज सकती है। इस केस में पिछले 6 महीनों में ईडी ने देशभर में लगभग 67 जगह छापेमारी की है।

प्रदेश में शीतलहर का कहर जारी

जयपुर में छा सकते है बादल, शेखावाटी में बढ़ेगा कोहरा; सिरोही सबसे ज्यादा सर्द

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। राजस्थान में लोगों को कड़ाके की सर्दी से फिलहाल 22 दिसंबर तक राहत मिलने की कोई उम्मीद नहीं है। मौसम विभाग ने अगले तीन 10 से ज्यादा जिलों में कोहरे और कोल्ड-वेव (शीतलहर) का येलो और ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

मौसम विज्ञान केंद्र के एक्सपर्ट के अनुसार जयपुर में बादल छा सकते हैं। इसके साथ ही शेखावाटी के एरिया में कई जगह पाला पड़ने की भी चेतावनी है। सीकर के फतेहपुर में गुरुवार को न्यूनतम तापमान एक डिग्री से अधिक रहा। वहीं, जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, गंगानगर, बीकानेर, फलोदी, चूरू समेत कई जिलों में दिन में भी तेज सर्दी का महसूस हुई।

प्रदेश में सबसे ठंडा रहा सिरोही

बीकानेर में अधिकतम तापमान 21.2 डिग्री सेल्सियस, चूरू में 21.5, जैसलमेर में 21.7, गंगानगर में 22.2, बाड़मेर में 25.7, भीलवाड़ा में 23.4, सीकर में 22.5 और उदयपुर में 24.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। बुधवार को सबसे ठंडा दिन सिरोही में रहा, जहां दिन का अधिकतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ।

जयपुर में छा सकते हैं बादल

मौसम विभाग ने जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, अलवर, चूरू समेत कई जिलों में 20 दिसंबर से 22 दिसंबर के बीच दिन में हल्के बादल या धुंध छाने का अनुमान जताया है। इस कारण इन शहरों में दिन के तापमान और थोड़ी और गिरावट होने और कोल्ड-डे जैसी स्थिति बन सकती है।

बीजेपी विधायकों की अवैध खानों के लिए सड़कें मंजूर कीं

डोटासरा बोले- सीएम सरकार के एक साल पर हमसे अल्बर्ट हॉल पर खुली बहस करें

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने बीजेपी सरकार के एक साल के कार्यकाल को विफल बताया। उन्होंने सरकार में माफिया राज हावी होने सहित कई गंभीर आरोप लगाए हैं। डोटासरा ने सीएम को एक साल के कामकाज पर जयपुर के अल्बर्ट हॉल पर खुली बहस का चैलेंज दिया है। डोटासरा ने कहा- भाजपा विधायकों के अवैध खनन को फायदा पहुंचाने के लिए सड़कें मंजूर करवाई। हद तो तब हो गई, जब बीजेपी के चुने हुए जनप्रतिनिधि माफिया के साथ मिल गए। विधानसभा जब शुरू होगी तो हम सबूतों के साथ बताएंगे कि बीजेपी नेताओं के अवैध बजरी खनन के लिए सड़कें स्वीकृत की गईं। यह इसलिए किया ताकि भाजपा विधायकों की मिलीभगत से अवैध बजरी खनन कर सकें। अवैध तरीके से पैसा कमा सकें। डोटासरा प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में मीडिया से बातचीत कर रहे थे। वे बोले- सरकार ने एक साल में जनता के लिए कुछ किया नहीं है। मुख्यमंत्री को एक प्रस्ताव देता हूं, सीएम सरकार के एक साल के कामकाज पर नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली या मेरे साथ अल्बर्ट हॉल पर मीडिया के सामने खुली बहस करें।

बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस
दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक समाचार पत्र
मुद्रण के लिए संपर्क करें।

उच्च क्वालिटी का कागज एवं स्याही
कलर एवं ब्लैक मुद्रण
किफायती मुद्रण लागत
Printing Press
• Hameedpura Road Khandwa, Newai, Tonk, Rajasthan - 304021
Office
• Badhata Rajasthan, Near Rajkiya Mahavidhyalaya, NH-12, Bypass Newai, Tonk, Rajasthan - 304021
(M) +91-9214048888, Phone No. - 01438-223201, 02, 03
• 185/116, "Pratiksha", Sector-18, Pratap Nagar, Sanganer, Jaipur - 302033
(M) +91-9414242258, Phone No. - 0141-2796795
Email: badhatarajasthanprintingpress@gmail.com

राजस्थान के स्कूलों में स्थानीय भाषा में होगी पढ़ाई

डूंगरपुर और सिरोही के बाद जयपुर, उदयपुर समेत प्रदेश के 7 और जिलों में होगी शुरुआत

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। जयपुर, उदयपुर समेत प्रदेश के 7 और जिलों के सरकारी स्कूलों में स्थानीय भाषा में पढ़ाई शुरू होगी। इसमें जयपुर, उदयपुर, पाली, राजसमंद, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ शामिल हैं। इससे पहले पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शिक्षा विभाग सिरोही और डूंगरपुर के कुछ स्कूलों में इसकी शुरुआत वर्ष 2023-24 में हो चुकी है। इन जिलों के शेष स्कूलों में भी नए सत्र से स्थानीय भाषा में पढ़ाई शुरू होगी। राजस्थान के सरकारी स्कूलों में अब ढूंढाड़ी, मेवाड़ी समेत स्थानीय भाषाओं में पढ़ाई की सुविधा होगी। अगले शैक्षणिक सत्र से प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1 से कक्षा 5 तक) के स्टूडेंट्स अब स्थानीय भाषाओं में शिक्षा हासिल कर सकेंगे।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा- स्थानीय भाषा के उपयोग और उसके माध्यम से बच्चों को शिक्षित करना आवश्यक है। बच्चे जब अपने परिवेश में कोई भाषा सीखते हैं, तो उनकी समझ जल्दी विकसित होती है।

बच्चों की सहूलियत का रखा जाएगा ध्यान

राजस्थान में कई तरह की बोलियां बोली जाती हैं। शिक्षक और बच्चों की भाषा अलग-अलग होने के कारण बच्चों को स्कूल की भाषा सीखने में थोड़ी परेशानी होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम और शुरुआती साल में शिक्षण कार्य स्थानीय भाषा में ही होना चाहिए। ताकि बच्चे आसानी से स्कूल की भाषा को सीख पाएं।

2 जिलों में चल रहा पायलट प्रोजेक्ट

शिक्षा मंत्री ने बताया कि वर्तमान में 2 जिलों (सिरोही और डूंगरपुर) के कुछ स्कूलों में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में बहुभाषी शिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसे अगले सत्र से प्रदेश के सिरोही-डूंगरपुर सहित 9 जिलों में लागू किया जाएगा। इसके साथ ही सत्र 2026 से ये कार्यक्रम प्रदेश के 25 जिलों में संचालित किया जाना प्रस्तावित है।

फिलहाल जयपुर में ढूंढाड़ी, उदयपुर, चित्तौड़गढ़-प्रतापगढ़ में मेवाड़ी, डूंगरपुर-बांसवाड़ा में वागड़ी, राजसमंद में मेवाड़ी, बागड़ी, सिरोही में मारवाड़ी, पाली में राजस्थानी गोडवाड़ी भाषा बोली जाती है। शिक्षा विभाग इन्हीं स्थानीय भाषाओं में स्टूडेंट्स को पढ़ाने की तैयारी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में है प्रावधान-शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने स्कूल में स्थानीय भाषा में पढ़ाने को लेकर कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लागू की है, इसमें यह सब प्रावधान है। प्रारंभिक शिक्षा के बारे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह है कि स्थानीय भाषा, जिसे लोकल भाषा भी कह सकते हैं और मातृभाषा भी, उसमे ही पढ़ाया जाए। दिलावर ने अजमेर में सर्किट हाउस में गुरुवार को यह बात कही। इस दौरान दिलावर ने बताया कि- जब बच्चा स्कूल में जाना शुरू करता है तो उसे अलग वातावरण मिलता है, अगर वहां बच्चे को स्थानीय भाषा में पढ़ाया जाएगा।